

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका

अंक 24, जुलाई 2010 सँ सितंबर 2010

✪ **पृष्ठपोषक** ✪
हरिगोविंद झा
रामाधार लाल
नवलकांत झा

✪ प्रबंध संपादक ✪
प्रेमकांत चौधरी

✪ संपादक ✪
दिनकर कुमार

✪ सलाहकार ✪
शरदिंदु चौधरी, लक्ष्मण झा 'सागर'
गजेन्द्र ठाकुर

✪ संपादन सहयोग ✪
अरुण कुमार झा (लाचित नगर)
ललित कुमार झा

विज्ञापन व्यवस्थापक : **जगनिवास झा**
चन्द्रमोहन झा

प्रचार प्रसार व्यवस्था : **अरुण कुमार झा** (बामुनी मैदान)

प्रकाशक : **विनय कुमार झा**
मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी

मुद्रक : **अनुराग आफसेट**
उलुबाड़ी, गुवाहाटी (असम) मो.:98649-13382

: संपादकीय एवं पत्राचारक पता :
प्रेमकांत चौधरी
फ्लैट नं. 2 सी, ब्लॉक-बी, पुन्य इंक्लेभ,
आरजी बरुवा रोड, (सिन्हा लाज के पीछे)
गणेशगुड़ी, गुवाहाटी-781006
मो. : 094353-42658, 90850-42658, 92070-32321

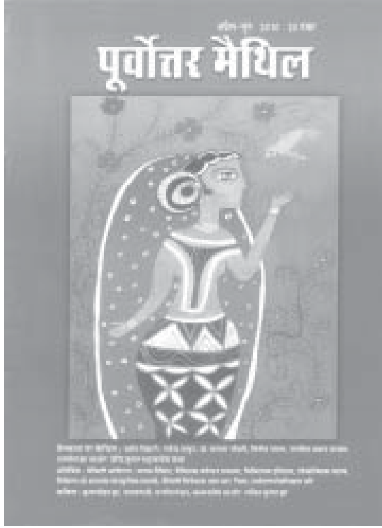
संपादक मंडल द्वारा अवैतनिक सेवा

website : www.purvottarmaithil.com
E-mail : purvottarmaithil@gmail.com
msssghy2000@gmail.com

आवरण : तारानन्द वियोगी

एहि अंक मे

चिट्ठी - पतरी		2
संपादकीय		3
प्रतिबिंब		
मैथिल महिलाक बदलैत भूमिका	पंचानन मिश्र	5
मिथिला राज्य अभियान कियैक?	डॉ कमल कान्त झा	9
मिथिलांचलक दुर्दशा	हेरम्ब नाथ ठाकुर	12
नेपालमे मैथिली साहित्य	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	14
महिलाक अतीत, आइ आ काल्हि	सुशीला झा	23
मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि	सुरेन्द्र राउत	25
मैथिलीक प्राचीनतम ग्रंथ 'वर्ण रत्नाकर'	डा. नारायण झा	29
मधुश्रावणी : मिथिलाक पारंपरिक हनिमून	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	31
मिथिलासँ पलायन	गजेन्द्र ठाकुर	35
परिक्रमा		
मैथिल प्रतिभा		36
सगर राति दीप जरय		37
स्मृति शेष		37
अनसोहांत		
लोकतंत्रक चारिम खूट्टा-घूस-भ्रष्टाचार आ घोटाला	प्रेमकान्त चौधरी	38
कविता		
राधा तोहर बेचि रहलि छथि देह	राजकमल चौधरी	40
फेकनी	वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'	40
माय हमर गंगा!	लक्ष्मण झा सागर	41
पाठ	मन्त्रेश्वर झा	42
बभनगमाबाली भौजीक जीवनक महत्वपूर्ण घटना सभक एकटा संक्षिप्त विवरणिका	कृष्णमोहन झा	43
अहि कात सं जीवन	मनोज कुमार झा	44
एकटा दिनचर्या	अरुणाभ सौरभ	44
एकटा प्रेम-पत्रक मादे कविता	अरुणाभ सौरभ	45
माँ चालीसा के किछु पद्यांश	ललित कुमार झा	45
कथा		
प्रतिवादक स्वर	डॉ. शेफालिका वर्मा	46
अप्पन राज्य	कामिनी कामायनी	50
नाटक		
कल्याणी	जगदीश प्रसाद मंडल	55
नेना भुटका		
बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल	प्रीति ठाकुर	५९
उपयोगी सूचना		
संघ लोकसेवा आयोगक मैथिलीक पाठ्यक्रम		६०
मिथिलाक्षर		६२
सौन्दर्य विन्यास		६३
पावनि - तिहार		६३



अकथनीय आ विकराल अछि मिथिलाक समस्या



पूर्वोत्तर मैथिल पढ़लहुँ। रचना समायोजन नीक लागल। गेट अप- मेक अप अपूर्व।

मिथिलामे अनेक तरहक समस्या छैक। सभ समस्या विकराल आ अकथनीय तँ हमर अनुरोध जे प्रत्येक अंकमे एकटा समस्याकेँ उठाओल जाय आ एहन रचनासँ बचल जाय जे 'गागरमे सागर'क नामपर खानापुरी करय।

हमरा सभक दायित्व अछि मैथिलीक प्रति मैथिलकेँ आकृष्ट करब तँ एहन रचना आबय जे मनकेँ छुबय। संगहि संग मैथिली लोक अपनायब सेहो अभिष्ठ होयबाक चाही। एहि लेल संपादन द्वारा एकरुपता राखब सेहो आवश्यक। कृपया अन्यथा नहि ली तँ एहिपर ध्यान देल जाय।

टाइप साइज किछु बढ़ाओल जाय।

वर्तनीपर सेहो ध्यान देल जाय। पूरा पत्र एक रूपमे रहय। कार्य कठिन छैक मुदा अहाँ अनुभवी ओ कर्मठ छी, मैथिलीकेँ एकरा नव दिशा दऽ सकैत छिऐक।

आशा अछि अगिला अंक आर परिष्कृत रुपमे सोझां आओत।

- शरदिन्दु चौधरी
पटना

पहिल बेर पत्रिका कीनैके मोन भेल



प्रेम कथा पर केंद्रित 'पूर्वोत्तर मैथिल' के अंक दरभंगा स्टेशन पर देखलौंह। देखैत देरी पत्रिका कीनैके मोन भेल। पत्रिकाक नव संपादक के दृष्टि सं अभिभूत भेलौंह। हम गर्व सं कहि सकैत छी जे आब 'पूर्वोत्तर मैथिल' पत्रिकाक गिनती देशक श्रेष्ठ मैथिली पत्रिकाक पंक्ति में होयत। एतेक दिन कोनो आकर्षण, परिकल्पना आ दृष्टि नहिं बुझाइत छल। एहि बेर जेना पत्रिकाक पुनर्जन्म भेल। सभटा रचना पढ़ि गेलौंह। एक सं बढ़िक एक अपूर्व रचनाक समावेश अछि। गजेन्द्र ठाकुरक लेख 'मैथिलक वर्तमान समस्या' खूब नीक लागल। हमरा विश्वास अछि जं एहि तरहक अंक निकलैत रहत त प्रत्येक मैथिल एहि पत्रिका के पढ़ैक लेल विवश भ जायत। अगिला अंकक प्रतीक्षा रहत।

- मनीष कुमार झा
दरभंगा

मैथिल समाज के बाट देखबैबला प्रयास



'पूर्वोत्तर मैथिल' के अप्रैल-जून 2010 अंक पठनीय आ संग्रहणीय अछि। ई अंक मैथिल समाज के बाट देखबैबला प्रयास अछि। एहि में मिथिलाक गौरवशाली इतिहासक वर्णन अछि, जाहि सं गर्वक बोध होति अछि। मिथिलाक वर्तमान समस्याक वर्णन अछि। कथा आ कविता सभ खूब नीक अछि। संपादकीय में गागर में सागर भरबाक प्रयास कयल गेल अछि। आई मैथिल जाति के एहने पत्रिकाक आवश्यकता अछि।

- जीवछ पासवान
गुवाहाटी

दिमागो वास्ते खोराक चाही



मिथिलांचल सँ दूर पूर्वोत्तर मे मै मैथिली पत्रिका पबैत अपार हर्ष होति अछि। पत्रिका देखैत एना लगैछ जेना गाम सं किओ ऐलाह जे अपना घरक हाल खबरि सुनारहल छथि। विषय वस्तु बहुत गंभीर नहियो रहैत, अपन तऽ अपने होति छैक, सैह भावना सऽ पूरा पत्रिका पढ़ि जाति छी। मोन गद-गद भऽ जाति अछि। उमेद रखैत छी, जे आगां मोनेटा गद-गद नहि कै दिमागो वास्ते किछु खोराक भेटत ।

- ललन पंडित
गुवाहाटी

'पूर्वोत्तर मैथिल'क ई अंक अहांके केहन लागल, अपन विचार, सुझाव लिखिकए पठाऊ। पता अछि :

संपादक, पूर्वोत्तर मैथिल
फ्लैट नं. 2 सी, ब्लॉक-बी, पुन्य इंक्लेभ, आरजी बरुवा रोड, (सिन्हा लाज के पीछे) गणेशगुड़ी, गुवाहाटी-781006

निवेदन

- ☞ जनगणना मे सभ मैथिलजन अपन मातृभाषा मैथिली लिखाबी।
- ☞ गैर-मैथिल मित्र सभ के उपहार मे मधुबनी पेंटिंग देबाक अभ्यास करी।
- ☞ अपन गाम मे कोनो रचनात्मक कार्य सं जुड़ल रही।
- ☞ वर्ष मे एक बेर अपन गाम अवश्य आबी।

पूर्वोत्तर मैथिलक अगिला अंक
युवा रचनाकार पर केन्द्रित अछि, जाहि के लेल रचना आमंत्रित अछि।

अन्हार सं निकलैके समय आबि गेल



एहि बेर जून में गाम गेल छलौंह। बहुत तरहक लोक सभ सं संवाद भेल। मैथिल जाति अखनहुं अन्हार में जीबि रहल अछि। क्रियाकांड आ अनुष्ठानक प्रकोप ओहिना अछि। गाम-गाम में माइक बजाकए कीर्तन-अष्टयामक आयोजन निरंतर भऽ रहल अछि। जखन गाम-गाम सं सबटा युवा शहर दिल पलायन केने अछि तखन गाम में वृद्ध, स्त्री आ बच्चा सभक आबादी बचल अछि। एहन स्थिति के स्वाभाविक नहिं कहल जा सकैत अछि। कोनो समाजक विकास एहन स्थिति में नहिं भऽ सकैत अछि। वर्तमान समय में मिथिलाक सबसं पैघ संकट पलायन छी। जीविकाक लेल लोक सभके पलायन करैके लेल विवश होबय पड़ैत छैक। जीविकाक कोनो साधन उपलब्ध नहिं अछि आ शासन व्यवस्था तेहन कोनो साधन उपलब्ध करवाक लेल चिंतित नहिं बुझाइत अछि। जाहि पंचायती व्यवस्थाक ढोल पीटल जाइत अछि ओकर विसंगति सं साक्षात्कार ठाम-ठाम पर भेल। हमर गामक भूमिहीन कृषि मजदूर रामशरण चौपाल कहलक जे निर्धन आ भूमिहीन रहितो ओकर नाम एपीएल (निर्धन रेखा सं ऊपर) सूची में दर्ज कएल गेल अछि। गामक जतेक धनीक लोक सभ छथि सभक नाम बीपीएल (निर्धन रेखा सं नीचा) सूची में दर्ज अछि। रामशरण चौपाल हमरा कहलक जे अहां त लिखा-पढ़ी करैत छी, कनी मुखिया सं हमर फरियाद कहबै। जे मुखिया छथि से पहिले कंपाउंडर के काज करैत छलाह। हुनकर एकसूत्री कार्यक्रम छियैन्ह सबटा विकास मदक धन के केना लूटल जायत। गाम-गाम में हुनकर दलाल सब सक्रिय छैन्ह। इंदिरा आवास सं लऽ कऽ विधवा पेंशन तक सब योजनाक लाभ तखनहिं भेटत जखन रिश्वत देबै। ई त भेल विकासक हाल। दोसर बात जे बेशी महत्व रखैत अछि-मैथिल समाजक ताना-बाना टूटि रहल अछि। विवाह संबंध के लेल मैथिल सब छिछिया रहल छथि। ककरो सं ककरो संपर्क नहिं रहि गेल अछि। परंपरा अप्पन जगह अछि। मुदा परंपराक निर्वाह करैके साधन सब छूटल जा रहल अछि। एहन समय में आवश्यक अछि परिवर्तन के किछु ठोस उपाय करी। जं मैथिल जाति के जीवित रहैके अछि, मैथिली भाषा आ संस्कृति के सुरक्षा करैके अछि, तं अन्हार सं इजोत में आबए पड़त। जतेक कुसंस्कार सब अछि ओकरा छोड़ऽ पड़त। विज्ञान सम्मत दृष्टिभंगी से आगू बढ़ैके समय आबि गेल अछि। जन्म सं लऽ कऽ मृत्यु तक कतेक निरर्थक कर्मकांड सब प्रचलित अछि। भोजक नामपर लोक अपन खेत बेचि दैत अछि, कर्ज में डूबि जाइत अछि। भोजक ई परिपाटी सामंतवादी युगक अवशेष छी। आवश्यकता अछि जे एकरा प्रतीकधर्मी बनाबी आ भोजक नाम पर सर्वस्व नष्ट करै के मानसिकताक त्याग करी। शिक्षाक संपर्क में एलाके बादो मैथिल दूल्हा मंडीक बरद जेंका बिका रहल अछि। जौतुक प्रथा पर रोक लगाबी। कन्याके जौतुक बुझी। आई-काल्हि कन्या सेहो पढ़ैत-लिखैत अछि, योग्य बनैत अछि। जाति-प्रथा पर रोक लगाबी। सामंतवादी शोषण के जतेक लक्षण सभ समाज में देखाइत अछि, ओहि सभ सं मुक्त भेलाक बाद मिथिला में नवप्रभात संभव होयत।

> Á¢×ñçÜÜÁæçÌ ·¤ôÁèçßÌ ÚUãñU·¤ô¥çÀU, ×ñçÜè Öæáæ¥æâ¢S·¤ëçÌ ·¤ô âéÚUÿææ ·¤ÚUñU·¤ô¥çÀU, Ì¢¥‹ãæÚUâ¢§ÁôÌ×ð´ ¥æÕ° ÂǸUÌÐ ÁÌð·¤ ·é¤â¢S·¤æÚU âÕ ¥çÀU¥ô·¤ÚUæ ÀUôǸU ÂǸUÌÐ

– **दिनकर कुमार,** मो. 9435103755

पूर्वोत्तर मैथिल अपनेक नगर मे उपलब्ध अछि :-

असम : ● **गुवाहाटी :** अरुण कुमार झा, बामुनीमैदान, मो. : 94351-01766, कमलकांत झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 9864176437, रविकुमार झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 986417५६२८२ दिलीप कुमार झा, बेलतला, फोन : 94350-13450, श्री तिलकेश्वर झा तरूण नगर, फो. : 9954586540, संतोष कुमार झा फैन्सी बाजार, फो. : 98641-26176, विंदेश्वर मिश्र मालिगाँव पांडू फो. : 98542-87692 ● **जोरहाट:** स्कंद कुमार मिश्र, राजमैदान रोड, न्यू कॉलोनि, जोरहाट, फो. : 94357-023453, **खरुपेटिया :** पवन कुमार झा, फो.: 9435088346, श्री सतीशचन्द्र झा, डिस्ट्रीक्ट कौंसिल कालोनी, पो.-डिफू, कार्बीआंग्लांग, असम-782420, फो. :9435366033, ● **बिहार : पटना**-श्री शरदिन्दू चौधरी, संपादक, समय साल, 2ए-39 इन्दपुरी, पटना -24, फो. : 09334102305, राजेश कुमार झा, मिथिला कालोनी, नशरीगंज, पो. बाटागंज, पटना-18, **मुजफ्फरपुर-** श्री विष्णुकान्त झा, 9470834202, श्री अजीत कुमार झा, फो.: 09472834926, ● **मधुबनी :** श्री गया प्रसाद सिंह, फोन : 9431287158, भोगेन्द्र मिश्र, चित्रगुप्त नगर समिप नीलम सीनेमा, फो. : 09431654303. ● **दरभंगा**-अग्रवाल न्यूज एजेंसी, स्टेशन रोड, आकांक्षा न्यूज एजेन्सी, मो. : 09031416196, श्री मणिकांत झा फो. : 9431451489, पंकज, मो.: 9507429158 ● **जयनगर**-डॉ. कमलाकान्त झा, शहीद चौक, मो. 09934914944 ● **सहरसा**-विनय कुमार चौधरी, कृष्ण कुटिर, पंचमढ़ी, फो. : 228190, डा.एल.एन. झा, फो. : 9431440145 , ● **कटिहार**-ललन झा, रीडर्स कार्नर, होटल राजस्थान, फो. : 09437206661, श्री नारायण झा, कटिहार - 9431260030 **बेगूसराय :** प्रदीप बिहारी 'मैथिल पुत्र' 09431211543. ● **भागलपुर-** डॉ. प्रेमशंकर सिंह, ऋचायन, राधारानी सिन्हा रोड, फो. : 2422666, ● **समस्तीपुर :** डा. नरेश कुमार विकल, फो.: 094302-44114, ● **मोतीहारी :** सुशील कुमार सुमन, मो.-09431022737, ● **सुपौल :** उमेश मंडल, तुलसी भवन, निर्मली, फो. : 9931654742 **दलसिंहसराय** श्री गौरीनाथ प्रदीप विहारी भास्कर, फो. : 06243215228, डॉ.सत्यनारायण महतो, फो. : 9934258434, श्री गोपाल झा, किशनगंज - 9431885999

● **झारखंड :** डॉ. धनाकर ठाकुर, ई.-35, श्यामली, राँची-2, मो. : 9470193694, **बोकारो :** श्री अमीरी नाथ झा अमर, फो. : 249994, **जमशेदपुर**-डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी, फो. : 09334066298, डॉ. अशोक अविचल, फो. : 9006056324

● **प.बंगाल :** राजकुमार गिरी-रतनदीप अपार्टमेंट, ए-5, ब्लाक-बी, 17, बीटी रोड, कोलकाता-56, 9432303617, अशोक झा, 243, रविन्द्र शरणी, कोलकता-75, लक्ष्मण झा सागर, 3बी, तिस्ता अपार्टमेंट 94 एवेन्यु साउथ, संतोषपुर, कोलकता-7, फो. : 3334909576

● **छत्तीसगढ़ : रायपुर,** श्री सुरेन्द्रनाथ पाठक, मनीश कुमार झा 0771-4050907

● **दिल्ली :** श्री गजेन्द्र ठाकुर पौकेट-सी सेक्टर-ए, बसंतकूंज, न्यू दिल्ली-70, सुबोध कुमार झा, अखील भारतीय परिवार कल्याण परिषद डी-2 हुकुम चंद मार्केट महावीर इंक्लेभ पालम न्यू दिल्ली, फो. : 09941-1382078, श्री रंजीत कुमार झा, फो. : 09871-212341 , श्री कृपानन्द झा, फो. : 9868551104

● **हरियाणा :** श्री जे.एन. मंडल, हाऊस नं. 3074ए, सेक्टर-3, हाऊसिंगबोर्ड कालोनी, फरीदाबाद-121004 फो. : 09312399739, श्री भीमसिंह मैथिल, फरीदाबाद 9050479190,

● **राजस्थान :** जयपुर - श्री नन्दन मोहन, फो. : 9660013301, श्री अशोक ठाकुर, जेडीए, जयपुर, मो. : 9414076234

● **महाराष्ट्र:**डा. रमा झा, बी.-601, सिल्वर टावर, ठाकुर कालोनी, कांदीवली, मुंबई-400101।
श्री अर्जुन मंडल, पुणे - 9423527219

● **आन्ध्रप्रदेश :** श्री दयानाथ झा, हैदराबाद - 9949157553, श्री ज्योति प्रकाश लाल, हैदराबाद - 9885909451

● **गोवा :**श्री उमेश कुमार कर्ण, फो. : 9423835001

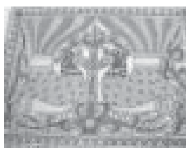
● **नेपाल :** श्री रामरिझन यादव विराटनगर फो. : 00977 - 9852830679, डॉ. रामावतार यादव , काठमाण्डू 01. 4421844 021.523191



वर्तमानक प्रश्न

मैथिल महिलाक बदलैत भूमिका

पंचानन मिश्र



मिथलांचल में 'स्वीट रिब्ल्यूशन' अभ्यन्तर मे प्रवाहमान भऽ गेल अछि। सभ क्षेत्र मे परिवर्तन भऽ रहल अछि। विशेषत: आर्थिक सुधारक उच्च आकांक्षा घरे-घर जन्म लऽ लेलक अछि। एहि आकांक्षा कैं उत्पन्न करबा मे विश्व आ राष्ट्रीय परिदृश्य बड़ सकारात्मक भूमिका निमाहि रहल अछि। आ, मैथिल महिला तँ लगैछ परिवर्तनक सशक्त वाहक बनबा लेल उताहुल बैसलि होथि। शिक्षा, सरकारी आ गैर-सरकारी नोकरी एवं निजी व्यवसाय हिनका लोकनिक पारिवारिक जीवन मे अभिन्नता आ अन्योन्याश्रिता पओने जा रहल अछि। अतिशिक्षित आ नगरीय परिवेशक स्त्रिगण मे ई लौल सामान्य घटना भऽ सकैछ मुदा जाहि परिणाम मे गाम-घरक स्त्रिगण मे, एतय धरि जे असाक्षरहुँ मे अपन आर्थिक स्थिति सुधारकबाक तीव्र ओ पिजाओल आकांक्षा आबि गेल अछि से आश्चर्यजनक रहितहूँ सुखद अछि। तकर परिणाम अछि जे अधिकांश जिला मे स्वयं सहायता समूह (एस.एच. ओ.) क माध्यम सँ समुन्नत आर्थिक संरचना बनि रहल अछि आ जँ एहिना सफलीभूत होइत रहल तँ एक समानान्तर आर्थिक व्यवस्थाक सृजन कैं क्यो

रोकि नहि पाओत। एकर अतिरिक्त महिला सहकारी समिति सेहो सहकारी क्षेत्र मे सार्थक योगदान देब आरम्भ कयलक अछि। ई समिति जे काल्हि धरि दूध वितरण धरि सीमित छल आइ माछ, जलकर प्रबन्धन क्षेत्र मे प्रवेश कऽ रहल अछि। एतबे नहि, सड़क, भवन, नहर वृक्षारोपण आदि रचनात्मक क्षेत्र मे ई लोकनि जबरदस्त हस्तक्षेप लेल प्रयासरत छथि। सरकारक समाज सुधार कार्यक्रम जेना साक्षरता, अन्धविश्वास निराकरण, वृद्ध सहाय्य कार्यक्रम, एड्स, रेड लाइट एरियाक पुनर्वास आदि परियोजनाक संचालनक सोलहन्नी दावा ई लोकनि करय लगलीह अछि। मिथिलांचल मे स्त्रिगणक जे साक्षर-दर वर्त्तमान अछि ताहि मे असाक्षर आ नाम मात्रक साक्षरक प्रतिशत सर्वाधिक अछि। आइ यैह बहुसंख्यक स्त्रिगण आर्थिक परिवर्त्तनक सभ सँ पैघ स्रोत बनबाक संभावना भऽ गेलीह अछि। एहि आलेख मे किछुये व्यवसाय आ क्षेत्र मे कार्यरत स्त्रिगणक चर्च मात्र प्रतीकात्मक रूपेँ कयल गेल अछि, एकर अतिरिक्त कैक व्यवसाय, कैक कर्मक्षेत्र आ कैक एरिया निश्चित रूप सँ विद्यमान होयत स्त्रिगणक मानसिक आ शारीरिक श्रम सँ दरीक नीचा भऽ रहल स्वीट रिब्ल्यूशनक आभास सकल लोक कैँ नहि भऽ रहलैक अछि।

अररिया जिलाक बहरबाड़ी गाममे किछु वर्ष पहिने धरि पटौनी लेल पम्प चलयबाक हेतु 50 किलोमीटर चलि कऽ आनय पड़ैत छल। टेलीविजन सँ दुरदर्शनक कार्यक्रम देखबा लेल 16 किलोमीटर कान्ह पर बैट्री उघि लेलाक उपरान्ते चार्ज भऽ सकैत छल। गाम सँ पक्का सड़क 10 किलोमीटर दूरस्थ अछि मुदा आब एहि गामक जीवन शैली, क्रिया-कलाप ओ परिणति मे क्रांतिकारी परिवर्तन भऽ गेल अछि। एकर सर्वाधिक श्रेय जनीजाति कैँ देल जा सकैछ। एहि जिलाक बसिन्दा छथि डॉ. हरिशरण जे भारत सरकारक उपक्रम भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्सक पहिल रिसर्च डायरेक्टर भेलाह अछि। दिल्लीक स्वयं सेवी संस्था 'डेपलपमेण्ट अल्टर्नेटिव 'क सहयोग सँ डॉ. शरण 2002 ई. मे बहरबाड़ी गाम मे धानक भुस्सा सँ

> ç×çÍÜ챿Ü ×ð SßØ¢ âãÜæðØæ â×êãU·¤ ×ææŠØ× â¡ çÙ•Ù ¥æçÍü·¤ çSÍçÌ·¤ çS˜æ»‡æ ·ð¡¤ÕǸU Üæ¬ÖÖÇ ÚUãÜ ÀUçÙÐ ¥âÜ ×ð °çãU ·¤ôçÅU·¤ çS˜æ»‡æ ·ð¡¤Õñ´·¤ SßØ¢ âãUæØÌæ â×êãU·¤ ·¤ôÙô âÎSØæ ·ð¡¤ ·¤ÁüU ÙçãU Îù v® ßæ w® çS˜æ»‡æ·¤ â×êãU ·ð¡¤ ·¤ÁüU ÎñÀUÐ

संचालित 50 के.बी क बायोगैस प्लान्टक स्थापना कयने छलाह। प्लान्ट स्थापना सँ पहिने डॉ. शरण बहरबाड़ी आबि स्त्रिगण लोकनि सँ अरबधि कऽ भेंट कयलनि आ मशिन कैँ नित दिन भुस्सा झोँकबाक लेल हुनका सभ सँ करार करौलनि। प्लान्ट हेतु भुस्सा सुखायब, चालब, कूटब ओ बीछि-बीछि झोँकब एतुका जनी-जातिक दिनचर्या भऽ गेल छनि। ओना परम्परागत रूपेँ धनकटनी आ धान कैँ झँटबाक काज एतय स्त्रिगण करैत रहलीह अछि। एतुका जनीजातिक बलेँ चलैत प्लान्टक कारणेँ आब बैट्री चार्ज, पानिक पम्प, धान उसनब, बत्ती आदि सुविधा लेल ऊर्जा गामहि मे उपलब्ध भऽ जाइछ। सभ सँ आश्चर्य जे प्लान्ट चलयबा मे 'सिफ्ट वाइज' जतेक स्त्रिगण कार्यरत रहैत जाइत छथि प्राय: क्यो मैट्रिक उत्तीर्ण नहि छथि। एहि गाम मे जनमल आत्मविश्वास मैथिल महिलाक नव भूमिकाक संदेश दऽ रहल अछि। ताहू मे अररिया जिलाक सामाजिक संरचना अन्यत्र सँ भिन्न रहल अछि। यैह एकटा जिला अछि जतय पुरुषक अनुपात मे स्त्रिगणक संख्या बेसी अछि। मुसलिम बहुलता, स्त्री शिक्षाक न्यून प्रतिशत, परम्परा पोषित विचारधारा, सकल राष्ट्रीय आयक संभवत: न्यून क्षेत्रक दृष्टान्त, बाढ़िक प्रभाव आदिक अतिरिक्त सीमावर्ती क्षेत्र होयबाक कारणेँ शरणार्थीक आयातित सांस्कृतिक-सामाजिक प्रदूषण, तस्करीक मायाजाल मे छानल अर्थव्यवस्थाक व्यापक प्रभाव स्त्रिगण जाति पर अदौ सँ पड़ैत रहल अछि।

विश्व स्वास्थ्य संगठन दिस सँ मुजफ्फरपुर आ सीतामढ़ी यैह दू टा जिला 'ग्रामीण महिला स्वास्थ्य सेविका' लेल चयनित भेल अछि।

'सहयोगिनी' नाम सँ बनाओल गेल महिला ग्रुप कैँ प्रशिक्षण दऽ प्रसव, पेयजल, सुरक्षा, स्वच्छता आदिक वैज्ञानिक जनतब देल गेल। कुल 360 गामक 470 स्त्रिगणक चयन भेल छल। प्रशिक्षित स्त्रिगण अपनहि गाम मे मिस्त्री ओ जनकल्याण काज कऽ रहलीह अछि। एकर परिणाम भऽ रहल अछि जे सरकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर निर्भरता अंश धरि घटल जा रहल अछि। मुजफ्फरपुरक मुसहरीक पूब टोल मे सहयोगिनीक नेतृत्व मे बीस सदस्यक स्त्रिगणक हैँज हैण्डपम्पक लगीच बरखहुँ सँ दुर्गन्ध दैत गोबर आदि कैँ स्वच्छ करैत गेलीह तँ स्त्री-पुरूष मे आत्म ग्लानि सुधार लेल विवश कऽ देलकनि। गोबर कैँ छिट्टा मे उठा 'असूर्यम्पश्या' लोकनि लगीचक खेत मे जा कऽ पटा अबैत गेलीह। तहिना मोमिनपुर गाम मे जमकल पानि कैँ स्रोत यैह ग्रुप खोलि समाज कैँ आँखि खोलबा लेल मजबूर कयलनि। एहि जिलाक सड़कक कतबइक एगारह गाम मे टूटल पैखाना टैंकक मरम्मति, पानि निकासी लेल अस्थायी नाली, हैण्ड पम्पत चबूतरा, स्त्रिगण लेल अस्थायी बाथ एरिया आदि संरचनात्मक काज सहयोगिनी सभ कऽ रहलीह अछि।

मिथिलांचल मे स्वयं सहायता समूहक माध्यम सँ निम्न आर्थिक स्थितिक स्त्रिगण कैँ बड़लाभ भऽ रहल छनि। असल मे एहि कोटिक स्त्रिगण कैँ बैंक स्वयं सहायता समूहक कोनो सदस्या कैँ कर्ज नहि दऽ 10 वा 20 स्त्रिगणक समूह कैँ कर्ज दैछ। सामान्यत: स्वयं सहायता समूह कैँ सामूहिक बचत राशिक एक सँ चारि गुणा तक कर्ज देल जाइछ। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा स्वयं सहायता समूह कैँ देल जायवला ऋण कैँ प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र कैँ देल जायबाला ऋण लेल नावार्ड बैंक कैँ शत प्रतिशत पुनर्वित

सुविधा सेहो दैछ। मिथिलांचल मे स्त्रिगण कैं आर्थिक रूपैं मजगूत बनयबा लेल खाली मुजफ्फरपुर मे 409 ग्रुप 'स्व-शक्ति प्रोजक्ट' क अधीन बनल अछि। तहिना सुपौल जिलाक प्रतापपुर थाना मे दलित, पीड़ित ओ उपेक्षित स्त्रिगण कैं आर्थिक निर्भरता एवं सामाजिक, राजनीतिक सबलता लेल सभ पंचायत मे 'सनेस बचत समूह' क गठन भेल अछि। ओना 'स्वयं सिद्धा' योजनाक अधीन मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, खगड़िया, सहरसा, अररिया, सुपौल आदि जिला मे अति निम्न आ मध्यम स्तरीय महिलाक आर्थिक स्वाबलम्बन उत्साहवर्द्धक प्रयास भऽ रहल अछि। मधुबनी जिला मे महिला दुग्ध सहकारी समिति उल्लेखनीय सफलता पौलक अछि। डेयरी प्रोजक्ट लेल दुधक आपूर्तिक दिशा मे मधुबनीक महिला समिति राज्य मे चर्चित भेल छल।

पश्चिमी चम्पारण जिला मे तँ स्वयं सहायता समूहक उपलब्धि देखि सहजहिँ विश्वास नहि होइछ जे दस्यु समस्या, अपहरण ,आदिवासी आ गैर आदिवासीक कड़गर आपसी संघर्ष, पराकाष्ठाक आर्थिक विभाजन, सामन्तवादक एखनहुँ जीवित प्रभाव आदिक छत्रछाया मे स्थापित भेल स्त्री शिक्षाक अपेक्षाकृत न्यून प्रतिशत,डाइन-ओझा-गुनी-फकीरक आशीर्वद सँ जीबैत लोक, घोघ प्रथाक होइत रीन्यूअ, गर्भपात भ्रूण हत्या-शिशु हत्याक सर्वाधिक प्रतिशत दर आदि विषम वातावरण मे एतय 3,887 स्व. सहायता ग्रुप कार्यरत अछि जाहि सँ 60 हजार सँ ऊपरे स्त्रिगण आर्थिक रूपैं स्वतन्त्र भऽ चुकलीह अछि। एहि जिलाक कैक स्त्रिगण स्वयं सहायता समूहक माध्यम सँ आर्थिक सुधारक कीर्त्तिमान बनौलनि अछि। बेतियाक एक मसोमात गीता देवी बैंक सँ कर्ज लऽ एक पुरान ऑटोक्शा तीन वर्ष पहिने कीनने छलीह। आइ ओ चारि वाहनक मलिकाइनि छथि। एहि जिलाक गोनोली गामक शारदा देवी स्टोन क्रेसरमे पनरह बरख माथ पर ऊघि पायर उझिलैत रहलीह। अपन जमा पूँजी, चानीक हँसुली-काड़ा बन्हक राखि एवं बैंक सँ नौ हजार टका कर्ज लऽ क्रेशर मशीन



किनलीह। आइ हुनक मशीन पर बीस लोक काज करैत अछि आ हुनक सामाजिक परिस्थिति मे एतेक उन्नयन भेल अछि जे राज्य मे कोनो जिलाक स्टोन ओनर्स एसोशिएसनक पहिल महिला अध्यक्ष बनलीह अछि। तहिना बेतियाक दरोगा टोला गामक विमला देवी आइ धरि बाम अंगूठा मे रोशनाइ कागत पर लगबैत रहलीह। समूहक स्त्रिगण हुनका स्कूल खोलबा लेल प्रेरित कयलकनि। बैंक सँ बीस हजार टाका कर्ज भेटलनि। स्कूल खुजल, सवा सय बच्चा नामांकन करौलनि। गामक तीन युवक नोकरी पौलनि आ विमला देवी स्वयं साक्षर भेलीह। एहिना कमला दवी अपन पांच हजार पूँजी आ बैंक सँ पच्चीस हजार टका कर्ज लऽ एक पुरान ट्रेक्टर किनलनि। तकरा भाड़ा पर लगौलनि। आइ तीन ट्रेक्टरक मलिकाइन छथि। तीन लोक कैं रोजगार सेहो देने छथि। सभ सँ विस्मयकारी कथा छनि कलावती देवीक। हिनक परिवार भीख मांगि निर्वाह करैत छल। स्वयं सहायता समूह सँ जुड़ि कलावती देवी अपन सन्तान ओ पति संग खिलौना बनबय लगलीह। नित दिन 100 वा 150 टकाक आमदनी होमय लगलनि। हिनक देखा-देखी बेतियाक गोसांइ टोलक संन्यासी ब्राह्मण समुदाय भीख मांगब छोड़ि स्त्रिगणक बलैं रोजी रोटीक व्यवस्था करबा मे सफल होइत जाइत गेलाह।

ई जे स्वीट रिब्ल्यूशन रसे-रसे भेल जाइछ तकर आगाँ वर्त्तमान परिवेश, पुरुषक स्वाभिमानी प्रवृत्ति, ग्रामीण राजनीतिक चक्रचालि, जातिगत समीकरण, हरित ओ श्वेत क्रान्तिक प्रतापसँ नव धनाढ्य वर्गक भूमिका आदि अपन दिस सँ विराम, अवरोध एवं बाधा ठाढ़ करैत रहल अछि। आ परिवर्त्तनकामी स्त्रिगण कैं संघर्ष, अपमान, प्रवंचनाक कठिन परीक्षा देमय पड़लनि अछि आ संभवत: एखन कैक युग धरि देमय पड़तनि। पूर्णियाँ जिलाक वायसी थानाक चन्द्रमा गाम मे जय अम्बर दुग्ध समितिक पतिया देवीक कार्य कौशल सँ परोपट्टा मे आयल आर्थिक क्रांति कैं स्थानीय दबंग, जातिवादी आ अपराधीक प्रवृत्तिक लोक हिनक उत्साह-योजना मे खलल देबाक निमित पति कैं शारीरिक आघात पहुँचौलकनि।

जनीजाति मे आर्थिक क्रांतिक अन्य माध्यम वैशाली जिला मुख्यालय हाजीपुरक निकटस्थ गाम मे सहजहि देखबा मे आबि सकैछ। आ से 'जिम कल्चर' क प्रसार। एहि जिला मे ग्रामीण क्षेत्रहुँ मे स्त्रिगण द्वारा 'हेल्थ क्लब' क स्थापना भेल अछि जे अरबधि

कऽ जनानी लेल रहैछ। एतय अत्याधुनिक मशीनसँ शरीर केँ आकर्षक बनाओल जाइछ। एहि क्लब मे स्त्रिगण केँ पत्रिका, समाचार-पत्र, केवल टी.वी म्यूजिक सिस्टम आदिक सुविधा भेटैछ। तकर बदला मे प्रति व्यक्ति प्रति मास 150 सँ 200 रुपैया लेल जाइछ। एहि जिलाक हुसैनपुर गामक हेल्थ क्लब मे 35 स्त्रिगण नामांकन खुजिते भेल छल। विरना गामक 'तेजस्विनी' हेल्थ क्लब मे मासिक निर्धारित शुल्कक अतिरिक्त मशीन किनबा लेल अग्रिम राशि सेहो लेल गेल छल। जमालपुर गाममे शरीरक अंग विशेष आकर्षक बनयबा लेल अत्याधुनिक मशीन अछि। एक अनुमान अछि जे वैशाली जिलाक ग्रामीण क्षेत्र मे कम सँ कम 15 हेल्थ क्लब खोलि 25 सँ 30 स्त्रिगण अपन जीविकाक मार्ग प्रशस्त कयने छथि । असल मे गाम सँ शहरक आवागमन मे भेल अभूतपूर्व सुधार, दू पहिया तेज वाहन किनबाक अप्रत्याशित आकर्षण, इडियट बाक्सक प्राइवेट जीबाक ढंग पर पड़ैत प्रभाव,स्थानीय स्वशासन व्यवस्था मे महिला आरक्षण, समाजक वंचित वर्ग मे सरकारी नीति सँ आयल आर्थिक-सामाजिक स्वाभिमान, अनुसूचित-पिछड़ल आ अल्पसंख्यक वर्ग लेल सरकारी वित्त निगमक अनुदान तथा सीमा धरि महिला आयोगक भूमिका सँ स्त्रिगण मे उपजल आत्मविश्वास, प्रतिद्वंद्विता आ स्टेट्स फीलिंगक कारणेँ हेल्थ क्लबक प्रयोग सफल भऽ रहल अछि।

केराक डम्भ आइ धरि निरर्थक बुझल जाइत छल मुदा वैशाली जिलाक स्त्रिगण तकरहुरेशा सँ उपयोगी वस्तु बना आर्थिक स्रोतक नव बाट तकलनि अछि। एतय केराक घौड़ काटि देबाक उपरान्त सँ पातर-पातर ताग निकाली, ओहि धागा सँ लेडिज पर्स, चप्पल डारमेट वॉल हैंगिक आदि बनयबाक काज करीब पांच साल पहिने भेल छल। एहि वस्तु सभ केँ बिक्री होइत छल। हाथ सँ ताग निकाली लेबाक स्थान पर एक मशीनक आविष्कार जिलाक हरिहरपुरमे स्थित केन्द्रीय केरा अनुसन्धान कयलक अछि। एहि मशीनक दाम 25,000 टका अछि। आ, एक दिन मे 25 किलोग्राम ताग बनयबाक क्षमता अछि। जिलाक कैक स्त्री संगठन दिस सँ बैंक, आइ, आर . डी. ए. आदिक माध्यम सँ मशीन किनाबाक प्रयास भऽ रहल अछि। हरियाणामे ग्राम पंचायत महिला सभक एक बृहद सभा मे शामिल चालीस प्रतिशत स्त्रिगण कहलनि जे 'चूल्हि' सँ चलि कऽ 'चौपाल' धरि भने ओ लोकनि पहुँचि गेली मुदा पुरुष वर्चस्वक कारणेँ एकर लाभ ने तँ स्वंय हुनका भेटी रहलनि अछि आ ने पंचायतक स्त्रिगण केँ। एतबे नहि गामक बूढ़-बुढ़ानुसक व्यंग्य सेहो सुनय पड़ेत छनि। मिथिलांचल मे स्थानीय स्वशासन मे निर्वाचित स्त्रिगण सँ क्यो एरहत्थू घोघ आ पुरुषक 'आदेशपाल' क स्थितिक अपेक्षा नहि करैत अछि। ई बात निधोख भऽ कहल जा सकैछ जे 'काऊबेल्ट' क ग्रामीण क्षेत्रक स्त्रिगण मे मैथिल महिला प्रगतिशील कहल जा सैकछ छथि। हुनक निर्भीक, स्पष्ट आ पदानुकूल भूमिकाक अनुभूति सहजहिँ भऽ सकैछ। मइ 2002 ई. मे मधुबनी जिलाक सौराठ गामक किछु पुरुष एवं एकस्त्री अपन कन्या शिशुक संग एहि जिलाक मंगरौनी ग्राम पंचायत उपमुखिया कौशल्या देवीक आंगन मे फरियाद लऽ उपस्थित होइत जाइत गेलीह। उक्त महिलाक वियाह किछु वर्ष पूर्व मंगरौनीयेक एक शिक्षक संग भेल छल एवं एक कन्या शिशु सेहो जन्म लेने छल। पत्नीक अभियोग छल जे झूठ आरोप मे हुनका नैहर छोड़ि देल गेल छनि। पतिक कहब छल जे ओ चरित्रहीन छथि, बजन्ता छथि आ कन्या शिशु हुनक वीर्य सँ जनमल नहि अछि। पछाति उप-मुखियाक निर्णय सँ पति-पत्नी मे सामंजस्य भऽ गेल।

मिथिलाक निम्न आ निम्न मध्यवर्गीय परिवार मे आर्थिक एवं सामाजिक विचार मे एकरूपताक संचार भेल अछि। अशिक्षित आ सामान्य शिक्षित परिवारहुँ मे पति-पत्नी आ सन्तान तक मे आमदनी, व्यय तथा बचत लेल एक विचार देखबा मे अबैछ। तकरे परिणाम थिक जे नेनाक शिक्षा आइ परिवारक केन्द्रीय विषय भऽ गेल अछि आ कन्यादान पहिल सीढ़ी सँ हेठ भऽ दोसर पर स्थिर भऽ गेल अछि। एहि अवधारणाक सृजन मे स्त्रिगणक भूमिका अहम अछि। पूर्णियां जिलाक अमौर थाना बाढ़िग्रस्त क्षेत्र अछि। सभ साल अगहनी भसिया जायब आ महाजन सँ सूद पर टका लऽ कऽ खेती करब तथा जीवन गुदस्त करब एतुका नियति अछि मुदा किछु वर्ष पूर्व काशीबाड़ी गामक नूरजहाँ, मैत्रा गामक खालिद बेगम आ रानी गामक खैरून निशा अपन-अपन पति केँ महाजन सँ त्राण दिअयबाक लेल खाढ़ी दर खाढ़ी सँ बनल प्रथा तोड़ि काज करबा लेल घर सँ बहरा गेलीह।

श्रीमती नीना श्रीवास्तव मधुबनी जिलाक कमाल-बलानक कतबहिक गाम मे निवास करैत मुसहर स्त्रिगणक अध्ययन कयलनि अछि। एहि गामक पुरुख पात रोजगार लेल पंजाब रहैत अछि। पतिक अनुपस्थिति मे एहि निर्धन स्त्रिगण सभ केँ सन्तान संग स्थानीय प्रभुता सम्पन्न लोकक आदंक, शोषण आ उपेक्षा केँ कोन तरहें सामना करैत जाइत छथि, कम रोचक आ प्रेरणादायक नहि अछि।

हमरा तँ कहुखन लगैत अछि जे दक्षिण पूर्व एशियाक वर्मा, थाईलैंड, लाओस, कम्बोडिया, वियतनाम, इंडोनेशिया आदि देश मे कहियो स्वीट रिबल्यूशनक माध्यम सँ स्त्रिगण समाजक काया कल्प कऽ देलनि। तहिना मेकाले पद्धति सँ कोसहुँ दूर सामान्य सरोकार रखनिहारि मिथिलाक बहुसंख्यक स्त्रिगणक आजुक सोच, आचार आ भूमिका अनपेक्षीत परिणाम देथि, तँ आइ प्रयोजन अछि जे स्त्री शक्ति केँ प्रशासकीय, वित्तीय आ प्रबन्धकीय सहयोग प्रदान कयल जाय। हिनका लोकनि सँ जुड़ल कैक लाभकारी सरकारी योजना जनतब नहि रहबाक कारणेँ आओर अभिरूचिक अभाव मे हाथ सँ निकलि जाइत रहल अछि। स्त्रीगणक जे बहुसंख्यक फोर्स आइ आर्थिक स्वाबलम्बन दिस क्रियाशील बूझि पड़ैत छथि तनिका संग तकनीकी एवं प्रशासकीय ज्ञानक न्यूनता छनि। एहना स्थिति मे एक टा नव अर्थव्यवस्थाक निर्माण लेल सभ कोटिक सहयोग प्रासंगिक भऽ गेल अछि। एहि प्रसंग केँ जाति, धर्म आ क्षेत्र विशेषक संकीर्ण भावना सँ मुक्त रहब आवश्यक अछि।

संपर्क : अच्युत परिसर
लालबाग, दरभंगा (मिथिला)

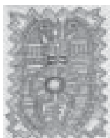
❋❋❋



आंदोलन

मिथिला राज्य अभियान कियैक?

डॉ कमल कान्त झा



अधिकांश प्राचीन ग्रन्थ वेद पुराण आदिमे मिथिला देशक चर्चा भेटैत अछि जकर राजा विदेह राजा जनक होइत छलाह। ओहि समयमे लोक दीर्घजीवी होइत छल। विदेह राजा जनकक राजवंशमे 56 राजा भेलाह। ओहि समयक समृद्धिक तँ ई हाल छल जे सिपाही के नीक वस्त्राभूषणे आ सोनाक थारीमे भोजन करैत देखि प्रथम आगमनमे राम लक्ष्मणके भ्रम भऽ गेलनि जे वैह राजा जनक तँ नै छलाह? जनक राजवंशक अंतिम दूटा राजा दुराचारी भऽ गेलाह तँ अन्तिम राजाकेँ जनता ऋषिक नेतृत्वमे विद्रोह कऽ उखाड़िकऽ फेकि देलक। राजा ककरा बनौलक तकर उल्लेख नहि भेटैत अछि। प्राय: हजारों वर्ष धरि मिथिला देश बिना राजाक रहल–

न राजा न च राज्यासीत न दण्डयों न च दाण्डिक,

धर्मेणैव प्रजा: सर्वे रक्षन्तिस्म परस्परम।

हमरा जनैत ई उक्ति ऐहीठामक लेल प्रयुक्त भेल हैत, कारण वेदक अधिकांश ऋचा तथा अनेक पुराणक रचयिता तँ मैथिले छलाह। तँ स्वत: सिद्ध अछि जे ओहि अवधिमे ने राजा छलाह ने राज्य छल ने दण्ड छल आ ने दण्ड देनिहारे छलाह, अपितु धर्मक दण्डसँ

शासन चलैत छल तथा परस्पर एकदोसराक रक्षा होइत छल। बादमे पड़ोसी राजा सभक आक्रमण कारण मिथिला भिन्न-भिन्न राजवंशक अधिन होइत गेल, यथा-वज्जिसंघ, लिच्छवि शासन, शिशुनाग नन्दवंश, मौर्यवंश, शुंग वंश, कान्ववंश, कुशान वंश, गुप्तवंश, यशोधर्मन वर्धनवंश आदि। बीच में मिथिलाक राजा जयवर्धन सलहेस भेलाह जे नीक शासन प्रदान कयलनि तथा देशकेँ शक्तिशाली बनौलनि। ओहिसँ पूर्व मगध नरेश लोकनि मिथिला पर ततेक अधिक अत्याचार कयने छलाह जे ऐहिठामक लोकके ं मगधसँ घृणा भऽ गेलैक। मोकामाक रहनिहार चूहड़मल राजा सलहेसक विरोधमे बहुत षड़यन्त्र कयने रहथि। तेँ एखनहुँ लोक मगध क्षेत्र में गंगा स्नान वर्जिते रखने अछि। ''ओ तँ मग्गाह थिकैक, ओहि पारमे गंगा स्नान कयलासँ कोन धर्म?'' ऐहि वाक्य द्वारा लोक मिथिले क्षेत्रक गंगास्नान केँ प्रशस्त मानैत अछि तथा सिमरियाघाटमें एखनहुँ कार्तिकमे मास मेला लगैत अछि। राजाा सलहेसक बाद मिथिला देशकेँ बारम्बार तिब्बतक आक्रमण सहय पड़ल छलैक। देश छोट होइत गेल छल। देशसँ देश कोस भऽ गेल छल। ओना 'मिथिला देश' शब्दक प्रयोग बंकिम चन्द्र सेहो अपन प्रसिद्ध उपन्यास 'आन्नद मठ' मे कयने छथि। कहबाक अभिप्राय ई अछि जे प्राचीनकालमें मिथिला एक समृद्धिशाली देश छल, किन्तु आइ एकटा साधारण प्रदेशों नहि अछि। कियैक नहि अछि तकर पाछाँ हमरा लोकनिक आलस्य एवं स्वार्थलोलुपता मुख्य कारण अछि। आइ सब भाषाकेँ अपन प्रान्त छैक, किन्तु हमरा लोकनिक कोनो प्रान्त नहि अछि। जाहि समयमे (प्रायः1912 ई. मे) बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा तीनू पृथक प्रान्त बनल, ताही समयमे हमरा लोकनिकेँ अड़ि जाय चाहैत छल जे हमरो पृथक मिथिला प्रान्त चाही। ओहि समय 'मिथिला मोद' क सम्पादक म0 म0 मुरलीधर झा उक्त बिहार प्रान्तक नाम 'मगध मिथिला' रखबाक सुझाव देने छलथिन, मुदा से चललनि नहि। असलमे बिहारक बदला ओही समयमे तीन प्रान्त-मिथिला, मगध एवं छोटानागपुर भऽ जायक चाहैत छलैक। किन्तु ''दिल्लीश्वरो'' कहि सत्ताक गुणनान कयनिहार पण्डित लोकनि बृटिश शासनक विरोध कोना करितथि? ओकरा तँ 'अंग्रेज बहादुर' कहि प्रशंसा करैत छलथिन। ओ लोकनि तँ दरभंगाक महाराजकेँ 'मिथलेश' कहि सन्तुष्ट भऽ जाइत छलाह। फेर सम्पूर्ण मिथिला प्रान्त बनयबाक प्रयोजने की छलनि? परिणाम भेल जे हमरा लोकनि बिहार प्रान्तक अधीन भऽ गेलहुँ, जकरा दिल्लीक शासक वर्ग बिना बुझने सुझने हिन्दी भाषी प्रान्त कहि देलक। हमरहु लोकनि तँ कहियो जोरदार विरोध प्रदर्शन नहि कऽ सकलियैक।

अतीतमे जे गलती भेल से भेल। ओकरे जपैत रहलासँ कार्य नहि चलत। एहनो बात नहि छैक जे मिथिला राज्यक लेल कहियो प्रयास नहि भेल। मुरलीधर झासँ लऽ कऽ आइ धरि नब्बे वर्षमे अनेक छिट फुट प्रयत्न भेल। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद 1952-53 ई. मे बाबू जानकी नन्दनसिंह पृथक मिथिला राज्यक लेल कल्याणी कांग्रेस अधिवेशनमे जोरदार प्रदर्शन कयलनि। देशद्रोही धारा लगा हुनका डा० विधान चन्द्र रायक पश्चिम बंगाल सरकार जेल पठा देलकनि। मिथिला राज्यक आन्दोलन स्वर दबि गेल। फेर डा० लक्ष्मण झा उठलाह आ मिथिला राज्यक लेल जबर्दस्त स्वरमुखर कयलिन। ओकरा लेल ओ विवाह नहि कयलनि सी० एम० कॉलेजक इतिहास विभागक व्याख्याता पद सेहो व्यागि देलनि तथापि आम जनता तँ दूर, बुद्धिजीवी वर्ग वा प्रबुद्ध समाज सेहो हुनका संग नहि देलकनि। उनटे हुनका बताह घोषित कऽ देल गेलनि। ओझाक लेखे गाम बताह, गामक लेखे ओझा बताह। जँ लोक हुनक नेतृत्वमे जोरदार आन्दोलन कयने रहैत तँ आइ झारखण्डसँ पूर्व मिथिला राज्य भेल रहैत। डा० लक्ष्मण झा सेहो निराश भऽ बैसि गेलाह। भऽ सकैत अछि हुनकहुमे किछु दोष रहल होइन यथा-ब्राह्मण जाति आ ताहूमे पाँजि-पाटि कृया-कर्म मूल-गोत्र सन्ध्यवन्दन आदिक अधिक महत्व दैत छलाह, जे आधुनिक युगमे चलय बाला बात नहि अछि। तथापि हुनक मिथिलाक आर्थिक ओ शैक्षिक विकासक कल्पनामे कोनो दोष नहि छलनि। हुनके कल्पनाक परिणाम भेल जे दरभंगामे 1973 ई. मे मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना भऽ सकल। उक्त विश्वविद्यालय आन्दोलन हमरहु लोकनि भाग लेने रही। हमरा नीक जकाँ स्मरण अछि जे 1963-64 ई. में डॉ. झासँ प्रेरणा लऽ कऽ श्री राजेश्वर मिश्र (सम्प्रति वरिष्ठ अधिवक्ता, लहेरियासराय) हमरालोकनिकेँ संगठित कय मिथिला विश्वविद्यालय लेल दरभंगा लहेरियासरायक सड़क पर प्रदर्शन आयोजित कयने रहथि आ बेसीकाल ओहन रमन चमन होइते रहैत छल। तकरे परिणाम भेल जे मात्र दस-बारह वर्षक सघन संघर्षक कारण मिथिला विश्वविद्यालय भेटि गेल। ओहिसँ कम समयमे मिथिला राज्य प्राप्त कयल जा सकैत अछि, किन्तु तकरा लेल प्रबल आन्दोलन ठाढ़ करय पड़त। उक्त आन्दोलनमे जनजनकेँ सहभागी बनय पड़त। घबड़यबाक प्रयोजन नहि छैक। चरणबद्धक आन्दोलन लेल पं० ताराकान्त झाक कुशल नेतृत्वमे 'मिथिला राज्य अभियान समिति' बनि गेल अछि जाहिमे अन्तर राष्ट्रीय मैथिली परिषद, मिथिला राज्य संघर्ष समिति एवं अन्य कतोक स्थानीय मिथिला मैथिलीक संस्था सभक कार्यकर्त्ता समाज सेवी, विभिन्न पार्टीक समर्थक कार्यकर्ता आदि सहयोग कऽ रहल छथि। मिथिला राज्यक पक्षमे निम्नलिखित जोरदार तर्क अछि-

1. मिथिलाक प्राचीन गौरवशाली परम्परा छैक जकर एक निश्चित भूभाग छैक। शेष बिहारक 42 प्रतिशत भूभाग मिथिला क्षेत्रमे पड़ैत अछि। जँ सम्पूर्ण उत्तर बिहार तथा गंगाक ओहि पारक सात जिला (जे ग्रियर्सन द्वारा बनौल मैथिली भाषी क्षेत्र नक्शामे पड़ैत अछि) - मुंगेर भालगपुर, देवघर, बाँका, गोड्डा, साहेबगंज एवं दुमका केँ शामिल कऽ लेल जायतँ बिहारक 60 प्रतिशत भूभाग भऽ जायत। ओतेक देशमे एक दर्जननहि पूरत।

2. वृहद मिथिला केँ जँ छोड़ियों देल जाय, तथापि उत्तर बिहारमे खाँटी मैथिली भाषी जिला 16 रहि जाइत अछि, जकर अन्तर्गत 96लोकसभा क्षेत्र तथा 907 विधान क्षेत्र पड़ैत अछि। अर्थात प्रमण्डल 4

(मुजफ्फरपुर,दरभंगा, कोशी ओ पूर्णियाँ) जिला 96, प्रखण्ड 200, पंचायत 3359, थाना 276, ग्राम 93656, क्षेत्रफल 37.66 वर्ग कि.मी जनसंख्या तीन करोड़ सँ अधिक ग्रामीण आबादी 62. 79 प्रतिशत शहरी आबादी 7.26 प्रतिशत, पुरुष 52.27 प्रतिशत महिला-47.63 प्रतिशत, अनुसूचित जातिक आबादी 95. 65 प्रतिशत, अनुसूचित जनजातिक आबादी 9.9 प्रतिशत पड़ैत अछि। एकटा आर्दश राज्यक लेल एतबा जनसंख्या एवं क्षेत्रफल पर्याप्त अछि।

3. मिथिलाक एकटा समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा छैक, जकरा मैथिल सम्प्रदाय वा मिथिला संस्कृति कहल जाइत अछि। कहल गेल अछि ''धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयो मिथिलायां व्यवहारत'' अर्थात जँ धर्म (कर्म काण्डक) कर्मक निर्णय करबामे आनठाम कतहू कठिनाई भऽ जाय तँ मिथिला आबिकऽ ओकर व्यवहार देखि लिअ- सैह उचित भेल। मिथिला भारतीय (हिन्दु) संस्कृतिक प्रतिनिधित्व औसत भारतक रूपमे करैत अछि। महाकवि श्री सुमनजी यथार्थे कहने छथि-

''लधुप्रतिमा भारतक ई
विधि-शिल्पी कर कौशलैँ
दर्शनीय रूपैँ रचल
जनक जनपदक छवि छलैँ।''

4. एहि क्षेत्रक अपन एक विशिष्ट लिपि (तिरहुता) तथा समृद्ध साहित्यिक भाषा (मैथिली) छैक, जाहिमे हजारो महत्वपूर्ण ग्रन्थक रचना भऽ चुकल अछि सैकड़ो पत्र-पत्रिका प्रकाशित भऽ चुकल अछि, जकरा देखैत पैंतालीस वर्ष पूर्व केन्द्रीय साहित्य अकादमी एहि भाषाकैँ मान्यता दय प्रतिवर्ष एक दू साहित्यकारकैँ पुरस्कृत करैत अछि। राष्ट्रीय एकताकैँ ध्यानमे रखैत एकासय वर्ष पूर्वहि एहिठामक लोक देवनागरी लिपिकैँ अपना चुकल अछि।

5. अत्यन्त सघन आबादी तथा पटना दिल्लीक सरकार उपेक्षाक कारण मिथिलामे भयंकर गरीबी एवं बेरोजगारी अछि। ऐहिठामक साक्षरता 27.65 प्रतिशत मात्र अछि, जाहिमे पुरुष साक्षरता 36 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 15.77 प्रतिशत अछि। गरीबी रेखाक नीचा 72.54 प्रतिशत आबादी अछि। प्रति व्यक्ति औसत आय 3062-टाका प्रतिवर्ष अछि अर्थात अढ़ाइसय टाका मात्र प्रतिमास आय छैक। ऐहिठाम सोलहमे बारह जिला प्रतिवर्ष बाढ़िसँ प्रभावित तथा दू-तीनटा जिला आंशिक प्रभावित होइत अछि। अर्थात 200 मे 175 प्रखण्ड धरि बाढ़िश प्रभावित भऽ जाइत अछि। एहिठामक जन्मदर प्रति हजार 32.6 अछि तथा मृत्युदर 10.6 अछि।

°çãUÆæ×·¤Âý çÌÖæ·ð¡¤âÚU·¤æÚUèÂýô˜âæãÙ ÙçãUÖðÅñUÌ ÀñU·¤, Áæç㤷¤ÚU‡æ¥ô ÕæãUÚU ÂÜæØÙ ·¤Ó¥æÙ ¥æÙ ÚUæ…Ø °¢ßÔ Îðàæ·ð¡¤»õÚUßæç‹ßÌ ·¤ÚñUÌ ¥çÀU ÚUæ…Ø ÕçÙ »ðÜæ ÂÚU ™ææÙ-çß™ææÙ·¤ ÿæð˜æ×ð âðãUô ç×çÍÜæ ¥»ý‡æè ÖÓ ÁæØÌ °çãUÆæ×·¤ ×ÁÎêÚU·ð¡¤ Âð ÙçãU ÖÚUÜæ·¤ ·¤æÚU‡æ ÕæãUÚU ÁæØ ÂǸñUÌ ÀUçÙ ÁæçãU ·¤æÚU‡æ ç×çÍÜæ×ð SßØ¢ ©UˆÂæÎÙ×ð OãUæâ ÖðÜ Áæ ÚUãUÜ ¥çÀU ÚUæ…Ø ÕçÙ »ðÜæ ÂÚU ÕæãUÚU ·¤·¤ÚUô ÙçãU ÁæØ ÂǸÌñ·¤ ¥ôÜô·¤çÙ ¥ÂÙçãU Âýæ‹Ì·¤ Âý»çÌ×ð âãUÖæ»è ÕçÙ ÕæÜÕ“ææ·¤ â¢» âé¹àææç‹Ì âð¡ ÁèßÙ ÃØÌèÌ ·¤ÚUÌæãUÐ

6. ऐहिठाम अपार जल संसाधन एवं उर्वर भूमि अछि। धरतीक सतहसँ मात्र बीससँ तीस फीट नीचामे जल प्राप्त भऽ जाइत छैक। राज्य बनि गेलाक बाद ओकर समुचित सदुपयोगसँ मत्स्य उद्योग, मखान उद्योग, फूल एवं फल उद्योग, पनबिजली उद्योग, कृषि उपजमे भयंकर वृद्धि तथा अनेक भारी ओ लघु उद्योग ठाढ़ कय खरबो टाकाक कमाई प्रतिवर्ष कयल जा सकैत अछि।

7. एहिठामक प्रतिभाकैँ सरकारी प्रोत्साहन नहि भेटैत छैक, जाहिकरण ओ बाहर पलायन कऽ आन आन राज्य एवं देशकैँ गौरवान्वित करैत अछि। राज्य बनि गेला पर ज्ञान-विज्ञानक क्षेत्रमे सेहो मिथिला अग्रणी भऽ जायत।

8. एहिठामक मजदूरकैँ पेट नहि भरलाक कारण बाहर जाय पड़ैत छनि जाहि कारण मिथिलामे स्वयं उत्पादनमे ह्रास भेल जा रहल अछि। राज्य बनि गेला पर बाहर ककरो नहि जाय पड़तैक। ओलोकनि अपनहि प्रान्तक प्रगतिमे सहभागी बनि बालबच्चाक संग सुखशान्ति सँ जीवन व्यतीत करताह।

9. एहिठामक साहित्यकारकैँ उच्चकोटिक रचनाक बादो आइ धरि ज्ञानपठ पुरस्कार नहि भेटि सकलनि अछि। राज्य बनि गेला पर स्वतः ओ एहिठामक राजभाषा बनि जायत। भाषा एवं संस्कृतिक महत्व सबठाम भेटय लागत, जाहिसँ एहिठामक विद्वानकैँ नोबेल पुरस्कार तक भेटबाक सम्भावना बनल रहतनि।

10. एहिठामक भाषा (मैथिली) मे ने दैनिक समाचार पत्र आ ने फिल्म निर्माणक साहस कोनो उद्यमी कऽ पबैत छथि कारण घाटा लगबाक खतरा बनल रहैत छनि। परिणामस्वरूप मिथिला क्षेत्रमे बाहरक उद्यमी आबि अखबार एवं फिल्मक माध्यमसँ आम जनताक शोषण करैत रहैत छथि। राज्य बनि गेला पर एहिठामक उद्यमी अपन भाषाक माध्यमसँ उक्त उद्योग ठाढ़ करताह, कारण तखन सरकारक सहयोगक बल रहतनि।

आर कतोक बात अछि, जाहि कारण मिथिला राज्यक गठन अत्यन्त आवश्यक उचित एवं सामयिक अछि। एहि संक्षिप्त निबन्धमे सब विषयक समावेश करब कठिन अछि।

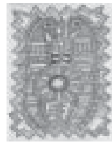
सम्पर्क : *शिक्षा निकेतन, सुभाष चौक*
पो. जयनगर. जि. मधुबनी (मिथिला)
मोबाइल : 9473013050
99934098844

❋ ❋ ❋



मिथिलांचलक दुर्दशा

हेरम्ब नाथ ठाकुर



अतीतमे शस्य श्यामला उत्तर बिहारक फुलबाड़ी गरिमामण्डित, मनीषी, आचार्य एवं लब्धप्रतिष्ठ विद्वान गढ़ मानल जाय वला मिथिलांचल आइ अपन संताप एवं दुर्दशामे लिप्त भेल कराहि रहल अछि, किएक? एहि किएकक उत्तर हम मैथिल बुद्धिजीवीसँ पाबय चाहैत छी, जे आइयो विद्वता, प्रतिष्ठा एवं वैभवक शिखर पर छथि। महाकवि विद्यापति अपन रचनासँ मिथिले टाक गरिमाकेँ नहि वरन समस्त उत्तरी भारतमे व्याप्त मर्यादाक वर्णन कए विवादक फंदामे पड़ि गेलाह। परन्तु बहुत संघर्षक बाद निर्णय भेल जे ओ मैथिल छलाह आ मिथिलाक शैक्षिक विकास हेतु आजन्म समर्पित रहलाह। मुदा, हुनका बाद कोनो कवि वा लेखक ओहि उत्साहक संग मातृभूमिक सेवा नहि कऽ सकलाह, जकर फल आइ एहि क्षेत्रक व्यापक दुर्दशा अछि।

बादमे मैथिली भाषाक विस्तारो अबरुद्ध भऽ गेल तथा सरकारी को पाक कारणें जतय प्राइमरी स्तरसँ स्नताकोत्तर धरि एकर पढ़ाई होइत छल सेहो बन्द होयबाक कगार पर अछि।

राज दरभंगा जखन वैभवक चरम सीमा पर छल तखनो संस्कृत शिक्षा हेतु सतत ध्यान

देल गेल, पाठशालासँ विश्वविद्यालय स्तर धरि, परन्तु मैथिलीक प्रति उदासीनते बरतल गेल। जाहि कारणें आजुक स्थिति दयनीय अछि।

आजादीक बाद बिहारमे चारि दशक धरि कांग्रेसक हुकूमत रहल आ मैथिली मुख्यमंत्रीयो बनैत रहलाह परन्तु केओ मिथिला, मैथिली आ मैथिलीक विकास हेतु किछुओ नहि कयल जखन कि समस्त प्रान्तक आबादीक करीब आधा हिस्सा मिथिलांचल अछि। 1954 ई. मे स्व. जानकी नन्दन सिंहक नेतृत्वमे मिथिलांचलक समस्याकेँ उजागर करबाक हेतु कल्याणी कांग्रेसक महाधिवेशनक अवसर पर एकटा पैघ शिष्ट मंडल चलल। हमहू ओहिमे भाग लेने रही। परन्तु बंगालक तत्कालीन मुख्यमंत्री ड. विधान चन्द्र राय वर्धमानेमे ओहि रेल डब्बाकेँ कटबा देल जाहिमे मैथिल शिष्टमंडल जा रहल छल। ई डेग बिहारक मुख्यमंत्रीक इशारा पर उठाओल गेल छल ताकि कल्याणी जा कए ई लोकनि अपन उचित माँग नहि माँगि सकथि। जखन सर्वश्रेष्ठ प्रधानमंत्री पं. नेहरु केँ एकर जानकारी भेटल तँ ओ तत्क्षण एकर विरोध कयलनि आ डब्बाकेँ कल्याणी पहुँचाओल गेल परन्तु तावत महाधिवेशन समाप्तप्राय होमय जा रहल छल। तकराबाद नेतृत्वक अभावमे पुनः कोनो कसगर आन्दोलन नहि भऽ सकल अनुचित लाभ उठा सरकार मिथिलांचलक शोषणे टा कयलक। कांग्रेसीये शासनमे एहि क्षेत्रक सभ उद्योग धंधा मृतप्राय भऽ गेल। उदाहरण स्वरूप-रैयाम, लोहट, सकरी, समस्तीपुर आ बनमनखीक चीनी मिल, समस्तीपुरक कागज मिल, जूट मिल एवं वैद्यनाथपुरक कागज मिल सभटा सरकारी शोषणक कारणें बन्द अछि।

स्व. ललित बाबूक अभिरुचि छल जे एहि क्षेत्रक समग्र विकास हो, परन्तु क्रुर कालक चपेटमे पड़ि हुनकहु अकाल मृत्यु भऽ गेल। एकटा प्रसंगक वर्णन करैत छी। साठिक दशकक अन्तिम सालमे ललित बाबू अपन गाम आयल छलाह। किछु बुद्धिजीवी लोक हुनकासँ भेंट करबाक हेतु गेलाह आ



मिथिलांचलक दुर्दशा खास कऽ भाषाक घोर उपेक्षाक सम्बन्धमे लम्बा-चौड़ा गप्प कयल। हमहू ओहिमे छलहुँ। ओ एहि क्षेत्रक अधोगतिकेँ समाप्त करबाक आश्वासन देलनि आ कहलनि जे अहाँ सभ एक शिष्ट मंडली लऽ कए दिल्ली आउ, जाहिमे कम-सँ-कम

¥æÁæÎè·¤ ÕæÎ çÕãUæÚU×ð ¿æçÚU Îàæ·¤ Ïçú ·¤æ¢»ýðâ·¤ ãUé·ê¤×Ì ÚUãUÜ ¥æ ×ñçÍÜè ×é¹Ø×¢µæè ÕÙñÌ ÚUãUÜæãU ÂÚU‹Ìé ·ð¤¥ô ç×çÍÜæ, ×ñçÍÜè ¥æ ×ñçÍÜè·¤ çß·¤æâ ãðUÌé ç·¤Àé¥ô ÙçãU ·¤ØÜ ÁÕ¹Ù ç·¤ â×SÌ ÂýæÙÌ·¤ ¥æÕæÎè·¤ ·¤ÚUèÕ ¥æÏæ çãUSâæ ç×çÍÜæ¢¿Ü ¥çÀÐ

दूटा मैथिली गायक सेहो रहथि, किएक तऽ तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. इन्दिरा जीसँ हम एकर समाधान निकलबा सकी। तदनुरूप एक शिष्ट मंडली चलल जाहिमे धीरेन्द्र-महेन्द्र सेहो प्रमुख छलाह। स्व. ललित बाबू स्व. इन्दिरा जीसँ समय लऽ हुनका मैथिली गीत सुनयबाक कार्यक्रम कयल। समय जे निर्धारित छल ताहूसँ बेशी समय दकेँ ओ गीत सूनल आ अन्तमे जखन समदाउन सुनाओल गेल तऽ हुनका आँखिसँ नोर टघरि गेल आ ओ पूर्ण आश्वासन देलनि जे मैथिलीकेँ निश्चित रूपसँ अष्टम सूचीमे दर्ज कराओल जायत।

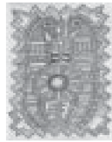
परन्तु ओहो अपन आश्वासनकेँ पूर्ण नहि कऽ सकलीह आ बादमे निर्मम हत्याक शिकार भऽ गेलीह जे कलंक भारत माताक भाल पर सदैव रहत। ललित बाबू ओहिसँ पहिने निर्मम हत्याक शिकार भऽ गेलाह आ ओकर बाद केओ आइ धरि एहि कुहरैत क्षेत्रक विकास हेतु किछुओ नहि कयल।

जखन संघर्षक बाद झारखंड एवं गोरखालैंड क्षेत्रकेँ स्वायत्तता देल जा सकैत अछि तँ मिथिलांचलकेँ कहिया धरि जायज हकसँ वंचित राखल जायत। पं. ताराकान्त झा, प्रसिद्ध न्यायविद एवं भूतपूर्व अध्यक्ष, भाजपा, सेहो एहि बीच जन जागरण कए यथार्थ तस्वीर राखल अछि। ओ पुरजोर माँग कयलनि अछि जे मिथिलांचलमें कृषिकेँ उद्योगक दर्जा अविलम्ब देबाक संगहि मृत उद्योगकेँ यथाशीघ्र चालू कयल जाय। की केन्द्रक लोकतंत्र सरकार एहि चारि करोड़ मिथिलांचलक वासीक उचित माँग पर संवेदनपूर्वक विचार करत?



नेपालमे मैथिली साहित्य

धीरेन्द्र प्रेमर्षि



लिपि

मैथिली भाषाक अपन मौलिक लिपि छैक, जकरा मिथिलाक्षर कहल जाइत छैक। मिथिलाक्षरके तिरहुता लिपि सेहो कहल जाइत छैक। तिरहुता लिपिक प्रारम्भिक रूप गुप्त तथा पाल वंशक राजासबहक अभिलेखमे पाओल जाइत अछि। बौद्धग्रन्थ ललित विस्तारमे वैदेही लिपिक नामसँ मिथिलाक्षरक प्रयोग भेल अछि। सातम शताब्दीमे गुप्तकालक उत्तर-पूर्वी वर्णमासामे भेल परिवर्तन आदित्य सेनक अभिलेखादिमे देखल जाइत अछि। यैह बादमे मिथिलाक्षरक रूपमे विकसित भेल आ कतोक विद्वान एकरा गौड़ीय लिपि कहलनि। ओन गुप्तसब द्वारा मिथिलाके तीरभुक्ति कहल गेलाक कारणे ई शब्द अपभ्रंसित होइत 'तिरहुति' भेल आ अइठामक लिपिके तिरहुता लिपि कहल जाए लागल। अइ लिपिक अस्तित्व केहन संकटसँ गुजरि र हल अछि तकर प्रमाणक रूपमे एकरे लेल जा सकैए जे स्नातक स्तरक मैथिलीक परीक्षामे दश नम्बरक मिथिलाक्षर लेखन सेहो रहैत छैक। मूलत: आब ई मैथिलीक किछु पुरान विद्वानधरिमात्र सीमित रहि गेल अछि। वर्तमानक प्रखर साहित्यकार तथा विशिष्ट मैथिलीसेवीलोकनि सेहो अधिकांश तिरहुता लिपिक ज्ञानसँ वंचिते छथि। आंगुरेपर गनल जा सक'वला किछु लोक छथि जे एकर महत्वके बूझिक' एकरा जोगौने छथि आ विस्तारक लेल सेहो यथासम्भव प्रयत्न क रहल छथि।

मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृति आदिक यात्राक्रम प्राय: सामान्य रहितो मैथिलसबहक

बीचसँ मिथिलाक्षरक पलायनक पृष्ठमे सरकारी संरक्षणक कमिएँकेँ मानल जा सकैए। कारण जे वर्तमान भौतिक युगमे हस्ताक्षरक रूपमे मात्र मिथिलाक्षरक संरक्षण नै कएल जा सकैत अछि। कूथि-काथिक' एक-आधटा पत्रिका आ समय-समयपर गोटेक पोथी छपि जेबाक अवस्थामे कोनो मैथिल मात्र अपन लिपिक लेल लाखो टका खरचिक' मिथिलाक्षरक प्रेस स्थापित नै क सकैत अछि। आर्थिकरूपेँ अइतरहक अनुत्पादक काज राष्ट्रिय सम्पत्तिक सुरक्षाक दृष्टिएँ सेहो सरकारद्वारा कएल जेबाक चाही। मुदा ई सकारात्मक विचार ने त संख्यात्मक दृष्टिएँ मैथिलीक दोसर स्थान रहल देश नेपालक सरकारमे एलैए आ ने सर्वाधिक मैथिलक संख्या रहल भारतीय राज्य बिहारेक सरकारमे।

तैयो मैथिली अपन गरिमामय साहित्यिक यात्राके विराम नै लेब' देलक अछि। दुनू देशमे प्रचलित लिपि देवनागरिएके अपन अभिव्यक्तिक माध्यम बनौलक अछि। अर्थात कहल जा सकैछ जे मैथिली भाषाक प्रचलित लिपि आब देवनागरिए भ गेल अछि। हस्तलेखनसँ ल प्रकाशनादिधरि अही लिपिक प्रयोग आब मैथिलीक जीवनक आधार भ गेलैए।

लिखित साहित्य

तत्कालीन मिथिलाक राजधानी सिमरौनगढ़क कर्णाटवंशीय राजा हरिसिंह देवक सभाक पंडित ज्योतिरीश्वर ठाकुर नेपालमे मैथिलीक पहिल साहित्यकारक रूपमे प्रतिष्ठापित छथि। ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मैथिली साहित्यक मात्र नै भ सम्पूर्ण उत्तरभारतीय साहित्यक आदिगद्यग्रन्थ मानल जाइत अछि। तेरहम शताब्दीमे दिल्लीक बादशाह गयासुद्दीनक आक्रमणसँ तिरहुत राज्य सिमरौनगढ़ नष्ट भ गेलाक बाद राजपरिवारक सदस्यसब काठमाण्डू उपत्यकामे शरणार्थीक रूपमे प्रवेश केलनि। उपत्यकाक तत्कालीन साहित्यप्रेमी मल्ल राजालोकनिद्वारा तिरहुत राजपरिवारके तथा अन्य मैथिलसबके आश्रय देल गेल। विद्वताक कारणे सेहो किछु मैथिल काठमाण्डू उपत्यकामे बजाओल गेलाह। आ साहित्य, कलाप्रेमी मल्ल राजासबद्वारा उपलब्ध शालीन वातावरणमे एकबेर अहूठाम मैथिली उजिया उठल। अहीबीच अइठामक मल्ल राजालोकनि विद्यापतिक साहित्यसँ विशेष प्रभावित भ तथा मैथिलीक विशिष्टतासँ परिचित भ स्वयं सेहो मैथिली गीत, नाटक आदिक रचना कर' लगलाह। राजा जगज्ज्योति मल्ल, प्रताप मल्ल, सिद्धिनरसिंह मल्ल, जयप्रकाश मल्ल आदि द्वारा लिखल गेल साहित्य मैथिलीक गरिमाके आर बढ़ा देलक।

§ü ·ý¤× ¥æ»æ ÕÉ¸ UÜ ¥æ çßçÖ‹Ù âæçãUˆØ·¤æÚUmæÚUæ çß çÖ‹Ù çßÏæ×ð ·¤Ü× ¿Üæ¥æðÜ Áæ° Üæ»ÜÐ ¥§ â‹ÎÖü×ð âæÏÙ ¥æ Ÿæðýæðˆæ·¤ çãUâæÕð¡ ·¤çßÌæ, »èÌ, »ÁÜ, ·¤Íæ, ©UÂ‹Øæâ, ÙæÅU·¤, âæÿææˆ·¤æÚU ¥æçÎ ÿæð˜æ×ð â‹ÌæðáÁÙ·¤ ·¤æÁ ÖðÜÐ °•ãUÚU ¥æçÕ·¤ ¥ÙéßæÎ·¤ ÿæð˜æ×ð âðãUæð ç·¤ÀéU ·¤æÁ ÖðÜñ·¤ ¥çÀUÐ ×éÎæ çÙÕ‹Ï, â×æÜæð¿Ùæ, â¢S×ÚUæ‡æ ¥æçÎ çßÏæ×ð ·¤Ü× ¿Üõçã¤æÚU·¤ â¢•Øæ àæê‹ØÂýæØ¥çÀU, Áð ÙðÂæÜ×ð ×ñçÍÜè âæçãUˆØ·¤ â×Ö çß·¤æâ×ð »çÌÚUæðÏ ©UˆÂ‹Ù ·¤ÚñUÌâÙ ÕéÛææ§UÌ ¥çÀUÐ

शाह-वंशक उदयपश्चात नेपालमे मैथिली साहित्यक अस्त जकाँ भ गेल। अथवा कही जे मैथिली सुषुप्त अवस्थामे पड़ि रहल। अति शीतप्रदेश, जाइठामक जमीन प्राय: छओ मासधरि हिमाच्छादित रहैछ, तेहन ठाममे गहूमक खेती लेल बीया त आसिनेमे छिटाइत छैक, मुदा जखने खेतमे कनेक हरियरी देखाइत छैक कि ता कातिक-अगहन चलि अबैछ आ भरिडाँड़ बर्फतर झँपा जाइछ गहूम। बैशाखमे जखन रौदमे कने तेजी अबैत छैक त बर्फ पघलिक' बहि जाइछ आ फेर दू मासक भितरे गहूम अपन पूर्ण विकास करैत पाकिक' तैयार भ जाइत छैक। सन् 1950सँ पूर्वक मैथिलीक स्थितिके बर्फसँ झँपाएल गहूमक स्थिति कहल जा सकैए। अइबीच मैथिली साहित्यमे कोनो उल्लेखनीय काज हेबाक सूचना उपलब्ध नै अछि, तेँ अइ कालके मैथिली साहित्यक शून्यकाल कहल जाइत अछि। मैथिलीक अइ शीतकालक बर्फके गलाब' बैशाखक रौद बनिक' भारतीय राज्य बिहारक मधुबनी जिलाअन्तर्गत इसहपुर गामसँ प्राचीन मिथिलाक राजधानी जनकपुरधाममे पं. जीवनाथ झाक पदार्पण भेलनि। आइसँ करीब पाँच दशक पूर्व हुनके प्रयत्नसँ साहित्यप्रेमीसबहक एकटा समिति बनल छल, जकरा समालोचकसब 'जीवनाथ झा स्कूल'क नाम द देने छथि। अइ समूहक साहित्यकारसबद्वारा रचना प्रारम्भ भेलाक बाद पुन: रहल-सहल कसरि हटेबा लेल जेठक रौद बनि जनकपुर क्याम्पसमे अध्यापनार्थ एलथि- डा. धीरेन्द्र। आ नेपालक मैथिली साहित्य हिमक्षेत्रक गहूमक बालि जेना जेठमे लहलहा उठैछ, तहिना लहलहा उठल।

ई क्रम आगा बढ़ल आ विभिन्न साहित्यकारद्वारा विभिन्न विधामे कलम चलाओल जाए लागल। अइ सन्दर्भमे साधन आ श्रोतक हिसाबेँ कविता, गीत, गजल, कथा, उपन्यास, नाटक, साक्षात्कार आदि क्षेत्रमे सन्तोषजनक काज भेल। एम्हर आबिक' अनुवादक क्षेत्रमे सेहो किछु काज भेलैक अछि। मुदा निबन्ध, समालोचना, संस्मरण आदि विधामे कलम चलौनिहारक संख्या शून्यप्राय: अछि, जे नेपालमे मैथिली साहित्यक समग्र विकासमे गतिरोध उत्पन्न करैतसन बुझाइत अछि।

आधुनिक कालक मैथिली साहित्यके सूक्ष्मरूपेँ देखलापर जे चित्रसब उपस्थित होइछ, ताइ आधारपर नेपालमे मैथिली साहित्यपर भेल काज आ कार्यकर्ताक निम्नानुसारक विवरण तैयार होइत अछि।

कविता :

आधुनिक कालमे ''जीवनाथ झा स्कूल'' शुरू भेलाक बाद मूलत: कविते क्षेत्रमे काज भेल देखाइत अछि। अइ अन्तर्गत पं. जीवनाथ झा, पं. श्रीकृष्ण मिश्र, सुन्दर झा 'शास्त्री',



नवोनाथ झा कविता लेखनमे आगा आएल रहथि। अही समयमे पं. मथुरानन्द चौधरी 'माथुर', स्व. पं. रमाकान्त झा, स्व. मुंशी राधाकान्त दास, पं. सुरेश झा, अनन्तबिहारी लालदास 'इन्दु' अपन-अपन क्षेत्रसँ कविकर्मके जारी रखलनि। ई कविसब सन् 1960सँ पूर्वेसँ नेपालमे कविताक खेती शुरू क देने रहथि। अइ वर्गक कविसबमे पं. जीवनाथ झाक **रावणबध** महाकाव्य आ **कल्पना** कवितासंग्रह, पं. मथुरानन्द चौधरी 'माथुर'क **कानन कन्या** महाकाव्य तथा **त्रिशूली, कृषक** आ **मूस-महिमा** खण्डकाव्य, सुरेश झाक **मैथिली रसकलश काव्य**, अनन्तबिहारी लालदास 'इन्दु'क **तीन सप्तक** गीतसंग्रह एवं रमाकान्त झाक **व्यथा** खण्डकाव्य प्रकाशित अछि।

वस्तुत: पं. जीवनाथ झाक समय अर्थात 1960सँ पूर्वक काव्य गतिविधिके देखलापर स्पष्ट होइत अछि जे ओ गतिविधि नेपालमे मैथिली काव्य-परम्पराके जियौनेभरि छल। ओइमे पर्याप्त गति नै रहैक। ई गति एलैक डा. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क नेपाल आगमनपश्चात। पं. जीवनाथ झाद्वारा कोनोतरहेँ चलबायोग्य बाट बनाओल गेल मैथिली कविताके सरल, सुगम, समय-सापेक्ष एवं विस्तृत बनेबाक काज डा. धीरेन्द्र केलनि। एकरा बाद अपन लेखनसँ मैथिली कविता-भंडार भरनिहार कविलोकनिमे स्व. डा. लक्ष्मण शास्त्री, स्व. कृष्णप्रसाद उपाध्याय, स्व. यदुवंश लाल 'चन्द्र', मुक्तिनाथ मिश्र, अवधकुमार दास 'उमंग', पं. योगेश्वर झा, पं. सूर्यकान्त झा, कालीकान्त झा, स्व. निर्भयशंकर लाल, योगनारायण कन्हैया, डा. राजेन्द्र विमल, स्व. भुवनेश्वर पाथेय, भोलानाथ झा 'धूमकेतु', रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन', पं. शुभनारायण झा, रामनारायण सुधाकर, अयोध्यानाथ चौधरी, कुँवरकान्त, चन्द्रशेखर लाल 'शेखर', महेन्द्र मलंगिया, रामभद्र, उदयकान्त ठाकुर, रामप्रसाद सिरज, योगेन्द्र नेपाली, ओमकुमार झा, रूद्रनारायण झा, राजेश्वर नेपाली, लोकेश्वर व्यथित, रेवतीरमण लाल, मनु ब्राजाकी, सुरेन्द्र लाभ, विनोदचन्द्र, उपाध्याय भूषण, दिगम्बर झा 'दिनमणि', गोपाल झा, गंगाप्रसाद 'अकेला', जीतेन्द्र जीत, रामनारायण देव, नरेश ठाकुर, रामचन्द्र 'रमण', रामचन्द्र झा, शीतल झा, जे.एन. जिज्ञासु, पं. नित्यानन्द मिश्र, सीताराम प्रकाश, कृष्णचन्द्र मिश्र के.सी., रमेश रंजन, धर्मेन्द्र विह्वल, हिमांशु चौधरी, सुनीलकुमार मल्लिक, महेन्द्र मण्डल, नथमल अग्रवाल, नीरज कर्ण, विपिनकुमार साह, अम्बुज कर्ण, राजकुमार यादव, वृशेषचन्द्र लाल, अरुणकुमार मिश्र, विनोदानन्द, ललन, विनयकुमार झा 'राही', बलिराम साह आदि पुरानसँ ल नव पीढ़ीक सैकड़ो कवि छथि। कवयित्रीसबहक संख्या बड़ कम देखबामे अबैछ। ताहूमे खास सक्रियता एकोगोटेमे देखबामे नै अबैछ। ई कवयित्रिसब छथि-श्रीमती वीणा विमल, सरस्वती कापड़ि, कुसुमलता कर्ण, सरस्वती चौधरी 'रचना', रूपा धीरू, रेखा कर्ण, साधना मिश्र आदि। महिला कविकर्मीसबमे अपन कवितासबके पुस्तकाकार रूप देबाक साहस मात्र एक्केगोटे केने छथि आ ओ छथि- सुश्री यमुना राय। एकटा गैरमैथिल रहितो मैथिलीमे अपन कवितासंग्रह तोरे छवि प्रकाशित करौनिहारि सुश्री रायक प्रयास मैथिल नारीक लेल एकटा अनुकरणीय काज थिक।

कविक संख्या गनतीक लेल पर्याप्त होइतो विशेष सक्रिय रूपमे कविकर्ममे संलग्न व्यक्तिक संख्या सन्तोषजनक नै अछि। पत्रपत्रिका आ अन्य तरहक प्रकाशनक अभाव एकर कारण भ सकैत अछि। तथापि अइ कठिनाइके पार करैत डा. धीरेन्द्रक **हँगरमे टांगल कोट** कवितासंग्रह आ महाकाव्य **त्रिपुण्ड**, स्व. लक्ष्मणक शास्त्रीक महाकाव्य **धर्मराज युधिष्ठिर**, स्व. पाथेयक कवितासंग्रह **पघलैत बरफ**, भ्रमरक कवितासंग्रह **बन्न कोठरी औनाइत धुआँ, अप्पन अनचिन्हार, लाबाक धान** (सम्पादित), दीर्घ कविता **नहि आब नहि**, उपाध्याय भूषणक कवितासंग्रह **भूषण भारती**, विनोदचन्द्रक खण्डकाव्य **कृषकवाला**, अयोध्यानाथ चौधरीक कवितासंग्रह **क्षितिजक ओहिपार**, पं. दामोदर झाक कवितासंग्रह **आत्मज्ञान** आ खण्डकाव्य **सीता स्वयंवर**, पं. शुभनारायण झाक कवितासंग्रह **यंत्रणा**, रामेश्वर आर्यालक कवितासंग्रह **शिवमधुक भाग्यरेखा**, यदुवंश लाल 'चन्द्र'क त्रैभासिक कवितासंग्रह

गुड़खिचरी, पं. महाकान्त झा 'कुसुम'क कवितासंग्रह **कुसुम रचनावली**, शेखरक कवितासंग्रह **हम नेपाली हम नेपाल**, धर्मेन्द्र विह्वलक कवितासंग्रह **रस्ता तकैत जिनगी**, महेन्द्र मलंगियाक सम्पादनमे मिथिला नाट्यकला परिषदसँ प्रकाशित कवितासंग्रह **विदेहक नगरीसँ** आदि पोथी प्रकाशित अछि।

गीत-गजलक क्षेत्रमे इन्दुक तीन सप्तकपश्चात डा. धीरेन्द्रक **करुणा भरल ई गीत हम्मर** आ भ्रमरक **मोमक पघलैत अधर** मात्र पोथीक रूपमे पाओल जाइत अछि। ओना भ्रमरक **अप्पन अनचिन्हार**मे किछु गीत-गजल सेहो समाविष्ट छनि, मुदा स्वतंत्र अस्तित्वाभावक कारणे ई कवितेक श्रेणीमे पड़ि जाइत अछि। एम्हर मिथिला नाट्यकला परिषदद्वारा छपेबाक निर्णय कएल गेल- गीतसंग्रह, जाइमे सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रक गीतकारसबहक विशिष्ट गीतसब संकलित अछि- **गीतरश्मि** तथा धीरेन्द्र प्रेमर्षिक गीतसंग्रह कोन सुर सजाबी? प्रकाशन हेतु पूर्णरूपसँ तैयार अछि। अहिना सुरेन्द्र प्रभातक करीब 2-3 साल पूर्वेसँ एकटा गजलसंग्रहक पाण्डुलिपि तैयार छनि, जे जँ प्रकाशित भ जाए त नेपालसँ मैथिलीक पहिल स्वतंत्र गजलसंग्रह हएत।

गेयात्मक धर्मक निर्वाह करैत भाव-सघनता द शब्द-विन्यासमे पारंगत गीत-गजलकारमे डा. राजेन्द्र विमलक विशिष्ट स्थान छनि। अन्यान्यो विधामे ई सिद्धस्त त छथिए-गीत-गजलमे हिनका महारत हासिल छनि। गीतके कलमसँ गौनिहार दिगम्बर झा 'दिनमणि' पत्रपत्रिका मार्फत कमो रहैत स्वयं अपन तथा सुनील मल्लिक सदृश गायकक कण्ठद्वारा गीतप्रेमीसबहक हृदयमे अपन विशिष्ट स्थान बना चुकल छथि। दिवाकर झा 'नवल', सतीशचन्द्र 'सजल', श्याम शशि, योगेन्द्र नेपाली, रमेश रंजन, नित्यानन्द मिश्र, रोशन जनकपुरी आदि मैथिली गीत-गजल संसारक अन्य जाज्वल्यमान नक्षत्र थिकाह।

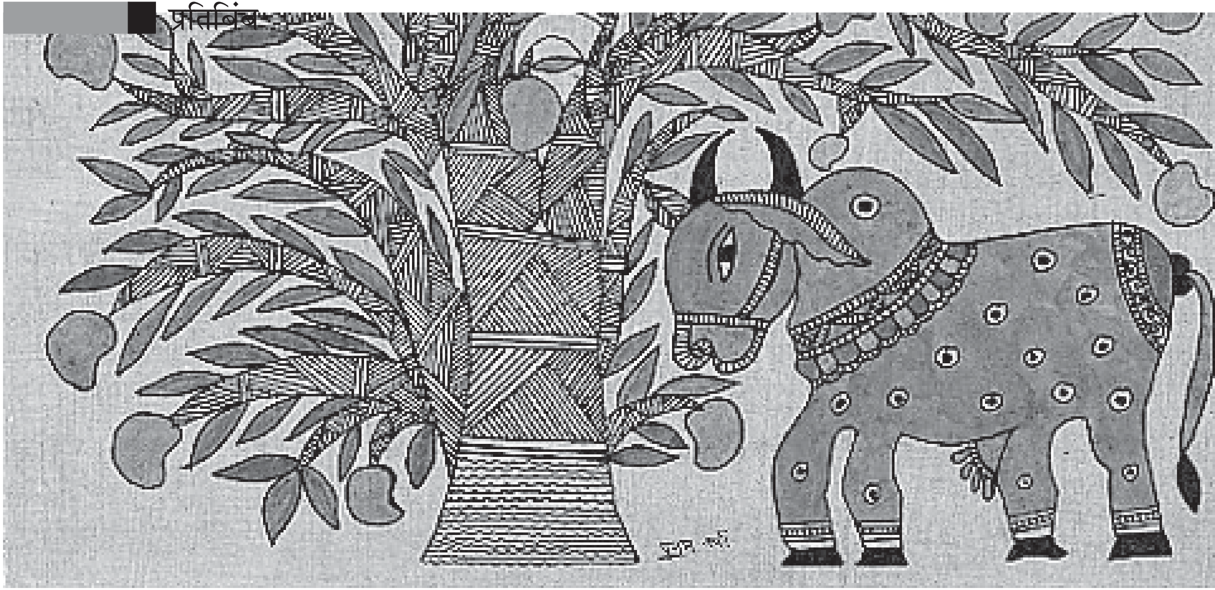
काव्यविधा अन्तर्गत अखनो जे विशेषरूपेँ सक्रिय छथि आ जिनकासँ मैथिली साहित्य किछु आस क सकैत अछि, सेसब छथि- डा. राजेन्द्र विमल, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', रेवतीरमण लाल, अयोध्यानाथ चौधरी, चन्द्रशेखर लाल 'शेखर', दिगम्बर झा 'दिनमणि', धीरेन्द्र प्रेमर्षि, हिमांशु चौधरी, धर्मेन्द्र विह्वल, रमेश रंजन, श्यामसुन्दर राशि, रोशन जनकपुरी, अरुणकुमार मिश्र आदि।

·¤Ç¿æ-©UÂ«Øæâ·¤ ÿæð˜æ Â¢. ÁèßÙæÍæð Ûææ·¤ â×Ø×ð
©UÂðçÿæÌð ÚUãUÜÐ ÕçË·¤ §ü ·¤ãUè Áð §Ç â×Ø·¤
âæçãUØ·¤æÚUÜæð·¤çÙ ×ñçÍÜè âæçãUØ·¤ð ÂýçÌcÆUæçÂÌ
·¤ÚUÕæ·¤ ×æŠØ× Âl·¤ð ÕÙõÙð ÚUãUçÍ, Ìð¡ ¥‹Ø çߊææçÎâ
¥æðâÕ ŠØæÙ Ùñ Î â·¤ÜæãUÐ ÌÍæçÂ Â¿æâ·¤ Îàæ·¤×ð
Â¢. âé‹ÎÚU Ûææ ÒàææS˜æèÓ·¤ °·¤ÅUæ ·¤Íæ °¹Ù÷ Õæ¹æǸè
ÙçãU È¤éÁÜñ ßñÎðãUè×ð ÀUÂÜ ÀUÜçÙ ¥æ ¥ãUè ·¤Íæ·¤ð
¥æÏéçÙ·¤ ·¤æÜ·¤ ÂçãUÜ ·¤Íæ ×æÙÜ Áæ§Ì ¥çÀUÐ
ÕæÎ×ð ÇUæ. ÏèÚð‹Îý·¤ ÙðÂæÜ ¥æ»×ÙÂà¿æÌ ¥ãéUÿæð˜æ×ð
çÙ·¤ÀéU ·¤æÁ ãUæðÕÓ Ü»Üñ ÐU ¥æðÙ ×æ˜æ ÏèÚð‹Îý·¤ Á¡ »Â
·¤ÚUè Ì ¥æð ×êÜÌÑ ·¤Íæ·¤æÚUð-©UÂ«Øæâ·¤æÚUð ÀUçÍÐ ×æ˜æ
ãéUÙ·¤ ¥ŒÂÙ ¥æ âÂæçÎÌ §Ç ÎéÙê çߊææ·¤ Âæð
Íè·¤ â¢Øæ·¤ ÕÚUæÕçÚU ÙðÂæÜâ¡ ×ñçÍÜè×ð Âý·¤æçàæÌ
¥‹Ø âÂêç‡æü ÃØç€Ì·¤ ·¤Íæ-©UÂ«Øæâ-·¤ëçÌ Ùñ ¥çÀUÐ

<u>**कथा-उपन्यास**</u> **:**

कथा-उपन्यासक क्षेत्र पं. जीवनाथो झाक समयमे उपेक्षिते रहल। बल्कि ई कही जे अइ समयक साहित्यकारलोकनि मैथिली साहित्यके प्रतिष्ठापित करबाक माध्यम पद्यके बनौने रहथि, तेँ अन्य विधादिस ओसब ध्यान नै द सकलाह। तथापि पचासक दशकमे पं. सुन्दर झा 'शास्त्री'क एकटा कथा **एखन् बखाड़ी नहि फुजलै** वैदेहीमे छपल छलनि आ अही कथाके आधुनिक कालक पहिल कथा मानल जाइत अछि। बादमे डा. धीरेन्द्रक नेपाल आगमनपश्चात अहुक्षेत्रमे किछु काज होब' लगलै। ओन मात्र धीरेन्द्रेक जँ गप्प करी त ओ मूलतः कथाकारे-उपन्यासकारे छथि। मात्र हुनक अप्पन आ सम्पादित अइ दुनू विधाक पोथीक संख्याक बराबरि नेपालसँ मैथिलीमे प्रकाशित अन्य सम्पूर्ण व्यक्तिक कथा-उपन्यास-कृति नै अछि। नेपालसँ सबसँ पहिने प्रकाशित उपन्यास कुँवरकान्तक सेहन्ता थिक। तकरा बाद विभिन्न समयमे डा. धीरेन्द्रक **भोरुकवा, कादो आ कोइला**, तथा **ठुमकि बहू कमला** प्रकाशित भेलनि। अन्य प्रकाशित उपन्यास अछि- श्रीमती श्यामा झाक **बिनु माइक बेटी** आ डा. अरुणकुमार झाक **मर्सिनी**। कथादिस डा. धीरेन्द्रक **पझाइत घूरक अगि, कुहेस आ किरण, शतरूपा** आ **मनु, आ नव-मन्दिर**; धूमकेतुक **अगुरवान**, रामभरोस कापड़िक **तोरा संगे जएबौ रे कुजबा**; रेवतीरमण लालक **माधव नहि अएला मधुपुरसँ** तथा प्रदीप बिहारीक **औतीह कमला जयतीह कमला प्रकाशित अछि।**

संग्रहक अतिरिक्त किछु लेखकसबहक विभिन्न पत्रपत्रिकामें छपल त कम्मे कथा छनि, मुदा वैह कथासब हुनकासबके कालजयी बना देने छनि। अइ श्रेणीक कथाकार आ कथाक रूपमे रामभद्रक **एकटा ब्रह्माण्ड आओर, सीता माने नोर, प्रायश्चित**; डा. राजेन्द्र विमलक **मयूरपंखी गीतक रक्त, रामेझापक श्रणकुमार, शून्य आकाश, एकटा धधकैत भविष्य**; स्व. भुवनेश्वर पाथेयक **फूटल चूड़ी कनैत सीथ, अतीतक टुकड़ी**; राजेन्द्रकिशोरक चोट;



रामनारायण सुधाकरक **दीयरि, छाहरिक तरक काँट, पुतरीवला हाथ** आदिक नाम अबैत अछि। नेपालक मैथिली साहित्यके सुरेन्द्र लाभ, जीतेन्द्र जीत, उपाध्याय भूषण, विजय, मिनाक्षी ठाकुर, रामचन्द्र झा, श्यामसुन्दर शशि, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, योगेन्द्र नेपाली, रमेश रंजन, गंगाप्रसाद अकेला, नवीनचन्द्र, बदरीनारायण वर्मा, विनोदचन्द्र, ललन आदि कथाक माध्यमे समृद्ध बनेबाक कार्यमे जुटल छिथ। विभिन्न कथाकारक कथाके ल क डा. धीरेन्द्रद्वारा नेपालक प्रतिनिधि मैथिली गल्प आ सुरेन्द्र लाभद्वारा **नेपालीय मैथिलीक उत्कृष्ट** गल्प सम्पादित भ प्रकाशित भेल अछि, जे किछु नीक कथा देबाक अतिरिक्त कथाकृतिक संख्यामे दूटाक वृद्धि क देलक अछि।

नाटक :

नाटक विधामे एकमात्र व्यक्ति जे मूलरूपसँ नाटकेमे समर्पित छथि, ओ थिकाह–महेन्द्र मलंगिया। श्री मलंगियाक परतर कर'वला नाटककार सम्प्रति नेपालक मिथिला क्षेत्रमे मात्र नै भ सम्पूर्ण मिथिलामे क्यो नै देखबामे अबैछ। हिनक बेजोड़ नाटकेसबहक कारणे हिनका मैथिलीक शेक्सपीयर कहल जाइत छनि। श्री मलंगियाक **ओकरा आङनक बारहमासा** बैदेही पुरस्कारसँ सम्मानित छनि। हिनकाद्वारा लिखित नाटकसब अनेक राष्ट्रिय–अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य–प्रतियोगितामे सम्मिलित भ प्रशस्त ख्याति आ पुरस्कारादि प्राप्त क चुकल अछि। **लक्ष्मणरेखा खण्डित, एक कमल नोरमे, कमला कातक राम–लक्ष्मण आ सीता, जूआएल कनकनी, काठक लोक, गाम नइं सुतैए** आदि हिनक अन्य प्रकाशित नाट्यकृति छियनि। श्री मलंगियाक टूटल **तागक एकटा ओर** एकांकीसंग्रह प्रकाशित छनि तथा विभिन्न पत्रपत्रिकामे अनेको एकांकी छपल छनि। **पूस जाड़ कि माघ जाड़** आ **ओरिजनल काम** हिनक लेखनक पछिला नाटकसब छियनि, जे ठाम–ठाम प्रदर्शित भ बेस चर्चित भेल अछि आ भ रहल अछि। श्री मलंगियाके नेपालक नाट्यक्षेत्रमे विशिष्ट योगदान देनिहारके प्रदान कएल जाएवला सर्वनाम पुरस्कार सेहो 2051 सालक प्राप्त भेलनि अछि।

मलंगियासँ पूर्वक नाटकक इतिहासमे झाँकलापर पं. जीवनाथ झाक **कल्पनाक वेणुनाद, नरेन्द्र–विजय, दुर्गा–विजय** तथा पं. वासुदेव ठाकुरक **भगवान सत्यनारायण** आ **सामा–चकेवा** नाटक एवं डा. लक्ष्मण शास्त्रीक **धीकताम** आ डा. धीरेन्द्रक **काललेख** गीतिनाटकक उल्लेख पाओल जाइत छैक।

श्री मलंगियाक बाद रामभरोस कापड़ि '**भ्रमर**' किछु सक्रिय नाटककारक रूपमे अभरैत छथि, जिनक **एकटा आओर वसन्त** नाटक प्रदर्शित तथा पुरस्कृत भेल छनि। कुमार अभिनन्दनक **रानी चन्द्रावती** सेहो नाटकक चर्चा चललापर गना जाइत छैक। विभिन्न पत्रपत्रिकामे श्री भ्रमरक एकांकीसब **यजमान, भरल खत्ताक मरम, नेताजी आबिरहल छथि** प्रकाशित छनि। एकांकीक क्षेत्रमे डा. धीरेन्द्रक **राजा शिवसिंह** आ **परम्परा** तथा कुमार अभिनन्दनक **महासमुद्रक** सेहो चर्चा अबैत छैक। सुरेन्द्र लाभक चौबटिया नाटक–**बताह जनता** प्रकाशित छनि त एकटा अन्य चौबटिया नाटक **नेताजीमत मांग' आबिरहल छथिक** पाण्डुलिपि अइ लेखकलग सुरक्षित अछि। नाटकक लुप्तप्राय: होइत जा रहल शैली नौटंकीके जिएबाक प्रयास केलनि अछि–डा. राजेन्द्र विमल, अपन **नौटंकी चलिरहल अछि** नौटंकीसँ। हिनकासबहक अतिरिक्त रेवतीरमण लाल, श्यामसुन्दर शशि, सुदर्शन लाल, रमेश रंजनसन किछु साहित्यकारक विषयमे सेहो सूचना अछि जे ओलोकनि नाट्यलेखनपर काज केलनिहें,जे प्राय: मञ्चोधरि पहुँचि चुकल अछि।

अन्य : बात उपरेआबि चुकल अछि जे समालोचना, निबन्ध आदि क्षेत्रमे नेपालक मैथिली साहित्यमे बड़ कम काज भेलैए। अइ विधामे प्रो. ब्रजकिशोर ठाकुरक **अध्ययन ओ विवेचन** तथा डा. प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन'क **नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास** प्रकाशित अछि। डा. युगेश्वर वर्मा, श्रीकृष्ण मिश्र, डा. हरिदेव मिश्र, डा. कृष्णचन्द्र मिश्र, डा. धीरेन्द्र, डा. राजेन्द्र विमल, पं.

कृष्णेश्वर मिश्र, स्वयंभूलाल श्रेष्ठ, सुरेन्द्र देव 'सुमन', डा. योगेन्द्रप्रसाद यादव, डा. रामावतार यादव, डा. रामदयाल राकेश, प्रो. ताराकान्त झा, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', प्रो. गणेशलाल कर्ण, प्रो. उपेन्द्रप्रसाद कमल, प्रो. वैद्यनाथ झा, डा. लक्ष्मण शास्त्री आदि अइ क्षेत्रमे काज केनिहार किछु महत्वपूर्ण व्यक्ति छथि।

अन्तरवार्ताक क्षेत्रमे डा. रेवतीरमण लालक **साक्षात्कार** प्रकाशित छनि आ यैह प्रकाशन हुनका अइ क्षेत्रमे एकाधिकार स्थापित करबा देलकनि अछि।

अनुवादक क्षेत्रमे एम्हर आबिक' विशेष ठोस नहियों त अधिक काज अवश्य भेलैक अछि। मुदा किछु महत्वपूर्ण अनुवाद जे भेल अछि से थिक- डा. धीरेन्द्रद्वारा कएल गेल खैय्यामक कविताक अनुवाद **खैय्यामक संसार**, सुन्दरझा 'शास्त्री'द्वारा कएल गेल **रत्नावली नाटिका** आ **मुना मदनक** मैथिली अनुवाद, कृष्णप्रसाद उपाध्यायद्वारा कएल गेल **विद्यापति पदावली** आ डा. रामदयाल राकेशद्वारा कएल गेल **मैथिली संस्कार** गीतक नेपाली अनुवाद, सूर्यकान्त झाद्वारा कएल गेल **मेघदूतक** मैथिली अनुवाद, स्व. यदुवंश लाल 'चन्द्र'द्वारा कएल गेल **उसैको लागि** आ **फेरि उसैको लागिक** मैथिली अनुवाद, धीरेन्द्र प्रेमर्षिद्वारा कएल गेल **स्वप्नकथा** जारी छक मैथिली अनुवाद, बदरीनारायण वर्माद्वारा कएल गेल **भानुभक्तीय रामायण, गीताञ्जलि** आ **चाँदनी शाहक कविता**, डा.रामदयाल राकेशद्वारा कएल गेल **सात जापानी कथा** तथा **थाई सांस्कृतिक परम्परा**, लोकेश्वर व्यथितद्वारा कएल गेल **चाँदनी शाहक** गीत, इन्दुद्वारा कएल गेल **उसैको लागि**क मैथिली अनुवाद आदि। अइ क्षेत्रमे डा. विमल, श्री भरमर, मनु ब्राजाकी, रमेश रंजन, प्रभावती मिश्र, धर्मेन्द्र विह्वल, रूपा धीरू आदि सेहो नीक योगदान द रहल छथि।

नेपालमे मैथिलीक क्षेत्रमे काज केनिहारक लेल पुरस्कारादिक व्यवस्था नै छल, मुदा हालहिमे श्री उदयकान्त झा अपन मातापिताक नामपर **वैद्यनाथ-सियादेवी मैथिली पुरस्कार**क स्थापना क ई शून्यता समाप्त क देलनि अछि। पहिल बेर ई पुरस्कार डा. धीरेन्द्रके प्रदान करबाक निर्णय कएल गेल अछि।

पत्रपत्रिका

नेपालक पहिल मैथिली पत्रिका सुन्दर झा 'शास्त्री'द्वारा सम्पादित **फूलपात** थिक, जे 2025 सालमे काठमाण्डूसँ प्रकाशित भेनाइ शुरू भ अखनोधरि जनकपुरधामसँ बहराइएरहल अछि, तेँ **फूलपात**के नेपालक सबसँ जेठ मैथिली पत्रिका सेहो कहल जा सकैए। ओना 2014हे सालक आसपासमे जनकपुरधामसँ त्रैमासिक पत्रिका **नवजागरण**क एकटा अंक बहार भेल छल, जकर मैथिली पक्षक सम्पादक नवोनाथ झा छलाह।

एकरा बाद 2027 सालमे विराटनगरसँ **मैथिली** तथा काठमाण्डूसँ **इजोत** प्रकाशित भेल। सम्वत 2030 सालमे जनकपुरधामसँ **अर्चना**क प्रकाशन रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क सम्पादनमे शुरू भेल, जे दोगादोगी अखनो बहार भ जाइए। 2037 सालमे काठमाण्डूसँ **सनेस** राजविराजसँ **वाणी** आ भद्रपुरसँ **हिलकोर**क प्रकाशन प्रारम्भ भेल। ई पत्रिकासब एकाध अंक निकलिक' कान्ह झाँकि देलक।

2046/047 सालदिस नेपालमे मैथिली पत्रपत्रिका किछु आस बन्हाब'वला हिसाबसँ मैदानमे उतरल। 2040 सालमे जनमिक' विज्ञापन-पत्रिकाक रूपमे जीवित जनक द्वैमासिक पत्रिकाके 2046 सालमे अतिथि सम्पादकक पदभार ग्रहण क स्वर्गीय भुवनेश्वर पाथेय एकटा नव स्वरूप देलनि। तीन अंकधरि ई बड़ नीक जकाँ निकलैत रहल। पछाति राजनीतिक परिवर्तन एकर अवसानक कारण बनि गेल। मुदा अइसँ स्वर्गीय पाथेय विचलित नै भेलथि आ स्वतंत्ररूपेँ **संकेत** नामक समसामयिक संकलन वार्षिक रूपसँ प्रकाशित केनाइ प्रारम्भ केलनि। **संकेत**क एक्केटा अंक निकलि सकल छल- 2047 सालमे आ पाथेयक जीवन-पाथेय निंघटि गेलनि 2048 साल आसिन 8 गते। आ एकरा संगहि मैथिली पत्रिका प्रकाशनप्रतिक एकटा सशक्त प्रतिबद्धताक अवसान भ गेल। छियालिसे सालमे श्री भ्रमर एकटा साहित्यिक द्वैमासिक **आँजुरक** प्रकाशन सेहो जनकपुरधामसँ प्रारम्भ केलनि। **आँजुर** अपना समयमे नियमितताक लेल बेस उल्लेखनीय रहल, मुदा तीनिए-चारि वर्षक यात्रामे इहो लोथ भ क लुढ़ द बैस रहल।

प्रजातंत्रप्राप्तिक तुरन्त बादक समय छल- 2047 साल। अही समयमे विराटनगरसँ जीतेन्द्र जीत फोल्डर पत्रिका **कमला** आ रा. ना. सुधाकर, बदरीनारायण वर्मा तथा विनोदचन्द्रसँ मिलक' **प्रभात** त्रैमासिकक



सम्पादन-प्रकाशन केलनि, जाइमध्य **कमला**क पहिले अंक अन्तिम सिद्ध भेल आ प्रभात दू वर्ष बाद पुन: एक अंक निकलिक' पूर्णविराम ल लेलक।

काठमाण्डूस्थित अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषद सेहो 2047 सालमे **मैथिली जगत** नामसँ त्रैमासिक पत्रिकाक प्रकाशन केलक, मुदा इहो पत्रिका एक अंकसँ आगा नै घुसकि सकल। एकरा बाद मिथिला सांस्कृतिक केन्द्र जनकपुरधामसँ **सांस्कृतिकी** नामक पत्रिका बहराएल, जकर पहिले अंक अंतिम सावित भेल।

ऊपर उल्लिखित पत्रिकासब प्राय: साहित्यिक छल। समाचारपत्रक रूपमे 2039 सालसँ भ्रमरक सम्पादनमे **गामघर** साप्ताहिक जनकपुरधामसँ तथा रामरिझन यादवक सम्पादनमे विराटनगरसँ **मिथिला टाइम्स** पाक्षिक 2048 सँ प्रारम्भ भेल। **गामघर** लगभग 4-5 सए अंकधरि अपनाके परोसि अखनो भगजोगनी जकाँ अपन अस्तित्वके जोगौनहि अछि, मुदा **मिथिला टाइम्स** किछुए अंकक बाद टैं बाजि गेल। अइ पत्रिकासबहक अवसान तथा सुस्ती-मन्दीक बाद नेपालमे मैथिली पत्रपत्रिकाजगत शून्य जकाँ भ गेल। तकरा बाद भ सकैछ मात्र मैथिली पत्रिकाक अस्तित्वके बचौने रहबाक उद्देश्यसँ होइ, मैथिलीप्रेमीसबद्वारा लघुपत्रिकाक परिकल्पना क एकरा कार्यक्षेत्रमे आगा बढ़ाओल गेल। अइ क्रममे काठमाण्डुस्थित नेपाल मैथिल समाज मूलत: समाजक गतिविधि आ किछु अन्य सामग्री द क त्रैमासिक रूपैँ 2049 सालसँ बुलेटिन प्रकाशित केनाइ शुरू केलक। चारि पृष्ठसँ शुरू भेल समाजक बुलेटिन अपन क्षमताके बढ़बैत अइ दू वर्षमे सोलह पृष्ठक भ गेलैक अछि। अइसँ सम्बन्धित व्यक्तिसबहक अनुसार एकरा आब एकटा सम्पूर्ण पत्रिका बनेबाक दिशामे विचार भ रहलैए।

2050 सालधरि अबैत-अबैत साहित्यिक पत्रिका समाप्ते जकाँ भ गेल छल नेपालमे। अइ अभावके दृष्टिगत क मैथिली विकास-मञ्चद्वारा काठमाण्डूसँ **पल्लव** साहित्यिक मासिक हवाइपत्रिकाक प्रकाशन धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सम्पादनमे प्रारम्भ भेल। मितव्ययिताक उत्कृष्ट नमूनाक रूपमे बहार भ रहल **पल्लव**क लघुआकारमे छोटछोट अक्षरक बहुतरासे रचनासबहक कलात्मक रूपमे संयोजन रहैत छैक आ एकर प्रसार मूलत: डाकद्वारा कएल जा रहल छैक। विगत डेढ़ वर्षसँ नियमितरूपमे प्रकाशित भ रहल ई पत्रिका मैथिलीप्रेमीक साहित्यिक भूखमे जलथम्मनक काज करैत आएल अछि।

अही सालक अन्तसँ नेपालक मैथिली क्षेत्रमे सर्वाधिक काज केनिहार तथा सक्षम **संस्था** मिथिला नाट्यकला परिषद, जनकपुरधामसँ **मिथिलावाणी** नामक त्रैमासिक पत्रिकाक चारि अंक नियमित रूपैँ निकलि चुकल अछि। रमेश रंजन, श्यामसुन्दर शशि आ अवधेश पोखरेलक सम्पादनमे निकलिरहल ई पत्रिका एकटा पूर्ण पत्रिका कहेबाक क्षमता रखैत अछि आ मिनापसन सक्षम संस्थाक अंग भेलाक कारणे दिर्घजीवी हेबाक आस सेहो बन्हबैत अछि।

जनकपुरधामेसँ किशोरसबहक एकटा समूहक सक्रियतामे संचालित संस्था मैथिली विकास परिषदद्वारा प्रकाशित **संभावना** नामक मासिक मुखपत्र सेहो नामे गनेबाटालए मात्र नै, उपयोगिताक दृष्टिएँ सेहो एकटा सार्थक डेग थिक। अनिल विश्वबन्धु आ शैलेन्द्र अभिलाषीक सम्पादकत्वमे प्रकाशित भ रहल ई पत्रिका जँ किशोरेसबहक रूचिपर केन्द्रित रहए त आर उपयोगी भ सकैत अछि।

ओना पत्रिकाक चर्चा एलापर मैथिली विकास-मञ्चद्वारा काठमाण्डूसँ नथमल अग्रवाल आ नीरज कर्णक सम्पादनमे प्रकाशित भितहीपत्रिका **अन्तिम शनि** आ अभियानद्वारा जनकपुरधामसँ सुरेन्द्र लाभक सम्पादनमे प्रकाशित पोष्टरपत्रिका **धधरा**क उल्लेख सेहो आवश्यक भ जाइत अछि. **अन्तिम शनि** मासिकरूपैँ सात अंकधरि बहराएल आ **धधरा** दुइए अंकक बाद खढ़क धधरा सावित भ गेल। अहीबीच वीरगंजसँ माउण्ट एडमण्ड मा.वि. नेपाली, मैथिली आ भोजपुरी भाषाक रचनासभ प्रयोग क क **नव पल्लव** नामक त्रैमासिक पत्रिकाक प्रकाशन प्रारम्भ केलक अछि, जकर मैथिली पक्षक सम्पादक चन्द्रकिशोर झा छथि। अहिना मैथिली साहित्य परिषद, वीरगंज सेहो पुछारि नामसँ अपन मुखपत्रक प्रकाशन शुरू केलक अछि। जनकपुरधामसँ उपेन्द्र लाभक सम्पादकत्वमे **मिथिलाञ्चल** नामक पत्रिका बहार भेल अछि।

समष्टिगत रूपमे नेपालमे मैथिली पत्रपत्रिकाक अतीतमे झाँकलापर त निराशाक अतिरिक्त किछु नै हाथ लगैत छैक, मुदा वर्तमानके देखलापर बुझाइछ जे यैह एकर भविष्य थिक।

संस्थासबहक भूमिका

नेपालमे मैथिलीक संस्थाक रूपमे सबसँ पहिने आइसँ सत्ताइस वर्ष पूर्व काठमाण्डूमे **अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषद**क स्थापना भेल। परिषदक स्थापनाक किछुए समय बाद एकर शाखासब जनकपुरधाम, राजविराज, विराटनगर, लहान, वीरगंज आदि स्थानपर स्थापित भेल जे समय-क्रममे अपन-अपन स्वतंत्र अस्तित्व ग्रहण क लेलक। मैथिलीक प्रारम्भिक जनजागरण अभियानमे **मैथिली साहित्य परिषद**क महत्वपूर्ण योगदान अछि। मैथिलीक अग्रज पत्रिका **फूलपात**के जन्म देबाक श्रेय सेहो अ.ने.मै.सा.प.के जाइत छैक। विभिन्न समयमे विभिन्न चरण पार करैत ई संस्था विभिन्न तरहक काज करैत रहल, मुदा आपसी राजनीतिक कारणे अइमे खिचातानी विशेष बढ़ि गेल आ ई किछु सुषुप्त जकाँ भ गेल। प्रजातंत्रप्राप्तिक बाद एकबेर ई संस्था किछु करबाक प्रयत्न केलक। अइ अन्तर्गत **मैथिली जगत** पत्रिका तथा पं. सुरेश झाक **मिथिला महात्म्य** पोथीक प्रकाशन एवं जनकपुरधामसँ किछु कलाकारके बजाक काठमाण्डूमे टिकटपर कएल गेल मैथिली सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रदर्शन उल्लेखनीय रहल। ई काजसब 2047 सालक प्रारम्भिक अवस्थामे भेल। तकरा बाद श्यामसुन्दर गुप्ताक अध्यक्षतामे एकर पुनर्गठन भेल आ ई संस्था कुम्भकर्णी निंद्रामे सूतिरहल। आनठाम स्थापित मैथिली साहित्य परिषदमे वीरगंजक मैसाप अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय अछि। ओना आनो साहित्य परिषदसब टुघरि अवश्य रहल अछि।

ÙðÅæÜ×ð ÂýÁæÌ‹˜æ·¤ ÂéÙÕüãæÜèÂà¿æÌ ¥ÍæüÌ w®y| âæÜâ¡ ×ñçÍÜè â¢ƒæ-â¢SÍæÂ·¤ SÍæÂÙæ×ð ÕæçÉ¸ ÁU·¤æ¡ ¥æçÕ »ðÜÐ ¥§ ·ý¤××ð SÍæçÂÌ ÂýæÚUçÖ·¤ â¢SÍæ·¤ M¤Â×ð ×ñçÍÜè çß·¤æâ-×‹¿·ð¤ ÜðÜ Áæ â·ñ¤Ì ¥çÀ, Áð ×ñçÍÜè çß·¤æâ·¤ ÕëãÎ ·¤æØü·ý¤×·¤ â¢» ÇUæ. ÏèÚð‹Îý·¤ â¢ØôÁ·¤˜ß×ð ·é¤Ü vz »ôÅð·¤ âãÖæç»Ìæâ¡ ÁÙ·¤ÂéÚUÏæ××ð SÍæçÂÌ ÖðÜ ÀÜÐ ×éÎæ °·¤ÚU SÍæÂÙæ SÍæÂÙðÏçÚU âè×èÌ ÚUçã »ðÜÐ ¥ãèÕè¿ ×‹¿·¤ vz×ðâ¡ w âÎSØ âéÚðU‹Îý ÜæÖ ¥æ ÏèÚð‹Îý Âýð×çáü ÚUôÁ»æÚUè·¤ çâÜçâÜæ×ð ·¤æÆU×æ‡ÇêU °ÜæãU ¥æ °Ìõ ×ñçÍÜè çß·¤æâ-×‹¿·¤ ÙæU×â¡ °·¤ â¢SÍæ·¤ SÍæÂÙæ ·ð¤ÜçÙÐ

मैथिली क्षेत्रमे व्याप्त भगलपुरिया हिन्दी नाटकक एकछत्र राज्यके समाप्त क मैथिली नाटकक परम्परा बैसेबाक उद्देश्यसँ डा. धीरेन्द्रक सक्रियता तथा सुदर्शन लाल, योगेन्द्र नेपाली आदिक सह.भागितामे सम्वत 2036 सालमे **मिथिला नाट्यकला परिषद**क जनकपुरधाममे स्थापना भेल। बादमे नाटककार महेन्द्र मलंगियाक संलग्नतापश्चात ई संस्था नीक जकाँ उजिया उठल। तकरा बाद क्रमिक रूपमे रमेश रंजन, विष्णुकान्त मिश्र, सुनील मिश्र आदिक सहभागिता तथा मदन ठाकुर, रामअशीस ठाकुरसन कलाकारक सक्रियता बढ़लाक बाद ई संस्था नाट्यक्षेत्रमे विशिष्टताक चरमोत्कर्षपर पहुँचि गेल। समयक्रममे परिषद अपन कार्य क्षेत्रके मैथिली–साहित्यक विकासदिस सेहो विस्तृत केलक। नाटक क्षेत्रमे जँ एकदिस ई धनुषा जिल्लासँ हिन्दी नाटकक परम्पराके उखाड़िये जकाँ देलक तथा विभिन्न राष्ट्रिय–अन्तर्राष्ट्रिय नाटक–समारोहमे सहभागी भ विजयी आ प्रशंसित होति मैथिली आ जनकपुरक नामके आसमान चढ़बैत गेल त दोसरदिस साहित्यिको क्षेत्रमे 2047 सालभरि मासिक कविगोष्ठीक आयोजन क बहुतरासे नव कवि–साहित्यकारक उत्पादन तथा पुरान साहित्यकारक रचनामे रन्दा लगेबाक आ महेन्द्र मलंगियाक दुटा नाट्यकृति, विभिन्न कविक संकलन कविता–संग्रह एवं **मिथिलावाणी** त्रैमासिक पत्रिकाक एवं नियमित प्रकाशनसन महत्वपूर्ण काजसब केलक अछि।.... सांस्कृतिक कार्यक्रम स्थापनाकालेसँ करैत आएल अछि ई संस्था। अइमे सुनील मल्लिक, रामनारायण ठाकुर आदिक योगदान विशेष उल्लेखनीय अछि। आ समष्टिगत रूपमे उल्लेखनीय योगदान त छनि योगेन्द्र साह नेपालीक, जे संस्था–स्थापनाक किछुए समय बादसँ एकर अध्यक्ष भ निरन्तर परिषदके समृद्धिक बाटपर आगा बढ़बैत जा रहल छथि। मिनापक सर्वतोमुखी विकासक श्रेय बहुत हदधरि नाटक, साहित्यसँ ल व्यवस्थापनदिस सेहो ओतबे योगदान देनिहार रमेश रंजनके देने बिना सेहो नै रहल जा सकैए। नेपालमे अखनधरि खूजल पचासो मैथिली संस्थामे जँ यथार्थमे कोनो संस्था काज क रहल अछि त ओ थिक– **मिथिला नाट्यकला परिषद।**

नेपालमे प्रजातन्त्रक पुनर्बहालीपश्चात अर्थात 2047 सालसँ मैथिली संघ–संस्थापक स्थापनामे बाढ़ि जकाँ आबि गेल। अइ क्रममे स्थापित प्रारम्भिक संस्थाक रूपमे **मैथिली विकास–मञ्च**के लेल जा सकैत अछि, जे मैथिली विकासक बृहद कार्यक्रमक संग डा. धीरेन्द्रक संयोजकत्वमे कुल 15 गोटेक सहभागितासँ जनकपुरधाममे स्थापित भेल छल। मुदा एकर स्थापना स्थापनेधरि सीमित रहि गेल। अहीबीच मञ्चक 15मेसँ 2 सदस्य सुरेन्द्र लाभ आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि रोजगारीक सिलसिलामे काठमाण्डू एलाह आ एतौ **मैथिली विकास–मञ्चक** नामसँ एक संस्थाक स्थापना केलनि। वस्तुतः **बृहद मैथिली विकास–मञ्चक** परिकल्पना मोताबिक काठमाण्डूक मञ्च शाखाक रूपमे स्थापित भेल छल। मुदा केन्द्रीय मञ्च पूर्ण शिथिल भ गेलाक कारणे एकरा स्वतंत्ररूपेँ आगा बढ़ाओल गेल। 2047 सालक अन्तमे स्थापित **मैथिली विकास–मञ्च, काठमाण्डू**, 2048 सालभरि प्रत्येक मासक अन्तिम शनिक' मैथिली साहित्यिक गोष्ठीक आयोजन क मैथिली–गतिविधिसँ शून्य काठमाण्डूमे भाषिक आ साहित्यिक क्षेत्रमे नव उत्साह आ जनजागरण आनि देलक। समय–समयपर विभिन्न समसामयिक विषयमे विचारगोष्ठी तथा 2049 सालमे मैथिली कथागोष्ठी, बहुभाषिक कविगोष्ठी, बहुभाषिक गजलगोष्ठीक आयोजन संस्थाक अन्य किछु उपलब्धिमूलक काज थिक। 2050 सालमे संस्थाक वाह्य गतिविधि शून्य रहल। अही साल अखाढ़सँ साहित्यिक मासिक पत्रिका **पल्लव**क प्रकाशन आन्तरिक कार्यक रूपमे प्रारम्भ केलक जे अखनधरि नियमित प्रकाशित भ रहल अछि। प्रकाशनक क्षेत्रां नेपालीक सशक्त युवाकवि गोविन्द गिरी प्रेरणाक कवितासंग्रहक अनुसार **स्वप्नकथा चलिरहल अछि**क प्रकाशन मञ्चक एक अन्य उपलब्धि थिक। आब ई संस्था वैधानिक रूप प्राप्त करबाक दिशामे अग्रसर अछि, आशा करी जे तकरा बाद संस्थाद्वारा निरन्तरताक दृष्टिएँ सेहो किछु ठोस काज हएत।

अइबीच विराटनगर आ सप्तरीक तिलाठीमे मञ्चक शाखासब स्थापित भेल मुदा **प्रभात** पत्रिकाक द्वितीयांकमे देखाबामे आएल जे प्रकाशक– मैथिली विकास–मञ्च विराटनगर। तकरा अतिरिक्त कोनो विशेष कार्यक जानकारी कहियो कतौ नै। जनकपुरस्थित मञ्चकै धर्मेन्द्र विह्वल आ श्याम शशि जिएबाक प्रयत्न अवश्य केलनि 2049 सालभरि मासिक कविगोष्ठी आयोजित कक। आर्थिक रूपसँ सम्पन्न तथा काठमाण्डूमे अपन जिनगीके प्रायः प्रतिष्ठापित

चुकल किछु मैथिलीप्रेमीक एक समूह 2048 सालमे **नेपाल मैथिल समाज**क गठन केलक। ई संस्था पछिला तीन सालसँ अपन वार्षिकोत्सव मनेबाक अतिरिक्त बाढ़ि पीड़ितके सहयोग, रक्तदान, दूटा सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन, विद्यापति ... समाहित कैलेण्डरक प्रकाशन, पछिला दू सालसँ लघुपत्रिकाक रूपमे **मैथिल समाज पत्रिका**क त्रैमासिक प्रकाशन, सांसद स्वागत कार्यक्रम, शिवरात्रिक अवसरपर पशुपति शिविरक स्थापनासन किछु महत्वपूर्ण आ किछु कम महत्वपूर्ण काजसब केलक अछि जानकारीमे आएल अछि जे हाले ई संस्था मिथिलाक्षर कक्षाक संचालन केलक अछि सबसँ सकारात्मक बात ई जे मैथिलीक तमाम संस्थामध्य संस्थागत अभ्याससँ आ बढ़ैतसन संस्था यैहटा बुझाइत अछि।

नाटक क्षेत्रमे काज केनिहार संस्थाक रूपमे युवा नाट्यकला परिषद, परबाह धनुषा; सीताक नैहर, बस्तीपुर, सिरहा; **अभियान,** जनकपुर, **आकृति**, जनकपुर, आदि मैथिली नाटक मञ्चनक दिशामे मिनापक बाद किछु काज क रहल अछि।

मैथिली अकादमी बनेबाक उद्देश्यसँ 2050 सालक मध्यमे **मैथिली अकादमी**(कार्यदल)क गठन सेहो भेल अछि जनकपुरधाममे, जकर संयोजक छथि–...जानकीरमण लाल। तीन मासक भीतर अपन कार्य सम्पन्न करबाक घोषणाक ...गठित ई कार्यदल डेढ़ साल बीत गेलाक बादो एक–आध सम्पर्क–समितिक गठनक अतिरिक्त कोनो ठोस उपलब्धिपर नै पहुँचल अछि।

भारी तामझामक संग स्थापित **मिथिला सांस्कृतिक** केन्द्रसहित जनकपुरधामक **विद्यापति क्लब, चित्रगुप्त सेवा समिति, रूपरंग** आदि संस्था गोटेके–आधे काज केने हएत, अन्यथा मुइले जकाँ अछि। हँ, किशोरसबहक संस्था **मैथिली विकास परिषद** अवश्य अपना तरहक किछु किछु काज करैत आएल अछि। जहिना–तहिना **संभावना** नामक एकटा मासिक पत्रिका सेहो बहार क रहल अछि। उचित मार्गदर्शन भेटलापर ई संस्था मैथिलीक लेल उल्लेखनीय योगदान सेहो क सकैत अछि। विराटनगरमे मैथिलीक थोड़बहुत काज केनिहार एकटा संस्था **मैथिली सेवा समिति** सेहो अछि। नामेटा लेल स्थापित संस्थामे काठमाण्डूक **विद्यापति कला तथा सांस्कृतिक केन्द्र** एवं **मैथिली कल्याण परिषद**क नाम सेहो लेल जा सकैत अछि। संगीतक क्षेत्रमे काज करबाक उद्देश्यसँ हाले सप्तरीक भारदहमे **नवोदित मैथिली संगीत–मञ्च**क स्थापना भेल अछि।

संस्थाक बाढ़िसँ कार्य–तत्व छानबाक फिराकमे भ सकैछ कतौ हमहूँ भसिया गेल होइ, मुदा हमरा नजरिमे पड़ल संस्था आ ओकर काज मूलतः एतबे थिक।

अलिखित लोकसाहित्य

कोनो समाजक यथार्थ चित्र जँ ताकल जाए त ई लोकसाहित्यमे पाओल जा सकैत अछि। मौखिके रूपमे जीवित रहितो लोकसाहित्य समाजक मूल रूप प्रस्तुत करबामे पूर्णतः समर्थ रहैत अछि। अइ साहित्यक मूल श्रोत थिक–बूढ़–पुरानद्वारा नव पीढ़ीके हस्तान्तरित होइत आएल कथा–पिहानी तथा दुःख–सुख, पावनि–तिहार एवं जीवनक विविधि क्षणमे गाओल जाएवला जनकंठक गीत आदि।

मैथिली लोकसाहित्यक विशेष मनोरंजक आ प्रभावोत्पादक विधा थिक– कथा, जे जनसामान्यक रगरगमे भीजल अछि। मिथिलाक जनजीवनमे प्रचलित लोककथासबके सामाजिक, धर्म–कर्म, नीति–उपदेश, साहस–शौर्य, हास्यव्यंग्य, बाल–विनोद, अति मानवीय, प्रेम, वृत्ति आदि कथाक रूपमे वर्गीकृत कएल गेल अछि। अइ विभिन्न श्रेणीक लोककथामे मधुश्रावणी, वटसावित्री, तुसारी, जीतिया, छठि, नल–दमयन्ती, कारिख–भुइयाँ, श्रीकर आ चन्द्रकर, शीतला मैया, चन्नु बाबा, बारहकेशी रानी, बकड़ी आ नढ़िया तथा गोनू झा सम्बन्धी कथासहित बहुतरासे कथासब अबैत छैक।

वर्तमान भौतिकवादी तथा व्यस्ततम युगमे लोककथा लिपिबद्ध नै होइत गेलापर एकर अस्तित्व संकटमे पड़ि सकैत अछि। एकर अन्दाज अहूसँ लगाओल जा सकैछ जे अखने सेहो बूढ़–पुरानद्वारा धीयापूताके कथा–पिहानी सुनेबाक प्रवृतिमे ह्रास आएल जा रहल छैक।

मैथिली लोकसाहित्यक सबसँ लोकप्रिय आ प्रचलित विधा लोकगीत थिक। जन्मसँ ल मृत्युधरि विभिन्न समय, संस्कार, चिन्तन आदिमे गाओल जाएवला मैथिली लोकगीत मनोरञ्जनात्मक दृष्टिएँ सेहो समाजमे विशिष्ट सम्मान प्राप्त केने अछि। मूलतः मिथिलाक ललनासबद्वारा एक–दोसराके हस्तान्तरित होइत आएल लोकगीतक कोनो–कोनो पक्ष पुरूष वर्गद्वारा सेहो संरक्षित छैक। लोकगीतसबहक नाम गनाएब संभव नै अछि। नचारी, महेशवानी, भगवतीक गीत, ब्रह्मक गीत, सोहर, समदाओन, बटगबनी, बारहमासा, कुमार, परिछन, चुमाओन, होरी, झिझिया, पराती, जट–जटिन, कजरी, झुमरी, कोबर, उचिती, योग, डहकन, वसन्त, पावस, झुला, मलार, चैतावर, लगनी, गोदना, सिन्दूरदान आदि विभिन्न समय आ वर्गक गीत थिक, जै मैथिल चाहे कतौ रहथु, हुनक जनजीवनसँ प्रत्यक्षरूपेँ जुड़िक' संगसंग चलिरहल अछि।

वर्तमानमे फिल्मी गीतक प्रभाव मैथिली लोकगीतपर हाबी होब' लगलैए, जाइसँ एकर मूल स्वरूप विकृतिदिस घुसकिरहल छैक।

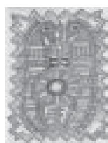
यद्यपि मैथिली लोकसाहित्यमे अन्य बहुतो विधा सेहो सम्मानित स्थान रखैत अछि, मुदा खासक' लोककथा आ लोकगीतक क्षेत्रमे मात्र अइ लेखके सीमित रखबाक कारणें सब पक्षपर प्रकाश देब संभव नै अछि। तथापि लोकगीत आ कथाक चर्चा एलापर लोकसाहित्यक एकटा आर विधाक उल्लेख सेहो आवश्यक भ जाइत अछि, ओ थिक–लोकगाथा। लोकगाथा यथार्थमे लोकगीत आ कथाक सम्मिलित रूप छैक, जाइमे गेयात्मक ढंगसँ ओइ क्षेत्रक सत्यतायुक्त कथा प्रस्तुत कएल जाइत छैक। डा. राजेन्द्र विमलक अनुसार मैथिलीक 36 गोट लोकगाथा प्रचलित छैक। दीनाभद्री, वंशीधर–वामन, लवहरि–कुशहरि, आल्हा, कुमर बृजभान (सोरठि), सलहेस, नैका बनिजारा, हिरनी–बिरनी, रामलीला, दुलरा–दयाल, लोरिक–मनियार, गोपीचन्द, अमरसिंह, विजयमल्ल आदि मैथिलीक किछु प्रचलित लोकगाथा थिक।



विचार

महिलाक अतीत, आइ आ काल्हि

सुशीला झा



भारतीय समाज में अतीते सँ महिलाके जन्म होइते हुनक कर्त्तव्यक जन्मघुँटी पिआओल जाइत रहल अछि। मुदा ताहि दिन अधिकारक लेल क्यो मुँह नहि खोलैत छल। महिला मौन रहैत छलीह। पुरनका पीढ़ी विद्रोह करब जनिते नहि छल। तँ एखनहुँ पुरुष महिलाक ओहि छवि के स्वीकारै अछि मोन सँ। नवका पीढ़ि मुखर अछि। आइ महिला कँ अनेक प्रकारक सामाजिक आ पारिवारिक समस्याक सामना करऽ पड़ैत छै। महिलाक शोषण, उत्पीड़न मात्र घरेलू समस्या नाहि सार्वजनिक प्रश्न छै। महिलाक शोषण, उत्पीड़न मानवाधिकारक हनन छै।

ग्रामीण होउ बा शहरी महिला सब अनगिनत समस्या सँ जूझि रहल अछि। यद्यपि एहि-समस्या सब सँ मुक्तिक उपाय भारतीय संविधान आइ सँ साठि-बासठि वर्ष पूर्व कऽ देने छल। अनेक प्रकारक संवैधानिक प्रावधान छै कतेक तरहक कानून छै। मुदा मात्र कानून बनने समस्याक अन्त नहि भऽ सकै'छ। समाज जेना-जेना शिति आ आधुनिक बनल जा रहल अछि ताहि मे बेशी तीव्र गति सँ महिला हिंसाक ग्राफ बढ़ि रहल अछि। मात्र कानून बनौने समाज नहि बदलि सकै'छ। जरूरी छै घर-परिवार आ सामाजिक स्तर पर पुरुषक सामंती मानसिकता एवं व्यवहार बदलए।

आधुनिक महिला के वक्तक रफ्तार सँ डेग मिलबैत हाँफैत, दौड़ैत सुविधानुसार पोशाक मे चुस्त-दुरुस्त जमीन सँ आसमान धरि अपन उपस्थिति दर्ज करा रहल छथि।

¥ÌèÌ ×ð ÂéL¤áâ•ææ·¤ ° ·¤ÀU˜æÚU¼æÁ ÀUÜñ Ì·¤ÚU Âý×é¹ ·¤æÚUæ ÀUÜ Áð ÌæçãU Øé»·¤ ×çãUÜæ ÂéL¤á â•ææ ·ð¤ ·¤¹Ùõ ¿éÙõÌè ÙçãU ÎñÌ ÀUÜñÐ ¥æ Ùð ÂéL¤á·¤ ×ãUß ·ð¡¤ Ù·¤æÚñUÌ ÀUÜñÐ ¥æÏéçÙ·¤ ×çãUÜæ·¤ ÌðßÚU ÕɸUÜ ÀñU ¥æð ¥ÂÙæ·ð¡¤ ·¤æð¡Ùæð ÌÚUãð¡ ÂéL¤á â¡ ·¤× ÙçãU ÕêÛæñÐ ÂéL¤á °¹Ùãê¡ ×çãUÜæ·ð¡¤ ¥çSÌß ·ð¡¤ ×ãUß ÙçãU ÎñÌ ÀUçÍÐ

घर–गृहस्थी बाल, बच्चा सबकैँ सम्हारैत ओफिसो में अपन नव प्रतिमान गढ़ि रहल छथि। ओफिसक सहयोगी सँ बहस करैत छथि तऽ बॉस बनल निर्देशो दऽ रहल छथि। एतबे नहि तेज रफ्तार सँ ओवरटेक करैत कार चला रहल छथि। एसगर फिल्मो देखऽ जाइत छथि। क्यो अंट–शंट बजैत छै बा अनर्गल व्यवहार करैत छै तऽ शोहदा के पकड़ि कऽ धुनि दैत छथि। तैँ मुँह बाबी आजु महिलाकैँ देखते रहि जाइछ।

महिलाक ई आधुनिक छवि पुरुषक बनाओल खाँचा मे फिट नहि होति छै। किएक तऽ काल्हि धरि घर–परिवार आ समाज ओकर पैरतरक धरतीओ क अपन कहबाक अधिकार नहि दैत छलै। आ आइ पैर तरक धरतीए नहि अपन हिस्साक आकाशो मंगैत नहि छै छीनबा लेल तत्पर रहैत छै।

अतीत मे पुरुषसत्ताक एकछत्र राज छलै तकर प्रमुख कारण छल जे ताहि युगक महिला पुरुष सत्ता के कखनौ चुनौती नहि दैत छलै। आ ने पुरुषक महत्व कैँ नकारैत छलै। आधुनिक महिलाक तेवर बढ़ल छै ओ अपनाकैँ कोनो तरहैँ पुरुष सँ कम नहि बूझै'अछ। यनहिं पुरुष एखनहुँ महिलाकैँ अस्तित्व कैँ महत्व नहि दऽ रहल छथि। पुरुष विद्वान व बलशाली बनल छथि तकर मुख्य कारण छै जे महिला अपन सम्पूर्ण शक्ति पुरुष कैँ समर्थ सफल होएबा लेल झोंकि दैत छथि। कखनहुँ मांक रूप मे तऽ कखनहुँ बहीन आ पत्नीक रूप मे। पुरुषक सफलताक लेल महिला ततेक समर्पित रहैत छलीह जे बेटा के आशीर्वाद दैत छलीह यशस्वीभव आ पुतौहु के कहैत छलथिन दूधेनहाउ, पुते फुलाउ, सोहगवतीभव, पुत्रवती भव। स्वयं अपना अस्तित्व के बिसकौने छलीह। अपना सम्मान लेल कहियो–सोचितो नहि छलीह। समानताक तऽ कल्पनो नहि करैत छलीह।

आजुक महिला घर, परिवार आ समाज मे अपन स्थिति लेल जागरूक रहैत छथि। जे क्यो हुनक शारीरिक क्षमता लऽ कऽ हुनका कमजोर साबित करैत छथिन हुनक मुँह बन्द करबा लेल आइ सेना एवं पुलिस महकमा मे अपन सशक्त उपस्थिति दर्ज क रहल छथि। कोनो एहन क्षेत्र नहि जतऽ आधुनिक महिला नहि छथि। आजुक महिला देवी या दानवीर नहि मानवीर छथि। मुदा एकर ई अर्थ नहि जे ओ मां, बहिन, बेटी या पत्नीक स्वरूप के नकारि रहल छथि।

अस्तित्व छवि होएबाक अर्थ ई नहि जे घर, परिवार से दूर भऽ जाइ। ने आपन सरेबार बिसरि रहल छथि ने संस्कृति। मात्र अपन सम्मान आ समानता चाहैत छथि। अस्तित्ववादी महिला नकारैत छथि मात्र शोषण, उत्पीड़न।

शिक्षा आ समझ सँ आजुक महिला मे आत्मविश्वास जागृत भेलै ए। आत्मविश्वासी महिला कखनहुँ गैर जिम्मेदार नहि भऽ सकै'छ।

26 जनवरी '2010 के गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह कहलनि–'हमारे विचार से हमारे सामने सबसे अहम मुद्दा अन्याय और असमानता कम करने के लक्ष्यों को हासिल करना है। हमें उन जरूरतों को पूरा करना चाहिए जो मानवीय विकास के लिए आवश्यक है।' एहि वक्तव्य मे देशक पीड़ाक ओ अभिव्यक्ति अछि जे स्वतंत्रताक छः दशक पूर्ण भेलाक पश्चातो कम नाहि भेल अछि। आइयो घर–परिवार, राज–समाज मे अनगिनत असमानता छैक. जाबत असमानता रहते ताबत देशक विकास नहि भऽ सकै'छ।

असमानताक कारण सरकारी नीति क अभाव नहि अपितु अज्ञानता, सामंती सोच, रुढ़िवादिता आ अंधविश्वास छै। रुढ़िवादिता आ परम्पराक नाम पर प्रभुत्वक स्थापनाक लालसा कम नहि भऽ रहल अछि खासक ग्रामीण वातावरण मे एखनहुँ– 'बोर्न टू रुल' बला मानसिकता छै बेटाक प्रति। एहि सोच के कारण बेटी उपेक्षित रहैत अछ। बेटाक लालसा मे जनसंख्या बढ़ैत छै। जकरा दू–तीन टा बेटी भऽ जाइत छै से हो बेटाक प्रतीक्षा मे रहैत अछ।आब तऽ बेटी गर्भ मे छै से बूझला पर भ्रूण हत्या सहज बात भऽ गेल अछि। महिला आ पुरुषक असमानता क संदर्भ मे दुनुक अनुपात मे बहुत अन्तर छैक सौ पुरुष पर मात्र अस्सीक संख्या महिलाक छैक। विश्व आर्थिक मंचके अनुसार 134 देशक सूची मे भारतक स्थान 114वां छै। ऐसोचैमक एहि रिपोर्ट के अनुसार स्पष्ट होइछ जे महिला, पुरुष मे कतबा असमानता एखनहुँ थोपल जाइछ। चाहें संसद मे 33 प्रतिशत आरक्षणक प्रश्न होमए बा दहेज आ दहेज हत्याक। ब्रह्माण्ड मे (सुनीता विलियम) डेग राखनहुँ सामंती बंदिशक शिकार भऽ रहल छथि महिला। ने अपना घर मे सुरति छथि ने स्कूल, कॉलेज मे ने ऑफिस मे।

पितृसत्तात्मक समाज मे कतेक असमानता छै से प्रत्येक वर्ष महिलाक खिलाफ दर्ज होमऽ बला मामला मे देखल जा सकैत अछ। यद्यपि बहुत कम मामला दर्ज होइत छै एखनहुँ लोक कोर्ट, कचहरिक झंझटि मे नहि परऽ चाहैत अछ। नहि जानि प्रताड़नाक दौर कहिया खत्म हेतै। पछिला दशक बदलावक दौरान प्रत्येक क्षेत्र मे बदलाव सकारात्मक आ नकारात्मक देखल महिला समाज मे सेहो–बदलाव भेलै मुदा जड़ता एखनहुँ जकड़ने अछि।

संपर्क : एच.ओ.ए.के. ठाकुर
अवकाश प्राप्त अभियंता
बोरिंग केनाल रोड, खेतान गली अन्तिम
पटना–1

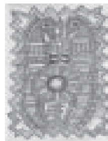
❋❋❋



प्रतियोगिता परीक्षा हेतु विशेष

मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि

सुरेन्द्र राउत



मिथिला एखन आधुनिक बिहारक उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र आ नेपालक दक्षिणी-पूर्वी भू-भागमे पसरल अछि। एहिभू-भागक धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जानकारी मैथिली साहित्य आ मिथिलेत्तर साहित्य सँ सेहो भेटैत अछि। एहि दृष्टिकोणसँ मैथिली साहित्यमे सिद्ध साहित्य,डाक-घाघ वचनावली, ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर विद्यापति आ हुनक परंपराक कविक रचना आ आधुनिक कवि लोकनिक रचना प्रमुखता राखैत अछि।

एहि साहित्यक अध्ययनक आधार पर कहल जा सकैछ जे मिथिला धार्मिक आ सांस्कृतिक दृष्टिमे प्राचीन कालहिसँ समृद्ध अछि। एहि भू-भाग पर सभ्य-संस्कृति रूपेँ सर्वप्रथम आर्य, सांस्कृतिक प्रसार भेल। एकरा बाद जैन ओ बौद्ध धर्मक प्रचार जो प्रावल्य भेलासँ आर्य- सांस्कृतिक विकासमे गतिरोध उत्पन्न भऽ गेल, मुदा एकर अवसानक बाद बैदिक धर्मक प्रावल्यता पुनः बढ़ल आ बुद्धकेँ विष्णुक नवम् अवतार मनिकेँ हिन्दू-धर्मक देवता मानि लेल गेल, मुदा कट्टर बौद्ध लोकनिक अपन स्वतंत्र-अस्तित्वक रक्षा आ बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसारक लेल संघर्ष करैत रहलाह। एहि संघर्षक वर्णन ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर' सँ भेटैल अछि।

एकरा बाद मुसलमानक आक्रमण सँ मिथिलामे सेहो संघर्षपूर्ण स्थिति उत्पन्न भऽ गेल आ मूल मिथिलावासी के अपन धार्मिक ओ सांस्कृतिक रक्षाक लेल संघर्ष कर पड़लैन्हि। मुदा एहन स्थितिक बादो मिथिलामे कहियो साम्प्रदायिकता नहि छल। हिन्दू आ

çàæß Öç•Ì ¥æ àæç•Ì ·¤ ÂêÁæ ·¤ ÌéÜÙæ×ð çßc‡æé (àææ•Ì) Öç•Ì ·¤
Âý¿æÚU ç×çÍÜæ×ð ¥Âðÿææ·ë¤Ì ·¤× ÖðÜÐ Öæ»ßÌ ãUçÚUß´àæ,
Õýræßñß·ü¤ ÂéÚUæ‡æ ¥æçÎ·¤ Âý¿æÚU ç×çÍÜæ×ð ¥ßàØ ÀUÜÐ çßc‡æé
â¢Õ¢Ïè ßýÌÑ©UÂßæâ °·¤ÙãéU °Ì° Âý¿çÜÌ ¥çÀUÐ Ìæçãâ¡ çâh
ãUæðßÀUÁð¡ ç×çÍÜæãé¡U·¤ ×Š‹ß çßc‡æß Öç•Ì ×ãUˆßÂê‡æü ×æÙÜ Áæß§Ì
ÀUÜÐ çßc‡æé ¥æ ãéUÙ·¤ ¥ßÌæÚU·¤ ÂêÁæ Âæ˜æÙ·¤ M¤Âð¡ ãUæðßÀUÐ
×éÎæ °çãU ÂêÁæ·¤ çßSÌæÚU×ð âÖâ¡ Âñ¢Ï ÕæÏæ ¥çÀU °·¤Ú çÙØ×-
çÙDUæÐ »ëãUSÍæŸæ×·¤ð¡ ˆØæç» ÁæðU âæ¢âæçÚU·¤ â¢Õ¢Ï·¤ð¡ çßçÀU‹Ù
·¤° Áð Õñڻæè ÕçÙ Áæ§ÀU, ×æÀU ¥æ ×æâ·¤ð¡ ÀUæðçÇ¸ Áð ÌéÜâè·¤
×æÜæ ÏæÚU‡æ ·¤ÚUñÌ ÀUçÍ âð ç×çÍÜæ×ð çßc‡æß ãUæðßÀUÐ

मुसलमानक सांस्कृतिक जीवन एक दोसर सँ प्रभावित अवश्य भेल मुदा हिन्दू वर्णाश्रम धर्ममे विश्वास करैत रहलाह आ हिन्दू देवी-देवता सभकेँ सरल मार्गे भक्ति ओ श्रद्धा दैत रहलाह।

एहि ठाम प्राचीन कालहिसँ मुख्यत: शिव शक्ति आ विष्णुक पूजा होति आइल अछि। मिथिलाक जनसमुदाय मुख्य रूपें तीनों देवी-देवताक उपासक रहलाह अछि। माथ पर तीन चिह्नवाला चानन एहि समन्वयताक प्रतीक थिक। तीनटा दाहिना सँ वामा दिसि समानांतर भस्मरेखा शिवक भक्तिक सूचक थिक। उजरा चाननक ठढ़का रेखा मध्यमे विष्णुक आभोरललका चाननक ठोप शक्तिक भक्ति अछि।

एहिमे महादेवक सभ सँ बेसि महत्व छैक। महादेव एहिठामक सम जातिक देवता बुझल जाइछ। मिथिलामे हुनक पूजाक वर्णन आर्य सांस्कृतिक प्रसार सँ पुरनहि सँ भेटैत अछि। एखनहुँ प्राय: मिथिलाक सभ गाममे कम सँ कम एकटा महादेवक मठ अवश्य आछि आ जखन-तखन गमैया पूजा कऽ महादेवकेँ प्रसन्न करवाक आयोजन कएल जाइछ। एहि कारणें शिवसंबंधी लोकगीत, लोककथा आ लोकनाट्य मिथिलामे एतेक बेसी भेटैत अछि।

ई लोकगीत मुख्यत: दुई रुपेँ प्रचलित अछि। एकटा नचारी आ दोसर महेशवानी। नचारी शुद्ध भक्तिक गीत आछि आ महेशवानी शुद्ध रुपेँ हर ओ गौरीक गृहस्थ जीवनक गीत अछि। विद्यापति सँ लए चन्दा झा धरि सुन्दर-सुन्दर नचारी आ महेशवानीक रचना भेल। विद्यापतिक नचारीमे भक्ति भाव एतवा प्रबल छल जैं शिव के स्वयं विद्यापतिक भृत्तव स्वीकार कऽर पड़लनि। एखनहुँ तीर्थयात्री कपिलेश्वर आ पशुपतिनाथक तीर्थ यात्राक समय आ भजन-किर्तनक समय भाव-विभोर, भ' एहि तरहे गवैत छथि- कखन हरब दु:ख मोर हे भोलानाथ....।

दु:खहि जनम लेल दु:खहि जीवन बितावल......।

शक्तिपूजा सेहो व्यापक रुपें प्रचलित छल, मुदा शिव आ शक्ति दुनूमे एकटा पैघ अन्तर अछि। शक्तिक पूजासँ आठो सिद्धि भेटवाक विश्वास छैक आ शिवक उपासनासँ मुक्ति भेटैत छैक जैं शक्तिक पूजासँ उच्चतर ध्येय थिक। उच्चैठ, जनकपुर, चमुण्डास्थान, उग्रतारास्थान आ अन्य अनेक सिद्धपीठ मिथिलाक शीर्ष कहबैत अछि। एहिठाम गोसाउनिक पूजा शक्ति आराधनाक प्रतीक थिक। गोसाउनिक पूजा आ गीतक बिना एहिठाम कोनो शुभ-कार्य आरम्भ नहि होइछ। कोनहुँ बालककेँ जे प्रथम-प्रथम श्लोक सिखाओल जाइत अछि, से शक्तिसँ संबद्ध अछि।

सा ते भवतु सुप्रीता देवी शिखरवासिनी।
उग्रे तपसा लब्धो यथा पशुपति: पति:॥

दशो महाविद्याक ध्यानमूलक गीत रचना मिथिलाक शक्तिमूलक भक्ति काला थिक। तांत्रिक पूजा आ कुमारी पूजा, जकर अस्तित्व मिथिलामे आदि कालहि सँ अछि, शक्ति पूजासँ संबंद्ध अछि। शक्तिक एहि व्यापक उपासनाक प्रभाव मिथिलाक लिपि ओ साहित्य पर सेहो पड़ल। प्राय: सभ लेखक शक्तिक बन्दना आद्याशक्तिक रूपमे करैत छथि आ मैथिलीक लिपि मिथिलाक्षर तांत्रिक मन्त्रसभक अनुसरण क' बनल अछि। जेना आँजी'क चिन्ह जाहिसँ मैथिली वर्णमाला ओ शुभकार्य प्रारम्भ होइछ से तांत्रिक कुण्डलिनीक प्रतीक थिक। विवाहक अवसर पर 'जोग' गाओल जाइछ, जैं तन्त्रसँ प्रभावित अछि।

शिव भक्ति आ शक्तिक पूजाक तुलनामे विष्णु (शाक्त) भक्तिक प्रचार मिथिलामे अपेक्षाकृत कम भेल। भागवत हरिबंश, ब्रह्मवैवर्त्त पुराण आदिक प्रचार मिथिलामे अवश्य छल। विष्णु संबंधी व्रत: उपवास एकनहुँ एतए प्रचलित अछि। ताहिसँ सिद्ध होइछ जैं मिथिलाहुँक मध्य वैष्णव भक्ति महत्वपूर्ण मानल जाइत छल।

विष्णु आ हुनक अवतार'क पूजा पालनकर्त्ताक रूपेँ होइछ। मुदा एहि पूजाक विस्तारमे सभसँ पैध बाधा अछि एकर नियम-निष्ठा। गृहस्थाश्रमकेँ त्यागि जो सांसारिक संबंधकेँ विच्छिन्न कए जे बैरागी बनि जाइछ, माछ आ मासकेँ छोड़ि जे तुलसीक माला धारण क' लैत छथि से मिथिलामे वैष्णव होइछ। एहन त्याग उच्च कुलक लोकक मध्य विरले भेटैत अछि। एहि कारणें विष्णुक भक्तिक प्रधानता मिथिला मध्य बड़ऽ कम अछि। मुदा मिथिलाक भक्ति आ शृंगारिक साहित्यमे सबसँ बेसी पद हुनक अवतारी पुरुष कृष्णेँ पर लिखल गेल। जकर वर्णन विद्यापति आ हुनक परंपराक कविमे अतिशय भेटँत अछि।

एकर अतिरिक्त मिथिलामे स्थान-विशेष आ जाति विशेषक सेहो छोट-मोट देवी-देवताक अस्तित्व विद्यमान छल, जेना-सलहेस-दुसाधक, लोरिक-गोपक, दीनभद्री, मुसहरक देवता छल मुदा आनो जाति द्वारा एहि देवताक सम्मान देल जाइत छैक।

निष्कर्ष बहराइत अछि जे आध्यात्मिक मिथिलाक मानसिकताक उद्गम स्रोत शिव ओ शक्ति रहलाह अछि आ विष्णुकेँ सेहो सम्मानपूर्ण स्थिति प्राप्त छैन्हि। एहि प्रकारेँ

मिथिलाक धार्मिक स्थिति सौहार्द्रपूर्ण छल आ एखनो अछि।

सामाजिक

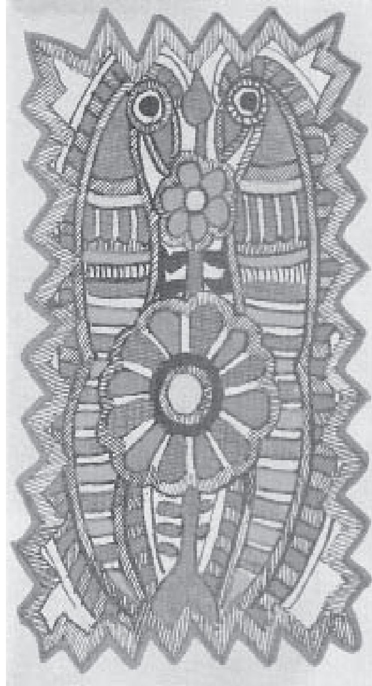
मिथिला समाजक स्थिति मैथिली साहित्य आ मैथिलेत्तर साहित्य दुनूसँ भेटैत अछि। मैथिलीक आरम्भिक साहित्यमे प्रमुख अछि- सिद्ध साहित्य, डाक ओ घाघबचनावली, वर्णरत्नाकर आदि। एहिमे वर्णरत्नाकरसँ मिथिला समाजक व्यवस्थित जीवनक वर्णन भेटैछ।

मिथिलामे आर्य संस्कृतिक प्रसार पश्चिमोत्तर भारतक अपेक्षाकृत बादमे भेल आ मिथिलामे सभ्य समाजक निर्माण आर्य संस्कृतिक आगमनक पश्चातेँ भेल। समाजमे वर्णाश्रम धर्मक नींव सुदृढ़ भेल आ जाति प्रथाक नींव मजबूत भेल। जाहिमे सभसँ सर्वोच्च स्थान ब्राह्मण के प्राप्त भेलनि तत्पश्चात क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, आ अंत्मज जातिकेँ भेटलनि। सभ जाति सामाजिक सम्पर्कमे 'जजमानी' व्यवस्थाक तहत जुड़ल छल, जाहिसँ ओ लोकनिक सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताक लेल एक दोसर पर आश्रित रहैत छलाह, एहि व्यवस्थामे शोषक तत्व सेहो मौजूद छल मुदा समाजमे आपसी कोनो द्वेष नहि छल।

एहि समाज मे चौदहम् सदीमे मुसलमानक आक्रमणसँ उथल-पुथल आएल। एकर प्रभाव आ बलसँ निम्न वर्गक लोक मे एहि धर्मक प्रति झुकाव बढ़ल आ मिथिला विभिन्न धर्मावलम्बीक केन्द्र बनल, मुदा उच्च कुलक हिन्दू द्वारा एकरा अछूत मानल गेल। एहि बातक वर्णन विद्यापति विभिन्न रचनासँ भेटैछ। संगहि धर्मपरिवर्तन रोकबामे विद्यापतिक तिरहुता बड़ऽ काज आएल।

मिथिलामे आरम्भिक कालहि सँ महिलाक स्थिति कमजोर छल। बाल-विवाह, वैश्य प्रथा, पर्दा प्रथा, सती प्रथा आदिक वर्णन वर्णरत्नाकर सँ भेटैत अछि। जेँ महिलाक लेल बड़ऽ कष्टगर होति छल। ओना पढ़ल-लिखल विदूषी आ बीर महिलाक सेहो वर्णन भेटैछ मुदा एकर संख्या अत्यल्प छल। मुदा महिला हेय दृष्टिसँ नहि, बल्कि सम्मानक दृष्टिसँ देखल जाइत छल। आधुनिक मिथिला साहित्यमे सेहो एहि सामाजिक कुप्रथाक वर्णन भेल अछि मुदा वर्तमानक साहित्यसँ ई स्पष्ट होइछ जे मिथिलहुँ मध्य रुढ़िवादिता आ परंपरागत कट्टरताक तत्व कमजोर भऽ रहल अछि जकर मुख्य कारण अछि पश्चात्य संस्कृति आ भारतक विकासक अंध दौर।

मिथिला समाजक एकटा विशिष्ट प्रथा छल-पंजी प्रबन्ध आ कुलीन प्रथा। जकर आरम्भिक वर्णन वर्णरत्नाकर सँ भेटैछ। पंजी प्रबन्धक अन्तर्गत सामाजिक जीवनमे मैथिल लोकनिक विस्तृत वंशावली लिखि कए रखबाक प्रथाक विकास भेल। ई प्रथा एखन मुख्यत: ब्राह्मण आ कायस्थलोकनिक मध्य प्रचलित अछि।



एहि प्रथाक विकास वर्जित ओ अनाधिकार विवाहकेँ रोकबाक लेल सम्भवत: हरिसिंह देव द्वारा कएल गेल। एहि प्रथाक तहत ई आवश्यक कऽ देल गेल जे लोक पहिने पञ्जीकारसँ अस्वजन-पत्र बनबाए लेथु तखन विवाह करथु जाहिसँ ई निर्विवाद भऽ जाए जे दुहू पक्ष राजी-खुशी सँ विवाह करैत छथि। जकर मूर्त्तरूप एखनो सौराष्ठक मेलामे देखल जा सकैछ। संगहि मिथिला समाजमे विवाहमे घटक महराजक विस्तृत भूमिकाक वर्णन अछि। जकरा वर्णरत्लाकर, चन्दाझाक रचना, हरिमोहनझा यात्री जी आ जीवन झाक रचनामे देखल जा सकैछ।

एहि पंजीप्रबंधसँ कुलीन प्रथाक उद्भव भेल जकर आब मिथिलामे कानो अवशेष नहि अछि। एहिमे गाम ओ परिवारक नामसँ लोकक प्रतिष्ठा बनैत छलैक जकरा लौकित वा पाँजि कहल जाइछ। एहि उच्चकुलक लोक धनक बलसँ अनेक विवाह करैत छलाह, जाहिसँ मिथिलामे बिकौआ विवाहक प्रथाक विकास भेल। आधुनिक मिथिलाक साहित्यमे एहि प्रथाक बड़ऽ निन्दा कयल गेल अछि, जकरे परिणामस्वरूप ई प्रथा एखन मृत्य प्राय: अछि।

आर्थिक

मैथिलीक आरम्भिक साहित्य एक ओ घाघवचनावली एवं वर्णरत्नाकरसँ मिथिलाक कृषि-प्रथाक विस्तृत वर्णन भेटैछ। एहि क्षेत्रक अर्थव्यवस्थाक मुख्य आधार कृषि छल, जाहि पर सभ वर्गक लोकक जीवन प्रत्यक्ष जो अप्रत्यक्ष रुपेँ निर्भर छल। अर्थात मिथिलाक समाज अन्योन्याश्रित ओ आत्मनिर्भर समाज छल। मुख्य उत्पादक वर्ग आ श्रमिक वर्गक रूपमे वैश्य या शूद्र जातिक वर्णन भेटैछ।

मिथिलाक कृषि व्यवस्था उक्षत छल, मुदा एकर विकासमे सभसँ पैध बाधा प्राकृतिक विपदा जेना बाढ़, दाहर, सुखा आदि छला। जकर वर्णन प्राचीन आ आधुनिक मिथिला साहित्य मे भरल-परल अछि।

ब्रिटिश आगमनक पश्चात मिथिलामे जमींदारी व्यवस्थाक शुरुआत भेल जहिसँ कृषि व्यवस्थामे शोषण तत्वक अधिकाधिक समावेश भेल। फलत: मिथिलाक आत्मनिर्भर समाज चरमरा गेल। फलत: मिथिलामे गरीबी दरिद्रता भूखमरीक समस्या बढ़ल। जे आधुनिक साहित्यक मुख्य विषय-वस्तु बनल। स्वतंत्रताक पश्चात जमींदारी प्रथा सँ मिथिला समाज मुक्त भेल आ एहि ठाम शोषक तत्व किछु कमजोर भेल, मुदा प्राकृतिक समस्यासँ मिथिला एखनो मुक्त नहि भेल अछि।

सांस्कृतिक

मिथिला आदि कालहि सँ सांस्कृतिक दृष्टिमे धनी अछि। सभ सँ पहिने एकर अपन सांस्कृतिक पहचान विदेह शासक मिथिला नरेश राजा जनक'क समय भेटल। जकरा चन्दा झा अपन मिथिला रामायणमे जगह-जगह पर उजागर कएने छथि।मिथिला समाजक सांस्कृतिक दृष्टिकोण एकर धार्मिक दृष्टिकोणसँ जुड़ल अछि। जेना शिक्षा, प्रशासन, साहित्य आ जीवन-बसर सभ पर धर्मक अमीट छाप छैक।

मिथिलाक भक्ति (पूजा-पाठ) धार्मिक जीवनमे गीतक परम्परा प्राचीन आ महत्वपूर्ण अछि। एहि गीतक मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनमे सर्वोपरिक महत्व अछि। एहि कारणेँ मैथिली साहित्यक विकास गीतसँ भेल एवं एकर इतिहास गीतमेय अछि। एकर प्रमाण सिद्ध साहित्य आ एक ओ घाघक वचनावली सँ भेटैत अछि। ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे सेहो गीत ओ नृत्य दुहुक सांगोपाकओ सजीव वर्णन भेल अछि। जे विद्यापतिक समय अपन चरमोत्कर्ष के प्राप्त कएलक। मध्ययुगमे एहि गीत आ नृत्य सँ मुक्त नाट्य परम्पराक विकास भेल, जकरा मिथिलामे किर्त्तनिया, असाममे अंकिया आओर नेपालमे 'नेपाल रचित नाटक' कहल जाइत छल। एकर विषय वस्तु धार्मिक होइत छल जकरा नाइच-गाबि कऽ स्रोता केँ आकृष्ट कएल जाइत छल।

मिथिलाक प्राचीनतम गीतकाव्य 'तिरहुति' नामसँ विख्यात अछि। तिरहुति शृंगाररसक मधुर गीत थिक जाहिमे नायक-नायिकाक संयोग-वियोग क रगात्मक वर्णन होइत अछि। एकर चारि गोट मुख्य उपभेद अछि -

(1) **बटगवनी** - एहि मध्य सखी सभक संग समागम गृहमे पतिसँ अभिसारक हेतु जाइत नायिकाक वर्णन होइत अछि। विद्यापति बटगवनीमूलक रचना बड़ प्रसिद्ध छैन्हि।

(2) **गोआलरी** - एकर विषय-वस्तु होइत अछि गोपीसभक संग कृष्ण नोँक-झोँक एवं केलिकौतुक। विद्यापतिक गोआलरी प्रसिद्ध अछि मुदा **नन्दीपति** गोआलरीक विशेष प्रसिद्ध कवि छथि।

(3) **रास** - एहि मध्य गोपीसभक संग कृष्णक रास-लीलाक वर्णन होइत अछि। रासक सर्वप्रमुख कवि छथि- **साहेब रामदास**।

(4) **मान** - मानमे रुसलि नायिकाकेँ मनबैन नायकक अथवा रुसल नायकके मनबैत नायिकाक सरस वर्णन होइत अछि। एहिमे विद्यापति, उमापति ओ हर्षनायक 'मान' प्रसिद्ध अछि।

तिरहुतिक अतिरिक्तो मिथिलामे अनेका-अनेक स्थानीय गीतक विकास भेल। एहि गीतक सृजन करवाक लेल कोनो विद्वानक जरुरत नहि छल। मिथिलाक संस्कृतिमे एतेक प्रौढ़ता छल जे एहि प्रकारक गीतक सृजन करबामे सामान्य सँ सामान्य व्यक्ति सक्षम छल। जे विभिन्न प्रयोजन पर आवश्यकतानुसारेँ एकर सृजन केलन्हि। एहि प्रकारक गीतक विषय-वस्तु जनसमान्यसँ जुड़ल रहैत छल, जकरा धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक विभिन्न प्रकारक रीति-रिवाज सँ संबंद्ध कऽ सृजित कयल जाइत छल। एहि गीत सँ सेहो विरह, वेदना, शृंगार, ऋतुक बहार, विभिन्न प्रकारक संस्कार देवी-देवताक शक्ति आदिक वर्णन भेटैत अछि।

आरम्भमे एहि प्रकारक गीत लिपिबद्ध नहि छल, ई मौखिक रुपसँहि एखन धरि आयब रहल छल। मुदा एकर संकलन आधुनिक समयमे क' देल गेल मुदा एखनों किछु संकलन करबाक बांकि अछि। एहि प्रयाससँ मिथिलाक प्राचीन सांस्कृतिक स्थायित्वभेटल। एहि प्रकार गीत निम्न अछि:-

समदाउनि - वस्तुत: ई विदा गीत थिक। कन्याक सासुर जाइत समय दुर्गाक प्रतिमा विसर्जनक समय ई गाओल जाइत अछि। एकर प्रसिद्ध रचयिता गणनाथ झा छथि। जकर वर्णन मिथिलाभाषाक रामायण मे भेटैत अछि।

लगनी - श्रम परिहरणार्थ मैथिली ललना लोकनिक 'लगनी' गबैत छथि।

चैतावर - चैतमासमे कोनहुँ नायिकाक अनुराग-भावनाक एहि मध्य सरल चित्रण होइछ।

मलार - ऋतु गीत थिक। जकरा ऋतु विशेषानुसार गाओल जाइत अछि। एहि प्रकारक गीतमे बिरह, शृंगार आदिक समागम अद्‌भुद अछि।

योग ओ उचिती - योग ओ उचिती सुप्रसिद्ध मैथिली व्यावहार गीत थिक, जे विवाहक अवसर पर गाओल जाइत अछि। जकर वर्णन रामेश्वर चरित्र रामायणसँ भेटैत अछि।

सोहर - जन्मक अवसर पर सोहर गाबल जाइत अछि। जकर वर्णन मनबोधक कृष्णजन्म सँ भेटैत अछि। संगहि एकर वर्णन चन्दा झाक रामायण मे सेहो भेल अछि।

बारहमासा, छओमासा ओ चौमासा - एहि प्रभेदक गीतकाव्यमे बिरह वर्णन रहैछ। एहिमे नायिकाक विरह-दशाक चित्रण होइत अछि। जकर उत्कृष्टतम रुप विद्यापतिक रचना सँ भेटैत अछि।

एहि प्रकारक मिथिलामे भक्तियो गीत प्रचलित अछि। जेना- गोसाउनिक गीत, विष्णुपद एवं महेशवानी ओ नचारी आदि। ओना विभिन्न देबी-देवताक जेना - सूर्य, गणेश, राम, कृष्ण, जानकी आदि विषयक पदक से हो उल्लेख अछि।

गोसाउनिक गीत - मिथिलाक प्रत्येक कर्मकाण्डी परिवारमे गोसाउनिक स्थान निर्धारित रहैत छैक। परिवारक कोनो शुभकार्य गोसाउनिक गीतक बिना आरम्भ नहि होइछ। एकर महत्व एहिसँ पता लगावल जा सकैछ जे मिथिलामे एकहुटा एहन कवि नहि छथि जे शक्तिपरक पदक रचना नहिं कयने छथि।

विष्णुपद - एहि प्रकारक पद विष्णुक विभिन्न अवतारक विषय-वस्तु सँ अछि, मुदा मैथिली साहित्यमे कृष्णविषयक पदक बहुलता अछि। जकर रचना शृंगार या भक्ति दुनू रसमे भेल अछि।

शिव पद - एहि पदक मिथिलामे बड़ऽ प्रचलन अछि। एहि प्रकारक पदमे महेशवानी आ नचारीक प्रमुख स्थान अछि। महादेवक विवाहक अथवा हुनका पारिवारिक जीवनक कोनो रोचक प्रसंग महेशवानी थिक। नचारी ओ गीत अछि जकरा लोकभाव तन्मयता सँ नाचि-गाविक वाद्य-यंत्रक संग गबैत अछि। नचारीक उल्लेख 'आइन-ए-अकबरी' सँ सेहो भेटैत अछि। मुदा नचारिक व्यापक

अर्थक पुष्टि जज्ज्योतिर्मल्लक गीतपंचायिका सँ होइत अछि। जाहिमे शिव विषयक नचारीकें अतिरिक्त गणेश, सूर्य, कृष्ण ओ भगवतीक संग-संग योग प्रकारक नचारी, तत्वज्ञानकथन नचारी, अपराध क्षमापन नचारी आदिक पदावली संगृहित अछि।

मिथिलाक सांस्कृतिक प्रसारमे एकर विद्वता आ राजाश्रय सहयोग सहायक सिद्ध भेल। प्राचीनतम प्रमाणसभ भेटैत अछि जे मिथिला बहुत समय धरि वैदिक ओ उपनिषद-विद्याक केन्द्र छल। राजदरबारक संग-संग समाजक छोटको वर्गमे लोक वेस उच्चश्रेणीक विचारक ओ ज्ञानी होति छल। मिथिला राजा जनक स्वयं वैदिक आ उपनिषद शिक्षाक ज्ञाता छलाह। एकरा संग-संग भारतीय षड्दर्शनमे सँ चारिटा दर्शनक विकास मिथिलामे भेल- गौतमक न्याय, कणादक वैशेषिक, जैमिनिक मीमांसा आ कपिलक सांख्यक। ओहि प्रकारेँ कुमारिल भट्ट ओ उदयनाचार्य सेहो मिथिला सांस्कृतिक उपज अथि।

मिथिला संस्कृतिकेँ आगु बढ़ाब' मे राजा जनक, पाल वंश, कर्नाट वंश, ओइनवार वंश आ दरभंगा महराज एवं नेपाल स्थित राजवंशक पैघ योगदान छैन। हिनक संरक्षणमे कतेको विद्वान अनेक पोथीक ग्रंथक रचना कएलनि, जाहिमे मिथिला संस्कृति प्रस्फुटित भेल अछि। कर्णाट नरपति नान्यदेवक संरक्षणमे 'सरस्वती हृदयालंकार' नामक संगीत ग्रंथ लिखल गेल। ज्योतिरीश्वर आ विद्यापति'क पुरुष परीक्षा'क अनुसारें हरिसिंह देव स्वयं संगीतशास्त्रक' मर्मज्ञ छलाह। हरिसिंह देवक नेपालमे पलायनक पश्चात् नेपाल मे पुनः मिथिला संस्कृतिकें मजबूती भेटल। नेपालमे अनेको संगीतसँ संबंद्ध पोथी लिखल गेल जाहिमे जगद्धरक 'संगीत-सर्वस्व' आ जगज्योतिर्मल्लक 'संगीतसारसंग्रह' प्रमुख अछि।

ओइनवार वंशकें संरक्षणमे विद्यापति मिथिला संस्कृतिक ठोस आधार रखलनि। जकरा हुनक परंपराक कवि आगु बढ़बैत रहला। जिनकर आधार अठारहम शताब्दीक धरि बड़ऽ मजबुत छलैन्हि। उन्नैसम शताब्दीमे हर्षनाथ झा, भाना झा ओ चन्दा झा दरभंगा महराजक नेतृत्वमे मिथिला संस्कृतिकें सुदृढ़ता प्रदान कएलनि। मैथिल महिला लोकसंगीतक बड़ प्रेमी छथि। ओ सभ एखनो प्राचीन गीत सभक भास सुरक्षित जोगओने छथि। महादेवी लखिमाओ विद्यापतिक पुत्रवधू चन्द्रकला मध्ययुग मे मैथिल-संगीतकेँ बढ़ओलनि। एम्हर मैथिल लोक संगीत खड़का, शशिपुर, पिलखबाड़, तरौनी, पोखरौनी, ककरौड़, सौराठ, सुगौना, चकौती आदि स्थानमे प्रख्यात अछि। एहि लोक संगीतक संग-संग लोककथा, लोकगाथा आ लोकनाटक सेहो गढ़ल गेल जाहिसँ मिथिला सांस्कृतिक विभिन्न रीति-रिवाजक परिचय भेटैछ। व्रत-तेवहारकें रुपमे छठ, जीतीया, चतुर्दशी, सामा-चकेवा, मधुश्रावणी, भरदुतिया, चौरचन, तीज आदिक मिथिला संस्कृतिमे विशिष्ट स्थान छैक।

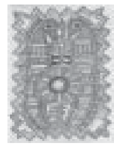
अतः एहि प्रकारें ई कहल जा सकैछ जेँ मिथिला आरम्भिक कालहिसँ धार्मिक ओ सांस्कृतिक क्षेत्रमे समृद्ध अछि। एहि समृद्धिक अनुमान एहिसँ लगाबल जा सकैछ जे एखन धरि ई अपन अनुक्रमता के बनौने अछि। संगहि अपन आस-पासक क्षेत्रके सेहो प्रभावित कऽ ओहिठाम मिथिला सांस्कृतिक ज्योति जलौलक।

(लेखक - आस्था आइ.ए.एस कोचिंग नयी दिल्ली मे मैथिलीक शिक्षक छथि।)

पोथी

मैथिलीक प्राचीनतम ग्रंथ 'वर्ण रत्नाकर'

डा. नारायण झा



कविशेखर ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्णरत्नाकर' मैथिली साहित्यक प्राचीनतम गद्य ग्रन्थ थीक। ओना एहि पोथीक मुख्य उद्देश्य छल- काव्य रचनामे सहायता प्रदान करब मुदा वर्णित विषय-वस्तु एहि पोथीक महत्व कें विशेष रूपेँ प्रतिपादित कयलक तेँ कहल जाइछ- ''वर्णरत्नाकर काव्य नहि काव्योपयोगी ग्रन्थ थीक''।

वर्णरत्नाकरक महत्व सामाजिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं भाषा-वैज्ञानिक दृष्टिएँ विशेष अछि।

सामाजिक :

सामाजिक दृष्टिएँ एहि पोथीक महत्व विशेष अछि। विषय-वस्तुक वर्णनक क्रममे तत्कालीन जीवनक झाँकी पोथीमे प्रस्तुत भेल अछि। एहि सन्दर्भ मे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखैत छथि- प्राचीन मैथिली भाषा के अध्ययन की दृष्टि से यह पुस्तक उत्तम है ही, परन्तु उस समय की सामाजिक रीति-नीति, काव्यरूढ़ि और काव्यरूपों के अध्ययन की दृष्टि से भी यह बहुत उपयोगी है। एक ओर यह 'मानसोल्लास' नामक पूर्ववर्ती संस्कृत ग्रन्थकी श्रेणी में आती है, तो दूसरी ओर परवर्ती फारसी ग्रन्थ 'आइने अकबरी' की कोटि में।

'वर्णरत्नाकर'क अध्ययन ओ विश्लेषण सँ एहि बातक जानकारी होति अछि जे तत्कालीन समाजमे वर्ण-व्यवस्थाक प्रधानता छल। समाज अनेक जातिमे विभक्त छल। समाजमे शुद्र एवं स्त्रीक सम्मान पुरुषक अपेक्षा कम छल। स्त्री पुरुषक विलासमय जीवनक मात्र उपकरण छल। समाजमे जूआ आदि कतेक प्रकारक व्यसन प्रचलित छल। तत्कालीन समाजमे विद्वानक अभाव नहि छ'ल। संस्कृत विद्याक दृष्टिएं ज्योतिरीश्वरक काल स्वर्णयुग छल। स्मृति ग्रन्थक रचना एहि युगक देन थिक। तत्कालीन समाजमे भाषाविद, लिपिवाचक, श्रुतिधर, महाकवि, शास्त्रज्ञ आदि अनेक कोटिक विद्वान छल।

एहि ग्रन्थक अध्ययन सँ तत्कालीन समाजक धार्मिक भावनाक स्वरूप सेहो भेटैत अछि। सम्पूर्ण समाजमे वर्णाश्रम धर्मक प्रति आस्था छल, वेद या ब्राह्मण पर निष्ठा छल, पुरोहितक स्थान मंत्रीक बाद अवैत छल।

अतएव वर्णरत्नाकरक अध्ययन सँ

तत्कालीन सामाजिक जीवनक स्वरूप, रीति-रिवाज, ओ धार्मिक-भावनाक परिचय भेटैत अछि।

ऐतिहासिक :

ऐतिहासिक दृष्टिकोण सँ एहि पोथीक पूर्ण महत्व अछि। तत्कालीन 14म शताब्दीक सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व्यवस्थाक विशद वर्णन एहि पोथी में भेल अछि। ओहि समयक प्रचलित व्यवहार, रीति-रिवाज आदिक वर्णन सेहो एहि पोथीमे भेल अछि। राजदरबारक वर्णनक क्रममे राजा सभ केहन होइत छलाह, हुनकासभक व्यवहार केहन छल, केहन ग्रन्थक प्रधानता छल, आदि विषयक जानकारी एहि पोथी सँ सहजहि भेटि जाइछ।

'वर्णरत्नाकर'मे नारीक नीक एवं अधलाह दूनू पक्षक वर्णन भेल अछि। नायिका, सखी, वेश्या आदिक चित्रण सुन्दर एवं स्वाभाविक रूपेँ भेल अछि।

नायिकाक वर्णन 'वर्णरत्नाकर'मे एहिरूपेँ भेल अछि- ''पूर्णिमाक चाँद अमृत पूरल अइसन मूँह''

''पारिजातक पल्लव अइसन हाथ''

एक दिस नारीक सुन्दर रूपक वर्णन एहितरहेँ भेल अछि तँ दोसर दिस नारीक न्यून भाव कैँ पोथीमे प्रदर्शित कयल गेल अछि। 'श्मशान वर्णन' मे नारीक न्यून भाव एहिरूपेँ प्रस्तुत भेल अछि- ''स्त्रीक चरित्र अइसन दारुण'' एहिना 'अन्धकार वर्णन' मे- ''स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लस्य''।

एहि पोथीक माध्यम सँ मध्यकालीन भारतक सभ्यता-संस्कृतिक परिचय भेटैत अछि। जाहि सँ एकर ऐतिहासिक महत्व बढ़ि जाइत अछि। एहि पोथीक गणना महाराष्ट्रक चालुक्य राजा सोमेश्वर तृतीयक समयमे लिखल गेल- ''**मानसोल्लास**'' नामक पोथीक समकक्ष होइत अछि। भाषा ओ विषय दूनू क्षेत्रमे एक नवीन परम्पराक जन्म भेल। एहि पोथी सँ पहिने संस्कृतमे नाट्यशास्त्र, काव्यादर्श, काव्यमीमांसा, ध्वन्या लोक, काव्यप्रकाश आदि लक्षणग्रन्थक रचना भए गेल छल। किन्तु एहि ग्रन्थसभक विषय छलैक काव्यक विवेचना-पद्धति स्थिर करब,

[illegible]

रस अलंकारक विशद वर्णन उपस्थित करब। तत्कालीन समयमे संस्कृत तथा प्राकृतिक स्थान लोकभाषा ग्रहण करए लागल छल। अतएव ज्योतिरीश्वर समयानुकूल सेहो लोकभाषा मे रचना करब समीचीन बुझलथि आ 'वर्णरत्नाकर'सन सशक्त गद्यक रचना कयलनि। जे जनसाधारणक लेल बोधगम रहल।

कर्णाटवंशक राज्यकाल मिथिलाक लेल स्वर्ण-काल छल। कर्णाटवंशीय राजा हरिसिंह देवक समय मे मिथिलाक सामाजिक, आर्थिक ओ साहित्यिक क्षेत्रमे खुब विकास भेल। हरिसिंह देवक समयमे लोकभाषाक सेहो खुब विकास भेल, जकर परिणाम थिक जे 'वर्णरत्नाकर' सदृश ग्रन्थक रचना भेल।

एहि पोथीक रचनाक उद्देश्य के स्पष्ट करैत म.म. हरप्रसाद शास्त्री लिखने छथि- ''The book gives the poetic conventions. It seems to have guided the genius of Vidyapati.''

साहित्यिक :

साहित्यिक दृष्टिएँ एहि पोथीक महत्ता विशेष अछि। कारण जखन अन्य भारतीय भाषा अपन अभिव्यक्तिक माध्यम तकैत छल, तखनहि 14म शताब्दीमे मैथिलीक ई अमूल्य गद्य ग्रन्थ रचल गेल। आधुनिक भारतीय आर्यभाषामे एहि सँ प्राचीन मात्र 'ज्ञानदेवक मराठी भाषा मे भागवत गीताक टीका 'ज्ञानेश्वरी' टा उपलब्ध अछि, किन्तु एकर विषय दर्शन अछि, जखन कि 'वर्णरत्नाकर'क विषय साहित्य अछि।

एहि पोथीक गद्य प्रौढ़ अछि। पोथीमे देश, नदी तथा पर्वतक वर्णन करबाक क्रममे यमक, अनुप्रास आदि अलंकारक प्रयोग भेल अछि। कल्पनाक अद्भुत चमत्कार दृष्टिगोचर होइत अछि। यथा- 'नायिका वर्णनाक पाँति देखल जाए- ''**जनि कामदेव संसार जीनि आएल**''...। एहिना हास्यरसक वर्णन सेहो काव्यमे प्रस्तुत भेल अछि, जे 'कुट्टनी वर्णना' मे देखला जा सकैत अछि। एहिप्रकारक साहित्यिक चमत्कार कैँ देखि किछु आलोचक एहि पोथी कैँ 'पद्यकाव्य' सेहो कहैत छथि।

अतएव साहित्यिक विशेषताक कतेको उपादान सँ सृजित ई गद्यकाव्य महत्वपूर्ण अछि।

भाषा-वैज्ञानिक :

'वर्णरत्नाकर'क भाषा भाषा-वैज्ञानिक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण मानल जाएत अछि। भारतीय आर्यभाषाक विकासक्रममे एहि पोथीक भाषाक महत्वपूर्ण योगदान अछि। एहिमे तत्सम आ तद्भव शब्दक अतिरिक्त देशी एवं विदेशी शब्दक प्रयोग भेटैत अछि। एहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली भाषा कैँ दोसर भाषाक शब्द कैँ पचएबाक सामर्थ्य ओहि समय धरि भए गेल छलैक। अतएव मैथिलीमे प्रौढ़ता आबि गेल छल।

निष्कर्षत : 'वर्णरत्नाकर' मैथिली साहित्यक परम्पराक प्रतीक ग्रन्थ थीक। एकर महत्व प्राचीनताक संग आधुनिकतामे सेहो अछि कारण जखन आधुनिक भारतीय भाषा सभ अभिव्यक्तिक लेल औनाइत छल, तखन मैथिली एहि प्रौढ़ गद्य कैँ प्राप्त कए चुकल छल।अतएव मैथिली साहित्यक परवर्ती स्वरूपक लेल पथ प्रदर्शकक रूप मे ई काव्य अमूल्य आ अद्वितीय अछि।

-अध्यक्ष,
मैथिली विभाग, डी.बी.के.एन.
कॉलेज, नरहन, समस्तीपुर,
मो. 09431421457, 09431221389



पर्व

मधुश्रावणी : मिथिलाक पारंपरिक हनिमून

धीरेन्द्र प्रेमर्षि



भूगोलसँ विलुप्त भऽ चुकल मिथिला जँ एखनोधरि अस्तित्वमे अछि तँ एकरा पाछाँ एक्केटा कारण छैक एहिठामक लोकवेदमे रहल बौद्धिक ऊर्जा आ मैथिल संस्कृतिमे रहल विलक्षणता एवं वैज्ञानिकता। मिथिलामे जीवनक विविध रोमाञ्चक घड़ि एवं महत्त्वपूर्ण क्रियाकलापकेँ सांस्कृतिक आवरण ओढ़ाकऽ धार्मिकता एवं सामाजिकतासँ आवद्ध कएल गेल छैक। लोकव्यवहार मे प्रचलित क्रियाकलापसभसँ मात्र सेहो ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एकर गर्भमे एखनो बहुतो बहुमूल्य रत्न नुकाएल छैक। एहीसभ कारणे एखनोधरि मैथिल संस्कृति जीवन्त अछि आ मिथिला अस्तित्वमे अछि। आजुक सन्दर्भमे तँ इहो कहब अतिशयोक्ति नहि बुझाइत अछि जे नेपालमे मिथिले एकटा एहन सांस्कृतिक सम्पदा अछि, जकर आङुर धऽ कऽ मधेश नामक राजनीतिक क्षेत्र डेगाडेगी दऽ रहल अछि। भारतदिस सेहो कमसँ कम बिहारक जँ बात कएल जाए तँ ओहिम मिथिला छोड़ि आन कोनो उल्लेख्य सांस्कृतिक सम्पदाक सर्वथा अभावे देखल जाइत अछि।

आइकाल्हि मात्र धार्मिकता आ परम्परागत संस्कारक रूपमे अधिकांश पावनितिहार वा सांस्कृतिक कर्म सीमित होइत गेल पाओल जाइत अछि। मुदा मिथिलाक पावनितिहारमसभकेँ जँ सूक्ष्मतापूर्वक देखल जाए तँ एहिसभक पाछाँ कोनो ने कोनो उद्देश्य निहित रहल स्पष्ट देखबामे आबि जाइत छैक। एकरासभकेँ आओर बेकछाकऽ देखलापर आजुक समयमे सेहो ई पावनि–तिहार ओतबए सान्दर्भिक आ उपयोगी बुझाइत छैक। साओन मासमे मिथिलाक किछु जातिमे नवविवाहित

दम्पतिसभक लेल आयोजन होबऽ वला मधुश्रावणी पावनिकेँ सेहो एही रूपमे लेल जा सकैत अछि। मधुश्रावणी विशेषत: नवविवाहिता स्त्रीसभक लेल आयोजित भेनिहार एकटा एहन धार्मिक अनुष्ठान छियैक, जाहिमे ओसभ धार्मिक रूपेँ तँ विषहराआ महादेव-पार्वतीक पूजा करैत छथि, मुदा एकर गहिराइमे जा देखलापर स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे मधुश्रावणी मिथिलामे मनाओल जाएवला एकटा परम्परागत प्रकृतिक मधुचन्द्रिका अर्थात हनिमून छियैक। मधुश्रावणी मिथिलाक ब्राह्मण, कायस्थ, देव, स्वर्णक आदि जातिमे विशेष रूपसँ मनाओल जाइत अछि।

आधुनिक यौनशास्त्रीलोकनि हनिमूनकेँ वैवाहिक सम्बन्ध सुदृढीकरणक प्रमुख आधार मानैत छथि। तत्कालीन मैथिल विद्वानसभक सेहो एहि पावनिक परम्परा आरम्भ करैत काल इएह मानसिकता रहल होएतनि। प्राय: इएह कारण भऽ सकैत अछि जे मिथिला क्षेत्रमे परम्परागत रूपेँ मधुश्रावणी मनाओल जाएवला ब्राह्मण, कायस्थ, देव आदि जातिमे वैवाहिक सम्बन्धविच्छेदक घटना अपेक्षाकृत कम देखबामे अबैत अछि। जाहिरसन बात अछि जेँ विवाहक बन्धन सक्कत रहैत छैक, तँ एहिमे आगाँ चलिकऽ दुर्घटना कम होइत छैक। लोकलाजक भय वा स्त्री जातिक लेल डेग-डेगपर लगाओल जाएवला वर्जना मात्र जँ 'जबर्दस्ती दाम्पत्यक गाड़ी' घिचबाक कारण रहितैक तँ मिथिलाक आनो जातिमे वैवाहिक सम्बन्ध ओतबए सुदृढ रहितैक, जतेक मधुश्रावणी मनौनिह जातिमे।

तहिया एखनजकाँ 'हनिमून' क लेल बाहर जएबाक अवस्था नहि छलैक। भऽ सकैत छैक जे यातायातक असुविधा एकर प्रमुख कारण रहल हो। मुदा नवविवाहित दम्पतिकेँ किछु उत्फुल्लता, किछु उन्मुक्तता भेटबाक चाही एहि बातक निष्कर्ष तत्कालीन विद्वानलोकनि निकालने होएताह। एकरा लेल ओलोकनि कामोद्दीपनक दृष्टिएँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानल जाएवला बरसाती महिना साओनक चयन कएने होएताह। धार्मिकताक सङ्ग आबद्ध कऽ एकरा व्यापकता देल गेल होएतैक। साओनक मधुरताक आभास करएबाक सन्दर्भमे तथा यौनसम्बन्ध सुदृढीकरणक दृष्टिएँ आवश्यक तत्त्वसभ समाहित कऽ एकरा एकटा परम्परा बना देल गेल होएतैक। एहि नान्हिटा लेखमे वैज्ञानिक दृष्टिएँ मैथिल संस्कृतिमे पाओल जाएवला सम्पूर्ण सार्थक पक्षसभक विस्तृत चर्चा करब सम्भव नहि अछि। मुदा एतबा अवश्य कहल जा सकैत अछि जे मैथिलीक अधिकांश संस्कार, आचार-विचार एवं व्यवहारमे डेगडेगपर वैज्ञानिक आधारसभक प्रचुरता पाओल जाइत अछि।

यौनविज्ञानक दृष्टिएँ जँ देखल जाए तँ मधुश्रावणी पावनिक अत्यन्त विशिष्ट महत्त्व अछि। सामान्यतया ई पावनि मनाओल जाएवला जातिसभमे विवाहक बाद लड़का सासुरमे रहैत अछि। परम्पराक जँ बात करी तँ चारि दिनक बाद ओकरासभक चतुर्थी अर्थात प्रथम मिलन होइत छैक। एहि चारि दिनधरि वरकनियाँ दुनूकेँ नोन नहि खाए देल जाइत छैक। चारिम दिन भोजनमे माछमासुसन सुरुचिकर एवं तामसी खाद्यवस्तु समाविष्ट रहैत छैक, जे कामोद्दीपनक दृष्टिएँ सेहो विशेष महत्त्व रखैत अछि। एहिठाम संस्कृतिक अन्तर्वस्तुक रूपमे नुकाएल मनोविज्ञान दऽ विचार कएल जा सकैत अछि। वस्तुत: ई चारि दिन वरकनियाँक रूपमे दू अपरिचित प्राणीकेँ भावनात्मक रूपेँ लग अएबाक लेल देल गेल विशेष अवसर छियैक। कारण, यौनशास्त्रीलोकनिक कहब छनि जे जाधरि स्त्रीपुरुष दुनू भावनात्मक रूपेँ निकट नहि होएत, ताधरि सफल यौनसम्बन्धक स्थापना नहि भऽ सकैत छैक। समाजमे जहिया प्रेमविवाहक सम्भावना नहिजकाँ छलैक, तहिया एही भावनात्मक निकटताक लेल ई चारि दिन देल जाइत छलैक। जँ एना नहि रहितैक तँ सामान्यतया आन जातिमे विवाहक प्रातेभने मनाओल जाएवला सुहाग-रातिक लेल ब्राह्मणकायस्थदेव आदि जाति किएक चारि दिनधरि उपास रखितथि। शिक्षादीक्षाक मामलामे तत्कालीन समयक सर्वाधिक अग्रणी मानल जाएवला एहि जातिसभमे कोनो रूढ़िक कारणे तँ एहन बात नहिएँटा भऽ सकैत छलैक! अस्तु।

विवाहसँ चतुर्थीधरि भावनात्मक रूपेँ लग अएबाक लेल चारि दिनक समय तँ देल जाइत छैक। मुदा अवस्थाजन्य कारणकेँ देखैत एकटा खतरा बनले रहैत छैक। खतरा ई जे आगि आ खढ़क बीच निकटता भेलापर धधरा ने पजरि जाए वा कही युवा मोन बहकि ने जाए! तकरे सावधानीस्वरूप ओकरासभकेँ नोन नहि खाए देल जाइत छैक। नोन नहि खाएल अवस्थामे ओहुना लोक शारीरिक आ मानसिक रूपेँ शिथिल भऽ जाइत अछि। निश्चित रूपेँ अनोनाक अभीष्ट इएहटा भऽ सकैत छैक जे नवविवाहित वर-कनियाँमे आवश्यक तैयारीसँ पूर्वहिँ काम-भावना नहि भड़कि जाइक। चारिम दिनक मधुर-मिलनक लेल फेर नोनक सङ्ग-सङ्ग भोजनमे सेहो विशेष रूपसँ नीक-निकुतक ओरिआओन कएल जाइत छैक। ई भोजन सामग्री शारीरिक रूपसँ वर-कनियाँकेँ तैयार करैत छैक। जखन कि मानसिक रूपेँ उद्वेलित करबाक काज करैत रहैत छैक साँझ-कोवर आदि गीतमे व्यक्त भेनिह प्रेम-प्रसङ्ग। समग्र रूपमे बढ़ैत मानसिकशारीरिक उद्वेलनक भावमे चुहलवाजीक छौँक लगएबाक काज करैत छैक डहकनक झँसगर पाँतिसभ।

एहि तरहेँ चतुर्थीमे भावनात्मक रूपेँ शारीरिक सम्बन्धकेँ सुदृढ बनएबाक प्रयत्न कएल जाइत छैक। एहिठाम फेर जँ परम्पराक गप्प करी तँ ई देखल जाइत अछि जे पहिने एहि जातिसभमे विवाहक बाद सासुरसँ विदाह भऽ कऽ अएलाक बाद वर एक्कहिबेर मधुश्रावणीएमे पुन: सासुर जाइत छल। तँ विश्वास कएल जा सकैत अछि जे कनियाँवरक एहि दोसर मिलनकेँ पुन: शारीरिक सम्बन्धक प्रगाढ़तासँ भावनात्मक सम्बन्ध सुदृढ करबाक सांस्कारिक संयन्त्रक रूपमे विकसित कएल गेल हो।

एहि पावनिमे नवविवाहिता तेरहसँ लऽ पन्द्रह दिनधरि विषहरा आ गौरीक पूजा करैत छथि। एहि पूजाक लेल फूल लोढ़ऽ ओ स्वयं गेल करैत छथि आ सङ्गमे रहैत छनि हुनक सखीबहिनपासभ। फूल लोढ़ब मूलत: बहाना होइत अछि। असली काज रहैत छैक घुमफिर आ गप्पसप्प। जखने कोनो नवविवाहिता अपन सखीबहिनपासभक सङ्ग घुमफिर करऽ

कतहु जाएत तँ ओकरासभक बीच गप्पक विषय की भऽ सकैत अछि, से सहजहिँ अनुमान लगाओल जा सकैत अछि। निश्चित रूपेँ गप्पक विषय ओकर पति, ओकरासभक अनुभव आदिइत्यादि रहैत होएतैक। ई बातचीत यौनभावनाकेँ तीव्र करबामे आ यौनसम्बन्धी विविध जिज्ञासासभक समाधानमे सेहो सहायक होइत छैक। बादमे पूजाकालमे वरकनियाँ दुनूकेँ संगहि राखिकऽ शिवपार्वतीक विभिन्न प्रसङ्गक बखान करैत यौनसम्बन्धी खिस्सासभ प्रतीकात्मक रूपेँ सुनाओल जाइत छैक। दुनू युवामनकेँ प्रेम आ कामभावना बढ़एबामे ई खिस्सासभ उपयोगी भेल करैत छैक। एकरा बाद फेर विवाहकालमे बनल कोहबर तँ वरकनियाँ लेल अजबले रहैत छैक। आ, ई क्रम निरन्तर तेरहसँ लऽ पन्द्रह दिनधरि चलैत रहैत छैक। निश्चित छैक जे एतबा अवधिमे वरकनियाँ एकदोसराक सङ्ग शारीरिक आ मानसिक दुनू दृष्टिएँ बेस लग आबि जाइत छैक, जे कि आजुक आधुनिक वैज्ञानिक समाजक हनिमून आ तत्कालीन परम्परागत मैथिल समाजक मधुश्रावणीक अभीष्ट सेहो छियैक।

मिथिलाक संस्कृतिमे यौनकेँ बड़ बेसी महत्त्व देल गेल छैक। मुदा कतेको लोक एकरा धर्मक ससरफानीमे तेना ने गछाड़िकऽ राखि देने छथिन जे आमलोक आगाँपाछाँ किछु सोचिए नहि सकैत अछि। तँ जखन ई कहल जाइत अछि जे मधुश्रावणी यौनविज्ञानक अभिमञ्चनसम्बन्धी पावनि अछि तँ कतेको मैथिल महामनासभ बमकि उठैत छथि। किएक तँ ओ एहिमे महादेवपार्वतीसँ बेसी किछु देखिए नहि सकैत छथि। मधुश्रावणीमे पूजित विषहरा (नाग) दू रूपेँ महत्त्व रखैत छथि। साहित्य वा ललितकलामे जे प्रतीकसभ प्रयोग कएल जाइत अछि, ताहिमे माछकेँ स्त्री जननेन्द्रिय, साँपकेँ पुरुष जननेन्द्रिय, काछुकेँ सम्भोग, बाँसकेँ वंश आदि मानल जाइत अछि। नवविवाहिता प्रतीकात्मक रूपेँ विषहराक पूजा करैत पुरुष जननेन्द्रियक महत्त्व बूझैत छथि। दोसरदिस प्रकृति संरक्षणक लेल सेहो साँप महत्त्वपूर्ण अछि। तँ भलहि ओ विषधर अछि, मुदा ओकर संरक्षण होएबाक चाही, से सन्देश एहिसँ जाइत अछि।



मधुश्रावणीक खिस्सामे सेहो तेहने बातसभ बेसी अबैत छैक। जेना विषहराक जन्मेक सम्बन्धमे उल्लेख अछि एकबेर महादेव आ पार्वती जलक्रीड़ा करैत सम्भोग कऽ रहल छलाह। तेहनेमे महादेवक वीर्य स्खलन भऽ गेलनि। ओहिसँ विषहराक जन्म भेल। तहिना गौरीकेँ छिनारि बनएबाक प्रसङ्ग सेहो मधुश्रावणीक खिस्सामे आएल अछि। किछु फकड़ामे सेहो एहि तरहक बातसभ आएल अछि। जेना बैरसी आ युवतीबीचक संवादमे कहल गेल अछि ऊँचे आरि ऊँचे धूर ऊँचे त खरिहान रे, ताहूसँ जे ऊँच देखल गौरीके भथियान रे। एही तरहेँ गौरीक आङ, गौरीक स्तन आदिक वर्णन सेहो बड़ रसगर अन्दाजमे कएल गेल अछि। मैथिल संस्कृतिमे यौनकेँ कतेक महत्त्व देल गेल छैक, तकर अनुमान अहिबक फड़ नामक पकवानक रूपरंग आ नामसँ सेहो स्पष्ट भऽ जाइत अछि। तँ निःशङ्क भऽ कऽ कहि सकैत छी जे मधुश्रावणी यौनभावना आ यौनशिक्षाक महापर्व छियैक। साओन मासमे पड़लासँ ई अपन सार्थकताकेँ आओर बेसी पुष्टि करैत अछि। कारण हम एकटा एहन जोड़ीकेँ जनैत छी जे विवाहक डेढ़ दशक गुजरि गेलाक बादो जखन वर्षा होबऽ लगैत छैक तँ कलेजमे पढौनाइ छोड़िकऽ दौड़लदौड़ल डेरा पहुँचि जाइत छथि। एहिमे ओहि मित्र दम्पतिसँ बेसी काज साओनक मादकता करैत छैक। आखिर एकरे ने मैथिल संस्कृति सहेजने अछि।

आइकाल्हि मात्र सतही दृष्टिएँ देखनिह किछु तथाकथित महिला अधिकारवादीसभ मधुश्रावणीक क्रममे कनियाँकेँ टेमी देल जाएवला रीतिकेँ महिलाहिंसाक एकटा रूप मानैत एकर विरोधो करैत देखल जाइत छथि। एहि विरोधक पाछाँ हमरा एक्कहिटा कारण नजरि अबैत अछि हुनकासभमे मैथिल संस्कृतिक विशिष्टताक सन्दर्भमे रहल अज्ञानता। टेमी देबाक विधिमे कनियाँक ठेहुनमे पानक पात राखि उपरसँ जरैत टेमीसँ छुआओल जाइत छैक। निश्चित रूपेँ ई सामान्य पीड़ादायक सेहो होइते होएतैक। मुदा की स्त्री जातिकेँ प्रथम संसर्गमे ओ सामान्य पीड़ा नहि होइत छैक? वस्तुतः ई ओकरे एकटा कड़ी छैक, जाहिमे ई सङ्केत देल जाइत छैक जे यौनसम्बन्ध जँ बड़ आनन्ददायक होइत छैक तँ ओहिमे स्त्रीकेँ पीड़ासँ सेहो साक्षात्कार करऽ पड़ैत छैक। एकर पृष्ठभूमिमे एकटा एहू पक्षकेँ लेल जा सकैत छैक जे भऽ सकैछ, पहिनेपहिने मधुश्रावणीएक समयमे वरकनियाँबीच प्रथम शारीरिक मिलन होइत रहल होइक आ तकरे आभास करएबाक लेल ई प्रथा चलाओल गेल हो।

एकटा दोसर कारण इहो मानल जाइत अछि जे मिथिलामे यवनसभक आक्रमण भेलाक बाद ओकरासभक कुदृष्टि नवकनियाँसभपर बेसी पड़ैत रहैक। ओकरासभसँ बचएबाक लेल कनियाँकेँ कनेक आगिसँ जरा देल जाइक, जाहिसँ ओसभ ओकरादिस ध्यान नहि दिअए। कारण मुसलमानसभ जरनाइकेँ बहुत खराब मानैत अछि। पं. सूर्यकान्त झा ई तर्क आगाँ बढ़बैत कहैत छथि एही कारण मुइलाक बादो ओकरासभकेँ जराओल नहि जाइत छैक, गाड़ल जाइत छैक। संस्कृतिविद स्व. प्रो.

नमोनायण झाक एहि विषयमे तर्क छनि जे ठेहुनपर कोनो नस एहन रहैत होएतैक, जकरा प्रभावित कएलापर यौनसम्बन्धी ग्रन्थीसभमे सकात्मक असर पड़ैत होइक आ ताहीक अन्तर्गत ई प्रक्रिया शुरू कएल गेल हो। स्वास्थ्योपचक चीनी पद्धति अक्यूपङ्चर, अक्यूप्रेसर आदिपर ध्यान देलापर एहू बातमे विश्वास करबाक यथेष्ट आधारसभ बनैत छैक।

टेमीक एकटा बातकेँ लऽ कऽ नेपालक मिडिया आ मिथिलाक यथार्थसँ दूरदूरधरिक कोनो सम्बन्ध नहि रखनिहारि किछु महिलावादीसभ किछु सालपूर्व एक्के टाङपर खूब नाचल रहथि। एहि नामपर ओसभ मधुश्रावणीकेँ मात्र नहि, सम्पूर्ण मैथिल विवाह पद्धतिकेँ बदनाम करबापर लागल छथि। एना देखलापर ओ व्यक्तिसभ हमरा ओहने कोनो अज्ञान नेनाजकाँ लगैत अछि, जे दूटा साँपकेँ आपसमे जोड़ लगैत देखलापर बापबाप चिचिया उठैत अछि जे साँपक झगड़ा भऽ रहल छैक। पीड़ा टेमीएटामे नहि होइत छैक। रोग निवारणक लेल लगबाओल जाएवला सुइयामे सेहो पीड़ा होइत छैक। मूहकानक सिंग लेल नाककान छेदएबामे सेहो पीड़ा होइत छैक। सुन्दर आ हाथ लागल चूड़ी पहिरबामे पर्यन्त पीड़ा होइत छैक। तखन बुझबाक जरूरति ई रहैत छैक जे पीड़ाक प्रयोजन की? नाककानमे भूर कऽकऽ शरीरकेँ खण्डित कएनाइ आ कि नाककानमे लटकऽ वला गरगहनाक सौन्दर्यसँ आनन्दित भेनाइ? टेमीक सन्दर्भमे सेहो इएह बात लागू होइत छैक।

ओहुना टेमी यौनशिक्षाक पावनि मधुश्रावणीक एकटा अङ्ग छियैक। यौनक्रियाक आरम्भ तँ पीड़ासँ होइतहिँ छैक, वात्सायनक कामसूत्रकेँ जँ आधार मानल जाए तँ नखक्षत, दन्तक्षत आदि विधिक चर्चा सेहो अबैत छैक जे नीक उद्दीपनमे सहयोगी मानल जाइत अछि। एतबए नहि, नारीकेँ जीवनक सर्वाधिक सुखकी प्रक्रिया सन्तानोत्पादनमे सेहो असह्य पीड़ासँ गुजरऽ पड़ैत छैक। यावत पक्षसभपर विचार करैत गेलापर मधुश्रावणीमे देल जाएवला टेमी पीड़ा पहुँचएबाक उद्देश्यसँ नहि, अपितु स्वस्थकर यौनजीवनक लेल आरम्भहिमे लगाओल गेल टीकाकरणक एकटा प्रक्रिया छियैक। एकरा एहू लेल हिंसा वा प्रताड़नाक रूपमे नहि देखल जा सकैत अछि, किएक तँ ई प्रक्रिया प्राय: नवकनियाँक नैहरमे भेल करैत छैक। नैहरमे कनियाँक काकी, दिदी आदिसँ ओकरा पीड़ा पहुँचएबाक हिसाबेँ कोनो काज निश्चिते नहि भऽ सकैत छैक।

हँ, टेमीक सङ्ग जोड़िकऽ किछु अनर्गल बातसभक प्रचार अवश्य भऽ रहल छैक। जेना टेमी देल जगहपर जँ फोका भेल तँ पति बेसी मानत। वा ई सतीत्वक अग्निपरीक्षा छियैक।

> ØõÙç߆™ãæÙ·¤½ëçC°¡Á¡½ð¹Ü Áæ°Ì¡×ÏéÝãæß¦ãæè ÂãæßçÙ·¤ ¥ˆØ‹Ì çßçàæC×ã•ß¥çÀUÐ âæ×æ×ØÏØæ §ü ÂãæßçÙ ×Ùæ¥ãæðÜ Áæ°ßÜæ ÁæçÌâÖ×ð çßßæã·¤Õæ¼ ÜçÛ·¤æâæâéÚ×ðÚãÌ¥çÀUÐ ÂÚU•ÂÚUæ·¤Á¡ÕæÌ·¤Úè Ì¡ ¿æçÚU ç¼Ù·¤Õæ¼¥æð·¤ÚUæâÖ·¤ ¿ÌéÌèü¥ÎæüÌ ÂýÍ× ç×ÜÙ ãôßÌ ÀñU·¤Ð °çã ¿æçÚU ç¼ÙÏçÚU ßÚU·¤çÙØæ¡ ¼éÙê·¤ð¡¤ÚUôÙÚUçã ¹æ° ½ðÜ Áæß¼Ì ÀñU·¤Ð

जकरा फोका नहि भेलैक से दुश्चरित्र अछि, आदिआदि। मुदा ईसभ समयक्रममे जुटैत गेल बकबाससभ छियैक। भऽ सकैछ जे कहियो ककरो टेमी दैत काल बेसी पाकि गेल हेतैक आ फौँका भऽ गेल हेतैक तँ टेमी देबऽ वाली ओकरा भरोस देबऽ दुआरे कहि देने हेतैक जे जकरा जतेक पैघ फोका होइत छैक, तकरा घरवला ततेक बेसी मानैत छैक।

टेमी तहियाक प्रचलन छैक, जहिया मिथिलामे आधुनिक शिक्षाक प्रसार नहि भेल छलैक। ओहि समयमे वरवधुकेँ यौनशिक्षा देबाक कोनो भरोसगर माध्यम सेहो उपलब्ध नहि छलैक। मुदा आइ युवायुवतीसभ अपन पाठ्यपुस्तकसँ लऽकऽ अन्य अनेको माध्यमसँ सेहो ई शिक्षा आसानीसँ प्राप्त कऽ सकैत छथि। तँ उपयोगिताक दृष्टिएँ मधुश्रावणी आ मधुश्रावणीक टेमी किछु आवश्यक नहि रहि गेलैक अछि। मुदा हमरासभक संस्कृति लोककल्याणक पक्षकेँ एतेक गहियाकऽ धएने अछि, से बात विश्व समुदायकेँ कहबाक लेल मात्र सेहो एहि तरहक संस्कृतिक संरक्षण आवश्यक छैक। हँ, एहिमे जतऽ कतहु विकृति नजरि आबए, ओहिमे सुधार वा परिमार्जन आवश्यक भऽ जाइत छैक। जेना कि राजविराजमे मैथिल महिला परिषदक अगुआइमे टेमी बन्द करएबाक अभियान चलाओल गेल अछि। ई सर्वथा उचित बात अछि। किएक तँ मिथिलामे कोन चीज कतबाधरि पाच्य अछि आ कतबा अपाच्य अछि, तकर निर्णय करबाक अधिकारी मिथिलेवासीसभ भऽ सकैत छथि। मैथिल नारीकेँ जँ कतहु प्रताड़ित भेलसन बुझाइत छनि तँ एकरो आवाज मैथिले नारीकेँ उठएबाक चाहियनि। आनकेँ तँ की छैक, कोनो मैथिल महिलाक सीँथमे लागल सिन्दुर देखिकऽ कहि सकैत अछि, बाप रे बाफ, मिथिलाक नारीपर बड़ अत्याचार होइत छैक। ओकरा पुरुषसभ एतेक प्रताड़ित करैत छैक जे सभ दिन ओकर माथ फुटले रहैत छैक।

आइकाल्हि आधुनिक विचारधाराक लोकसभ परम्परागत अधिकांश पक्षकेँ अन्धविश्वास वा कुरीतिक रूपमे व्याख्या करैत छथि। मुदा मैथिल संस्कृतिमे बेसी एहने पक्षसभ अछि, जे निरर्थक नहि अछि, पूर्णत: स्वार्थक अछि। आजुक आधुनिक समाजपर्यन्त एहि संस्कृतिसँ बहुतो कल्याणकी तत्त्वसभ ग्रहण कऽ सकैत अछि। एहन स्थितिमे संस्कृतिकेँ एक्कहि झटकामे तोड़ि फेकबाक धारणा रखनिहार लोकसभकेँ चाहियनि जे ओ एकबेर अपन ज्ञानचक्षु उघारिकऽ अपन संस्कृतिक सिंहावलोकन करथि, तकरा बादहि एकरा विषयमे कोनो मत बनाबथि। आ, हम तँ ई कहऽ चाहब जे वर्तमान समयमे भयानक आर्थिक तङ्गीसँ गुजरि रहल सम्पूर्ण मिथिलावासीकेँ चाही जे ओ मधुश्रावणीसन जीवन्त पावनिकेँ अङ्गीकार कऽ घरहि बैसल अपन बेटापुतहुकेँ, बेटीजमाएकेँ हनिमूनक मौका उपलब्ध कराबथि, मिथिलाक सांस्कृतिक विशिष्टताक संरक्षणसम्बर्द्धन करथि।

वितर्क

मिथिलासँ पलायन

गजेन्द्र ठाकुर



मिथिलामे बाहरी लोकक आगमन आ मिथिलासँ दूर देशमे पलायन, ई दुनू घटना निरंतर होइत रहल अछि। मुदा आइ कालिक पलायन एहि अर्थें विकट रूप लऽ लेने अछि कारण विगत तीस सालक अवधिमे भेल पलायन मिथिला गामकेँ खाली कऽ देलक। 1981 ई. मे पटनापर बनल महात्मा गाँधी सेतु आ पटना दरभंगा डीलक्स कोच सभक पाँती मिथिलावासीक हँजकहँज बाहर बहरएवामे योगदान केलक। तत्कालीन सरकार सभक राजनैतिक आर्थिक शैक्षिक सामाजिक आ सांस्कृतिक एहि सभ क्षेत्रमे विफलता एकटा आधार तँ बनबे कएल, स्वतंत्रताक बादक तीस साल बिहार स्थित मिथिला आ नेपाल स्थित मैथिली भाषी क्षेत्रक बीचमे एकटा विभाजक रेखा सेहो खींचि देलक। 1960 ई. मे बनल कमला बान्ह आ एखन धरि अपूर्ण कोसी परोयोजना मिथिलाक ग्रामीण आर्थिक आधारकेँ तोड़ि कऽ राखि देलक। प्राचीन कालक पलायन आ आइ काल्हिक पलायन मध्य एकटा मूल अंतर सेहो अछि। मिथिलाक मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण काएस्थ अपन विद्वत्ताक प्रदर्शन, पठन पाठन आ दोसर राजाक दरबारमे जीविकोपार्जन निमित्त प्राचीन कालहि सँ जाइत छलाह, तँ गएर मैथिल ब्राह्मण कर्ण कायस्थ जाति वाणिज्य, अंगरक्षक आदिक कार्य लेल दूर देशक यात्रा करैत छलाह। प्राचीन कालमे मोरंग आ पछाति भदोही मिथिलाक बोनिहक श्रम किनबाक केन्द्र बनल, मुदा एहिमे मोरंग नेपालक मिथिलाञ्चलमे पड़ैत अछि मुदा एकरा प्रवास एहि लेल कहल जाए लागल कारण ओतुक्का शासक गएर मैथिल गोरखा भऽ गेल छलाह।

पलायनक विभिन्न स्वरूप : पलायन एकटा ऐतिहासिक प्रक्रियाक अंग अछि। अहाँक क्षेत्रक भौगोलिक स्थिति कोन देशमे अहाँकेँ पटकि देने अछि ताहिपर सेहो। से मोरंग लग रहलोसँ भारतक मिथिलाञ्चलक वासीक लेल पछाति कम लोकप्रिय भेल कारण ओ दोसर देशमे अवस्थित भेलाक कारण विभिन्न कारणसँ पलायनक लेल अनुपयुक्त भऽ गेल। कोलकाता स्वतंत्रताक बाद निकटवर्त्ती मेट्रो नगर रहए से लोक ओहि नगरमे खूब पलायन केलन्हि मुदा जखन विभिन्न राजनैतिक-आर्थिक नीतिक संकीर्णताक कारणसँ बंगालक उद्योगधंधा चौपट भऽ गेल, शैक्षिक केन्द्रक रूपमे ओकर

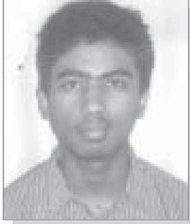


महत्व कम भेल तखन पलायनक केन्द्र मुम्बइ आ दिल्ली भऽ गेल। बोनिहार आब भदोही आ मोरंग नञि वरन पंजाब हरियाणा आ पश्चिमी उत्तरप्रदेश जाइत छथि आ बनिज बाहरसँ मिथिलामे भरि गेल छथि। दरभंगा राजक गलत आर्थिक नीतिक कारण आरा छपराक लोक सभ भूमि आ कामतक अधिपति कोना भऽ गेलाह से जगदीश प्रसाद मण्डल जीक साहित्यमे पूर्ण रूपसँ देखल जा सकैत अछि। 1936-37मे बर्मासँ सेहो भोजपुर बक्सरक लोक पूर्णियाँ, अररियामे भागि कऽ एलाह, डुमराँवक हरि बाबू हिनका सभकेँ बर्मामे बसेने छलाह आ बर्माक भारतसँ अलग भेलाक बाद ई लोकनि शरणार्थी बनि एहि क्षेत्रमे आबि गेलाह। कतेको बर्मा टोल एहि क्षेत्र सभमे अहाँकेँ भेटि जाएत। एहि क्षेत्रमे कृषिवाणिज्यपर हिनको सभक दखल भेलन्हि। मिथिलामे भेल पलायनमे 1971 ई. मे बांगलादेशक निर्माणक लगाति ओतुक्का हिन्दूक किशनगंजमे आ बादमे ओतुक्का मुस्लिमक पूर्णियाँ किशनगंजमे आगमन भेल। बाहर भेल पलायनक विरूद्ध भीतर आएल ई पलायन मिथिलाक बोलीवाणी सभ वस्तुकेँ प्रभावित कएलक। जातिधर्म आधारित विवाह मुस्लिम, राजपूत आ भूमिहार मध्य मिथिलाक भौगोलिक परिधिसँ बाहर हुअए लागल ताहिसँ सेहो बोलीवाणीक अंतर दृष्टिगोचर भेल।

पलायन नीक आकि अधलाह : पलायन जे बाहर जाइ वला आ भीतर आबै वला दुनू तरहक अछि कँ अहाँ कोनो तरहेँ नहि रोकि सकै छी। मुदा एक शताब्दी मध्य भेल ई विकट पलायन मूल मैथिल बोलीवाणीक पलायन विकट समस्याकेँ जन्म देलक। भुखमरी जे वादि-अकाल आनलक, तकरासँ तँ मुक्ति भेटल मुदा सांस्कृतिक अकाल सेहो ई आनलक। गामपर बोझ घटल, लोककेँ बटाइ लेल जमीन नै भेटै छलै, आब से भेटै छै, मुदा तकर विपरीत मिथिलाक भीतर शैक्षिक केन्द्रक पूर्ण समापन भऽ गेल, बाहरी बनिज एतुक्का आर्थिक बाजार पर कब्जा कऽ लेलन्हि। विशालकाय सड़क परियोजना, आ सूचना प्रौद्योगिकी, टेलीविजन, अखबार, पत्रिका आदि ततेक पूँजी केन्द्रित भऽ गेल जे ई स्थानीय वणिकक औकातिक बाहरक वस्तु भऽ गेल। क्षेत्रक राज्यसभा आ विधान परिषदमे जखन बाहरी पूँजीपति प्रवेश कऽ गेल छथि तखन आर कथूक चर्च की करी?

पलायनक निदान : बिना पलायन केने काज नै चलत। जेना इस्रायलक प्रवासी ओकर शक्तिसिद्ध भेल छथि तहिना मैथिल प्रवासी सेहो मिथिलाक लेल ओतुक्का भाषा संस्कृति साहित्य आ अर्थनीतिक लेल सहायक सिद्ध हेताह। मिथिला राज्यक मांगमे बीचक स्थिति जेना बिहारक अंतर्गत मैथिली भाषी क्षेत्रमे प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली हो, मैथिलीक रेडियो स्टेशन, टी.वी, चैनल लेल कम लाइसेंस फीस राखल जाए, इ मैथिली पत्रपत्रिकाकेँ सरकारी विज्ञापन भेटए आदि मांगआदि सेहो घोंसियेबाक चाही। राज्य जहिया भेटत तहिया भेटत उपरका 2-3 बिन्दु जे भेटि जाएत तँ एकटा उपलब्धि होएत आ लोकमे तखने जागृति आएत तखने ओ मिथिला राज्य एकर आर्थिक शैक्षिक राजनैतिक स्थितिपर ओ विचारकऽ सकताह आ आंदोलनक भाग बनि सकताह।

मैथिल प्रतिभा



ŸæèÚUþæÁèÌ çÿæ ×ñçÅþU·¤·¤ÂÚUèÿææ ×ð´ ÂýÍ× Ÿæð‡æè ×ð´ @Uææèþæü ÖðÜæãUÐ ãæÜUÌ·¤æÂææ¿ çßáØ×ðÜÚðÅUÁÚUãæU ·éÔÜ zwv ¥¢·¤ ÂýæŒÌ ÖðÜçÜÐ ¥æð ŸæÔè àææéÖ·¤ææ¢Ì ç×Ÿæ ¥æ ŸæÔè×Ìè ¥ÙèÌæ ç×Ÿæ·¤ (»ýæ× âçÚUÜâÕ, Âæð. ÕðÙèÂ^¹iÙè, çÁÜæ - ×Ï鑺ÙUè) âé¢ÌæÙ ÀUçÍÐ



âÈ ŸæèÚUÜàæè ·éÔ×æÚUè Ûææ ×ñçÅþU·¤·¤ÂÚUèÿææ ×ð´ ÂýÍ× Ÿæð‡æè ×ð´ @Uææèþæü ÖðÜæãUÐ »ç߇æÌ ·¤ °Ô ãUæ§ü çÅU·¤ âŸææÚUè àæçÜàæè ·¤ð ¿æçÚU çßáØ ×ð´ ÜðÅUÚUÚU âãæU |~ ÂýçÌàæÌ ¥¢·¤ ÖðÅUÜ ÀñUÐ ¥æð ŸæÔè Âý»æðÎ ·é×æÚU Ûææ·¤ (»ýæ× ·¤ææðÇ¸ÆUÚUæ, çÁÜæ - ×Ï鑺ÙUè) âé¢ÌæÙ ÀUçÍÐ



ŸæèÚU çß·¤æâ ·é×æÚU Ûææ ×ðçÇU·¤Ü ÂýßðàææÚUèÿææ ×ð´ ×®×ð´ ãð v® ¥¢·¤ ÂýæŒÌ ·¤Ú ÂýßðàææðÜ ·ð¤ÜÙ ¿éÜ »ðÜæãUÐ ¥æð çÚUÕéÚUÁ·¤ ¥æ× ×ðçÇU·¤Ü ·¤æòÜðÁ ×ð´ ¥ŠØØÙ ·¤ÚU ÚUãUÜ ÀUçÍÐ ¥æð ŸæèÚUÁÙæÕðÏè Ûææ·¤ (»ýæ× ÂÚUÁðÙè ÕæéÔÚUèØæ ·¤ÅUÙæ çÁÜæ ×Ï鑺ÙUè) âé¢ÌæÙ ÀUçÍÐ



ŸæèÚU çÙÚUÁ ·é×æÚU Ûææ ×ñçÅþU·¤·¤ÂÚUèÿææ ×ð´ ÂýÍ× Ÿæð‡æè ×ð´ @Uææèþæü ÖðÜæãUÐ »ç߇æÌ ·¤ çàææÜæ ÚUæçÁ ·¤ð ÌèÙ âŸææÚUè àæçÜàæè ·¤ð ¿æçÚU çßáØ ×ð´ ÜðÅUÚUÚU âãæU y~ ¥¢·¤ ÂýæŒÌ ÖðÜçÜÐ ¥æð çÕÙæðÎ·é×æÚU Ûææ ¥æ ŸæÔè×Ìè ÂèÙæ Ûææ·¤ (»ýæ× ÌÚUæÚUÚU, Âæð. ŠæÚU ÕÚUçÌ ÂéÚU çÁÜæ - ×Ï鑺ÙUè) âé¢ÌæÙ ÀUçÍÐ



ŸæÔè ç¿ÚU¢ÁèßU çßàæÚUÎ ×ñçÅþU·¤·¤ÂÚUèÿææ ×ð´ â¢Âê‡æü ¥â× ×ð´ ÕèâÚUïŸæ Ûææ·¤ ÂýæŒÌ ·¤ÚU·¤ ÌÚÂý Ÿæ‡æè ×ð´ @Uææèþæü ÖðÜæãUÐ Ú¢U»æÂæÂæ Ú¢ ·¤ð âð´ÅUÂæÜ S·¤êÜ ·¤ð ÀUæ˜æ ç¿ÚU¢ÁèßU ·¤ð zy~ ¥¢·¤ ÂýæŒÌ ÖðÜçÜÐ ¥æð ŸæÔè ÚUæ×ÕæðÜ çßàæÚUÎ ¥æ ŸæÔè×Ìè â¢Áê çßàæÚUÎ·¤ âé¢ÌæÙ ÀUçÍÐ



ŸæÔè ¿¢ÎÙ ·é×æÚU ×ñçÅþU·¤·¤ÂÚUèÿææ ×ð´ ÂýÍ× Ÿæð‡æè ×ð´ @Uææèþæü ÖðÜæãUÐ »ç߇æÌ ·¤ ãÚUÁÜÂè ¿æßËÜÚU âŸææÚUè S·¤êÜ·¤ ÀUæ˜æ ŸæÔè ¿¢ÎÙ ·¤ð ·éÜ z®z ¥¢·¤ ÂýæŒÌ ÖðÜçÜÐ ¥æð ŸæÔè Âßè‡æ ·é×æÚU ¥æ ŸæÔè×Ìè àæãÙæÁ ÏÙßÌè·¤ (»ýæ× ÂÚUÁðÙè ÂçÚUßæÚUÚU Ûææ ÕæÚUÕæ, çÁÜæ - ×Ï鑺ÙUè) âé¢ÌæÙ ÀUçÍÐ



âÈ Ÿææè ¹éàæÕê ·é×æÚUè âèçÚUØÚU S·¤êÜ âçÅUçÈ·¤ð¤ÅU ÂÚUèÿææ (âèÕè°âU) ×ð´ ÂýÍ× Ÿæð‡æè ×ð´ @Uææèþæü ÖðÜæãUÐ »ç߇æÌ ·¤ Ç¸è¤·¤ÆUæÚUÁÜ âãæð ·¤ç¿ÜÁ S·¤êÜ·¤ ÀUæ˜æ âŸææÔè ¹éàæÕê ·¤ð y{U ¥¢·¤ ÂýæŒÌ ÖðÜçÜÐ ¥æð ŸæÔè Âý¼èÂ ·é×æÚU Ûææ ¥æ ŸæÔè×Ìè ÙèÜ× Ûææ·¤ âé¢ÌæÙ ÀUçÍÐ



ŸæÔè ÂýÎè ÂÂ Ûææ ×æŠØç×·¤ S·¤êÜ ÂÚUèÿææ (âèÕè°âU) ×ð´ ÂýÍ× Ÿæð‡æè ×ð´ @Uææèþæü ÖðÜæãUÐ ¥æð »ç߇æÌ ·¤ ×ãUçáü çßlæ×¢çÎÚU ÂçÚU·¤ S·¤êÜ·¤ ÀUæ˜æ ÀUçÍÐ ŸæÔè ÂýÎèÂ ŸæÔè Âý¼èÂ ·é×æÚU Ûææ ¥æ ŸæÔè×Ìè ÙèÜ× Ûææ·¤ âé¢ÌæÙ ¥çÀUÐ

सगर राति दीप जरय

मैथिली कथा आन्दोलन सगर राति दीप जरय क सत्तरिम आयोजन कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा स्थित रमानिवास पर डा. योगानन्द झाक संयोजकत्व मे दिनांक 12 जूनक संध्या 6.30 सँ लऽ दोसर दिन प्रात: सात बजे धरि चलैत रहल। तत:पर एकहत्तरिम आयोजनकभार बेरमा ग्रामाञ्चल; झंझारपुर, मधुबनीक श्री जगदीश प्रसाद मण्डल उठौलनि अछि जे अगिला तीन मासक बाद आयोजित होयत।

प्रत्येक तीन मास पर आयोज्य एहि कथागोष्ठीक नामकरण मैथिली दधीचि बाबू भोलालाल दास द्वारा संचालित एवं लहेरियासराय सँ प्रकाशित मैथिली पत्र-पत्रिकाक दुइ गोट आधार स्तम्भ क्रमश: मिथिला आ भारतीक नामकरणकेँ समाहित कऽ कथा: मिथिला-भारती राखल गेल छल। गोष्ठी दुइ खण्ड मे विभाजित छल। प्रथम उद्घाटन सत्रक अध्यक्षता कयलनि प्रख्यात मैथिली कथाकार डा. रामदेव झा जखन कि भरि राति चलैत कथा सत्र सभक अध्यक्षता कयलनि उदयनाचार्य रोसड़ा कालेज, समस्तीपुरक प्राध्यापक डा. श्री शंकर झा।

प्रख्यात वयोवृद्ध मैथिली साहित्यकार पं. श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' दीप प्रज्वलन कए आयोजनक उद्घाटन कयलनि। अपन उद्‌गार में श्रीमिश्र एहि प्रकारक आयोजनकेँ मैथिली कथाक विकासमे अमूल्य योगदानक रूपमे स्वीकार करैत जनौलनि जे मैथिली कथा मिथिलाक माटि-पानि केँ छोड़ैत जा रहला अछि आ मातृभाषा प्रेमी लोकनिक मातृभाषाक प्रति अनुराग दिनानुदिन क्षीण होइत जा रहल छनि जे नीक भविष्यक सूचक नहि अछि।

मुख्य अतिथिक रूपमे प्रसिद्ध समालोचक डा. रमानन्द झा 'रमण' जनौलनि जे 'सगर राति दीप जरय' नहि केवल मैथिली कथा लेखनक आयामकेँ विस्तृत कयलक अछि अपितु ई भारत-नेपाल सहित विभिन्न क्षेत्र मे रहनिहार मैथिली लेखकलोकनिक बीच सेतुक काज सेहो कऽ रहल अछि। आगूओ जनौलनि जे मैथिली आब इन्टरनेट पर उपलब्ध अछि जे उत्साहवर्धक अछि। एहि तरहक आयोजन सँ नवोदित कथाकार लोकनिकेँ आगू बढ़यबाक तथा नूतन पीढ़ीक निर्माण करबाक अवसर भेटैत छैक।

साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक पूर्व संयोजक डा. सुरेश्वर झा अपन संभाषण मे एहि आयोजनकेँ कार्यशालाक संज्ञा दैत कहलनि जे एहि कार्यशालामे नहि केवल कथालेखनक प्रेरणा भेटैत छैक अपितु एहिमे कथाकारलोकनिकेँ सही मार्गदर्शन सेहो प्रदान कयल जाइत छनि। उद्घाटन सत्राध्यक्ष डा. रामदेव झा कहलनि जे एहि गोष्ठी मे जब कथाकारकेँ प्रोत्साहन, हुनकालोकनिक कथा पर सहानुभूतिपूर्ण विमर्श आ दू पीढ़ीक रचनाकारक कथापर पृथक्कृत सत्र मे विवेचनक आवश्यकता छैक। उद्घाटन सत्रक संचालन डा. श्री मुरलीधर झा कयलनि। एहि सत्र मे शताधिक कथाकार, समालोचक ओ कबिलपुर ग्रामवासी समाजक समुपस्थितिसँ रमानिवास मे मेलाक दृश्य बनल रहल। पदार्पण कयनिहार दरभंगा-लहेरियासरायक गण्यमान्य लोकनि मे डा. मोहन मिश्र, डा. भीमानाथ झा, प्रो. अशोक मारमेहता, डा. कमला चौधरी, डा. वीणा ठाकुर, श्री विभूति आनन्द, डा. धीरेन्द्र नाथ मिश्र, श्रीमती आशा मिश्र, डा. नीता झा, श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप, श्री कमल मोहन 'चुन्न', डा. महेन्द्र नारायण राम, डा. दिलीप झा, डा. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण', आदि प्रमुख छलाह। प्रमुख मैथिली योद्धा डा. श्री वैद्यनाथ चौधरी बैजू सेहो एहि आयोजन मे अपन उपस्थिति दर्ज करबैत जनगणनामे मैथिली लिखयबाक हेतु जन-जनकेँ प्रेरित कयलनि।

एहि अवसर पर मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा जकर तत्वावधान मे ई आयोजन कयल गेल, श्री गजेन्द्र ठाकुरक दिल्ली स्थित प्रकाशन संस्था श्रुति प्रकाशन ओ अन्यान्य प्रकाशन सभक सतरह गोट पोथी ओ एक गोट डी.भी.डी.क विमोचन डा. रामदेव झा, पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', डा. भीमनाथ झा, डा. सुरेश्वर झा, श्रीमती ज्योत्सना चन्द्रम्, डा. वीणा ठाकुर, डा. कमला चौधरी, डा. मोहन मिश्र, डा. आशा मिश्र, श्रीमैथिली पुत्र प्रदीप आदिक द्वारा कयल गेल।

कथा सत्रक संचालन कयलनि प्रसिद्ध कवि ओ पत्रकार श्री अजीत कुमार 'आजाद'। ई सत्र सम भरि राति चलैत रहला। करीब बेयालीस गोट कथाकार कथापाठक हेतु निबन्धन करौलनि जे मिथिला ओ भारतक विभिन्न कोन सँ आबि समवेत भेल छलाल। एहिमे सैंतीस गोट कथाकारक कथापाठ ओ ताहि पर विमर्श भऽ सकल।

स्मृति शेष

मार्कण्डेय प्रवासी



मैथिलीक अग्रिम पांतीक वरेण्य साहित्यकार-पत्रकार **मार्कण्डेय प्रवासी** अकस्मात गत 13 जूनकेँ एहि नश्वर जगतसँ विदा लऽ लेलनि बिना कोनो ककरो शिकाइत कयने, बिना सेवा सत्कार-ग्रहण कयने आ लऽ गेलाह अपना संग ओ सभ गुण जकर अभाव कारणे मैथिली जगत सभ दिन दुर्भिक्षावस्थाक कोरमे अपनाकेँ पबैत रहल अछि। साहित्यक नाड़ी परिचालनक एहि सुविज्ञ ज्ञाताक अवनासण चारूभर अन्हार पसरि गेल अछि।

पत्रकार विनय तरूण



30 वर्षीय युवा पत्रकार **विनय तरूणक** देहांत 23 जून 2010 के भागलपुर के लग में नाथनगर में एकटा रेल दुर्घटना में भऽ गेल। ओ भोपाल सं पत्रकारिताक शिक्षा प्राप्त केने छलाह आ भागलपुर में दैनिक हिन्दुस्तान में काज करैत छलाह। विनय तरूण पूर्णियाक निवासी छलाह। सामजसेवा आ परोपकार लेल हुनकर जीवन समर्पित छलैन्ह। हुनकर निधन सं मिथिलाक एकटा संभावना से पूर्ण पत्रकारक जीवनक पटाक्षेप भ' गेल।

लोकतंत्रक चारिम खूट्टा-घूस-भ्रष्टाचार आ घोटाला

प्रेमकान्त चौधरी



भ्रष्टाचारक विभिन्न रंग-रूप होईत अछि। एकर जड़िक बहुत पत्ता लगेनाई तऽ एखन सम्भव नहि अछि मुदा एकर प्रभाव सऽ हमरा लोकनि प्रभावित छी। भ्रष्टाचार प्राय: सभ युग मे छल से अप्रमाणित अछि। मुदा कोनो ने कोनो रूप मे विद्यमान छल। घूस सऽ भ्रष्टाचारक जनम होईत अछि आ घोटाला वा भ्रष्टाचार सऽ मनुख' चारित्रिक पतन होईत अछि।

प्राचीन भारत में से हो एकर उदाहरण भेटैत अछि मुदा तखन एकर रूप भिन्न छल। वर्तमान समय मे सराकारी खजानाक धन, वा कोनो नैतिक व अनैतिक काज करैवाक लेल घूस देनाई भ्रष्टाचार केऽ जनम दैत अछि। एहि भौतिकवादी जगत मे मनुख कम समय मे सभ किछु पाबै के दौड़ मे नैतिकता सऽ बहुत दूर चलि जाईत छथि आ भ्रष्ट भऽ जाईत छथि आ घोटाला करैत छथि।

स्व. राजीव गांधी अस्सी-नबे केऽ दसक मे एकटा जन सम्मेलन मे कहने छलाह कि केन्द्र सरकार जे एक टाका आहाँ के क्षेत्रक विकास के लेल पठाबैत अछि से एक टाका आहाँ लग पहुँचैत-पहुँचैत पन्द्रह पाई भऽ जाईत अछि। अत: विकासक गति कोना तेज होयत? जखन ओ ई बात कहने छलैथ तखन ओ देशक प्रधानमंत्री छलाह। बहुत कम समय मे ओ ई बात बुझी गेलाह कि देश मे भ्रष्ट मनुखक कमी नहि आ खासक'क सरकारी उच्चाधिकारी सऽ लक कार्यालयक चपरासी तक एहि में लिप्त अछि। एहना स्थिति मे विकासक पहिला तऽ कमजोरे रहत? स्व. राजीव गाँधी जखन ई बात सार्वजनिक रूपे कहलथि तऽ कतेक मौन मे कचोट भेल हेतैन्ह?

एखन हाले मे अप्पन परोसी देश अफगानिस्तानक राष्ट्रपति श्री हामीद करजई जखन दोसर बेर चुनाव जीतला आ पुन: राष्ट्रपति बनलाक बाद बड़ी मरमाहत स्वर मे बाजलाह कि ''देशक सभ सऽ पैघ समस्या अछि भ्रष्टाचार'' "Corruption is the biggest enemy in Afghanistan." कहलनि जे देश मे अधिकांश लोक भ्रष्ट अछि जाहि सऽ काज करबा मे अति असुविधा होईत अछि। प्रशासनिक सेवा, सेना तथा नागरिक सेवामे अति भ्रष्ट लोकनि सभ छथि, ताहि कारणे देश (अफगानिस्तान) संकट मे अछि। घूस-भ्रष्टाचार आ घोटाला सभ आपस मे सम्बंधित अछि वा ऐना कहल जाय कि सहोदर भाय अछि दुनू-एक दोसरक पूरक। आत्मीय-संगी? जतए भ्रष्टाचार नहि ओहिठाम घोटाला। अनेको रूप-रंगक ई भ्रष्टाचार लोक मे समाहित अछि। विभिन्न समाज, देश, सरकारी, अर्द्ध सरकारी, गैर सरकारी प्रशासनिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक शारीरिक-विधानपालिका, न्यायपालिका, वकील, डॉक्टर, अभियंता, सैनिक, अर्द्ध सैनिक बल, इलेक्ट्रोनिक मीडिया आ खास कऽ कऽ प्रिंट मीडिया। सरकारी कार्यालय मे बिना घूसक कोनो काज संभव नहि? भ्रष्ट व्यक्ति मे राजनेता उच्च पद पर आसीन छथि। सम्पूर्ण भारतक कोनो एहन राज नहि जाहि मे भ्रष्टाचारक रोग बा धून नहि लागल होई?



बेसी पांछा नहि, स्वतंत्र भारतक इतिहास मे यदि पछिला बीस-पच्चीस बरख देखी तऽ बहुत रास घटना सब मोन पड़ैत अछि। अर्जुन सिंहक चुरुहट लाटरी काण्ड। सुखरामक किस्सा जनिते छी जे घूसक पाई सऽ बिछैना बना क सुतैत छलाह आ अंतिम समय कोना बितलैन्ह सभ गोटे जनैत छी। दक्षिण भारत के प्रसिद्ध राज्य तमिलनाडु केऽ पूर्व मुख्यमंत्री जयललिताक भ्रष्टाचार तऽ निश्चित रूप सऽ विख्यात अछि। जयललिता आ ममताक जोड़ी तऽ बुझले अछि जे राजग सरकार केऽ प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाकोदम कऽ देने छलैन्ह। जयललिता कुमारी आ ममतो कुमारी आ वाजपेयी से हो कुमार छथि। घोटाला तऽ एतेक प्रभावी होइत अछि जे स्वर्गीय राजीव गाँधी के स्वर्गीय विश्वनाथ प्रसाद सिंह नाकोदम बोफोर्स मामले मे कऽ देलाह तथा विश्वनाथ प्रसाद सिंह प्रधानमंत्री तक बनी गेलाह। दक्षिण आओर राज्य सभ से हो एकर चपेट मे आयल छथि। दिल्लीक, फ्लैट घोटाला, राजस्थानक बसुन्धरा सरकारक जमीन घोटाला, हरियाणाक जमीन घोटाला आ पंजाबक किसानक टाका-पैसा गबन। उत्तर प्रदेशक मुलायम सिंह व मायावतीक सामाजिक घोटाला समय-समय पर होईत रहैत अछि। इराक तेल दलाली मे वोल्कर रपट के बाद नटवर सिंहक राजनीतिक जीवन नष्ट भगेल आ ओ निर्वासित जीवन बीता रहल छथि। चारा घोटाला मे शामिल बहुत लोक तऽ मरि गेलाह। किनका पर केश-फौजदारी-मुकदमा चलल बा चलत आ ओकर परिणाम कि होयत? महाराष्ट्रक तेलगी स्टाम्प

पेपर घोटाला सर्वविदित अछि एखनओ जेल मे छथि।

घूस-भ्रष्टाचार वा घोटालाक जखन बात होयत अछि तऽ बिहार सर्वोपरि अछि। सभ सऽ उप्पर। डॉ. जगनाथ मिश्रा के समय अरबन बैंक घोटाला। लालू-राबड़ीक समय मे पशुचारा घोटाला सर्वविदित अछि। जाहि मे हजारो करोड़क माल-जालक भोजन सामग्री लालू एण्ड फैमिली खा गेलाह आओर आई धरि किछु नहि भेल। सी.बी.आई. मे तऽ से हो मनुखे काज करैत अछि? कतेक जांच करता आओर कि-कि जांच करताह। लालू चारा खेला कि चारा संग-संग पशु के सेहो खा गेलाह।

ईस्ट वेस्ट कोरिडोर फोरलेन रस्ता जे असम के सिलचर सऽ पोरबन्दर-गुजरात तक जायत। तकरा मे कार्यरत सिविल अभियंता दूबे हत्याकाण्ड सर्वविदित अछि जे ओ ठिकेदारक आ सरकारी अफसर के बीच सांठ-गांठ घोटालाक उजागर करै वाला छलैथ कि हुनकर हत्या क देल गेल ओ बिहारक गया क्षेत्र मे छलाह। बाढ़ि घोटाला काण्ड मे जखन तत्कालीन पटनाक जिला कलेक्टर डा. गौतम गोस्वामी फंसला तऽ फंसीते चलिगेलाह जेल। आ जेले मे स्वर्गीय भेलाह कि नरकिये से तऽ ईश्वर जानताह मुदा हमरा लोकनि तऽ स्वर्गीय कहबैन कारण आब ओ नहि छथि। वैह ई व्यक्ति छलाह जिनका टाइम पत्रिका अप्पन मुख्यपृष्ठ पर छापिक हुनकर सम्मान कैलकेन्ह आ पुरस्कार भेटलन्हि। आ ओहि कार्यक लेल जेल गेलाह आ जेल सऽ स्व. भ गेलाह।

बिहारक वर्तमान सरकार नीतीश कुमार अप्पन छवि स्वच्छ छवि बनेवाक हरसंभव प्रयास केलाह मुदा एग्यारह हजार चारि सय बारह करोड़क ट्रेजरी सऽ फर्जी निकासी भऽ गेल। सुशासनक ढोल बजावैत-बजावैत नीतिश कुमार सभ किछु बिसरी गेलाह आ सरकारी खजाना सऽ एतेक टाका गबन भ गेल। एकर दायित्व ककरा पर होयत। विपक्ष ई मुद्दा पर जे कार्य विधान सभा व विधान परिषद मे केलाह से जे कियो टी.वी. चैनेल देखने होयब से जनितै छी। एहन शर्मनाक घटना घटल। पुरुख त पुरुख स्त्रीगण से हो गमलां उठा-उठा कऽ फोड़लैन्ह।

झारखण्ड केऽ बिहार सऽ अलग भेला एक दसक भेल। एहि एक दसक मे कतेक राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न भेल। गुरुजी तऽ घोटाला-घूसक से हो गुरु छथि। नरसिंमहा राव के कांग्रेस सरकार के विश्वासमत के समय गुरुजी करोड़ो-करोड़ लेलाह। गुरु जी के राज मे, आ मधुकोड़ा के मुख्यमंत्रित्व काल मे जे मधुकोड़ा आ हुनकर संगी मिलक केलाह तकर जांच तऽ एखन चलि रहल अछि आ जांच त चलिते रहत। चारि हजार करोड़क घोटाला मधुकोड़ा के बसक बात नहिं कारण ओ बेचारा तऽ चारि लाखो ने एक संग देखने हेताह? घोटालाक घोंट पी पी कऽ कतेक लोक परलोक चलि गेलाह।

पूर्वोत्तर क्षेत्र मे घोटालाक कोनो खास मतलब नहि छैक। केन्द्र सरकार रुपया जे विभिन्न परियोजनाक लेल अबैत अछि से अधिकांशतः टाकाक कोनो विकास कार्य नहि होईत छैक। यदि असम के छोड़ि देल जाय तऽ बाकी-बचल सभ राज्य मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल आ त्रिपुरा में वार्षिक रूप टाका आयल

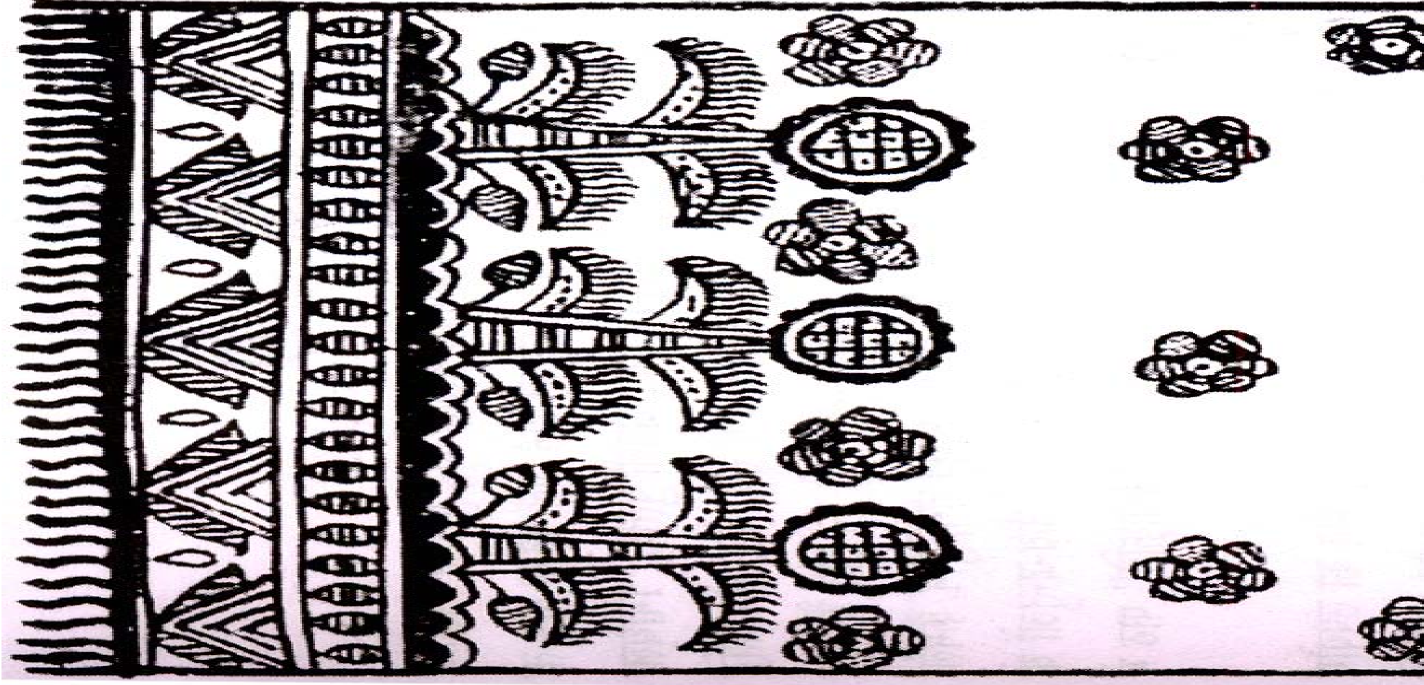


बिल बनल आ टाका निकलि गेल। बेसि सऽ बेसि टाका उग्रवाद के पेट मे बा गोला-बारुद, बन्दूक खरीद में चलि गेल। असम एकर कनी अपवाद अछि कारण किछु लोक सतर्क छथि, अतः विरोध होईत रहैत छैक। वर्तमान मे गोगोई सरकार से हो एन सी हिल्स घोटाला काण्ड जाहि मे ग्यारह सय करोड़क घोटाला भऽ गेल अछि एखन ज्वलंत काण्ड अछि। एक तऽ महंगाई लोकक डारि तोड़ि देलक अछि उपर सऽ घोटाला काण्ड। किछु दिन हो-हल्ला होयत तकर बाद पुनः सभ शांत भऽ जायत।

राष्ट्रमण्डल खेल-भ्रष्टाचारक खेल सऽ शुरू भऽ गेल। ई एकदम तरोताजा। नवका-वट्का चहट्गर अछि। राष्ट्रमण्डल खेलक आयोजन भारत क' रहल अछि। कोशी मे बाढ़िक प्रतिक्षा जेना सरकारी अधिकारी ठेकेदार केऽ रहैत अछि प्रायः तहिना एहन पैघ-पैघ आयोजन देशक खास लोक सभ करैत छथि। जाहिमे "Life time award" के जेंका अनैतिक टाका कमाई। उदाहरणक लेल खेलाड़ीक वास्ते रौद सऽ बचेवाक वास्ते छत्ता चाहि तऽ छत्ता किन्न लिय। फ्रिज चाही तऽ फ्रिज किन्न लिय वा भाड़ा पर लियऽ। काज सम्पन्न भेलाक बाद भाड़ा सहित सभ सामान वापस क दियौक यै नियम अछि। हमरो-आहोंक घर मे कोना कुनो नमहर काज विआह वा अन्य काज मे ऐनाहि करैत छी। मुदा ''राष्ट्रमण्डल खेल'' आयोजन समिति तऽ हद क देलाक जाहि छत्ताक दाम करीब रु. 4100 अछि ताहि के लेल खेल आयोजन समिति रु. 6500 दऽ किराया पर लेलक। जाहि फ्रिजक दाम करीब रुपया 10,000 छैक से फ्रिज खेल आयोजन समिति करीब रु. 45000 दऽ क किराया पर लेलक। एहन एहन काण्ड भेल। ई त एक-दू टा उदाहरण अछि. सभ काज अहि तरहे भऽ रहल छै। एकर विरोध किछु गोटे केलाह कारण मीडियाक हाथ ई खबरि लागि गेल अहि बीच राष्ट्रमण्डल खेलक आयोजन समितिक कोषाध्यक्ष अनिल खन्ना, सुरेश कलमाडी के खास करीबी टी.एस. दरबाड़ी, संजय महेन्दू आ हेड एकाउंटेंट जयचंद चारिगोटे पहिल खेप मे पदच्युत भऽ गेलाह। खर्च करीब रु. 37000 करोड़क अनुमान अछि जाहि मे रु. 2000 करोड़क घोटाला एखन धरि पत्ता चलल अछि यदि साहूकारी कमीशन मानल जाय तऽ 40 प्रतिशत अवश्य होयत। अतह अनुमानतह रु. 14000 सं 15000 करोड़ के बीच मे घोटाला होवाक चाहि। एहि सऽ कम मे फायदा नहि?

एहि सन्दर्भ मे एकटा नीक बात ई भेल जे आब केन्द्र सरकार कनी तत्पर भेलाह आ एकटा कानून अनलक कि भ्रष्ट व्यक्ति के विषय मे जे लोकनि सूचना सरकार केऽ देताह तिनकर परिचय छिपाक राखल जायत। सरकार ओहन मनुखक संरक्षण देत। मुदा जखन कियो मनुख सरकारी अधिकारी राजनेताक विरुद्ध सूचना दैत तखन ओकर रक्षा केऽ करताह। आई धरि एक-दू टा केस छोड़ि क कोनो भ्रष्टाचारी घोटालेबाज के विरुद्ध कोनो कार्यवाही नहि सफल भेल अछि।

धन तन मन के लूटि अछि
राष्ट्रमण्डलक ई खेल
लूटि-लूटि कोठि भरू
नहि तऽ होयत जेल? 



राधा तोहर बेचि रहलि छथि देह

– राजकमल चौधरी

भाषाके अञ्जलिमे भरि कय श्रद्धा के रविफूल
आयल छी हे कवि–कोकिल हम तोहर स्मृतिकूल

गीत तोहर जाग्रत करइए एखनउँ सूतल प्रान
तइँ सभकाल करइ छी सभ मिलि तोहर चरचा–ध्यान
सभ उत्सव सभ पर्व गबइ छी अभिनव जयदेवक गान
भाषा–काननके छह तो विद्यापति, अमृत–पुष्प अम्लान

आबह मिथिलामे पुनि आबह जनजीवन सूर्य्य
महाराज शिवसिंहके हे सेनापति, जगबह क्रान्तिक तूर्य्य

रतिविपरीत आ रतिअभिसारक लिखने छह कत गीत
आब न शृंगारक जुग छइ, ने छइ कतउ सिनेह पिरीत
युद्ध, अकाल, बाढ़ि, रौदीसं अछि जनसमाज भयभीत
कतउ ने भेटय शान्ति छनो भरि, कियो ने भेटय गीत

संस्कृति–सभ्यताक हिमालय भ' गेल चूर्ण–विचूर्ण
भाषासाहित्य नायिकाक नयन अछि रक्त–अश्रुसँ पूर्ण

देश जरइए लोक मरइए, वस्त्र भेटय नइं मुठियो भरि अन्न
साधारण दुखदुविधा अभावसँ सभक हृदय अछि छन्न
प्रगतिविकास सुखसाधन के सभ रस्ता भेलइ सभतरि बन्न
राधा तोहर बेचि रहलि छथि देह, कृष्ण तोहर अवसन्न

शक्ति उपासक हे विद्यापति, हे जनकवि राखह देसक ....
आबह कंसक राज हटा, कय लाबह कृष्णक समता ....

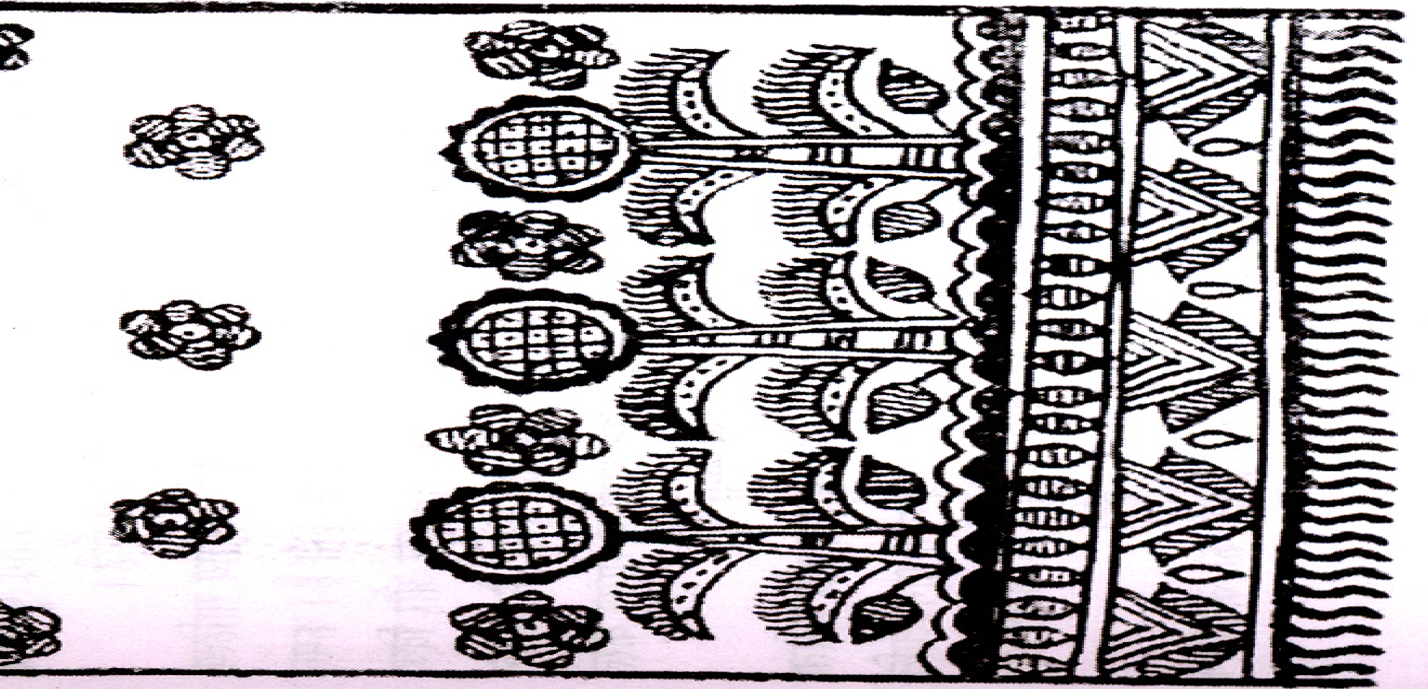
जतय ने नारिक लाज विकाबय माय–बहिन नइँ बेचय ....
जतय ने प्यासँ कानय धरती, बरिसय नइ आगिक ....
जतय ने बाढ़िक प्रलयधारमे बहि जाय गाम आ ....
जतयने पापी पेटक कारण, मरय देशसँ लोकक ....

इएह हमर श्रद्धाञ्जलि थिक आ इएह हमर आह ....
तोरे स्वरमें गबइत छी मिथिला जन–जीवन के ....
तोहरे स्मृति जलसँ भरैत छी सूखल सरिता ....

फेकनी

– वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

छैं रखने पौआही फुच्ची दैवहिक देल,
दै छही मिला तइओ अँटकर सँ पानि नित,
तइओ तोरहिसँ दूध उठौना लैत छिअउ
टिप्पी टा देने जाइत छै
से नहि कहियो बिसरल ताकहि।



बान्हल छउ दूटा बूढ़ि गाए दच्छिनवरिया ओरयानीमे
बेचलएहें बाछा गोड़ पाँचेक कोरियानीमे
बाछी नहि छउ जे रखितैं बैतरनीक हेतु
गै, क्यौ नहि औतहु काज, कथीलै छैं बेहाल?
ने खाई छही ने पिवइ छही बहिते रहैत छैं सदरिकाल
की करवैं तों कैंचा बचाय
गै, बेटा पीबै छउ ताड़ी।
टाड़ामे रखबे नुका नुका?
क लेतउ पुतहु ओहो बहार!
ओहू दिन देखने रहिअउ जे तोहर दलान लग
ठाढ़ रही रूपन सोनार
अपने तों सहजहि बूढ़ भेलैं
भ गेलै नातियो सभ समर्थ
कर दान-पुन्न, कर तीर्थ-बर्त
गै फेकनी, तों कपिलेस्सर जो!
दसहरा एलइ
सपनहुँमे नहि तों गेल हेबे
एहि जन्म सिमरिआ घाट-हे गै!
जो भऽ आ ग,
संगी-साथी लै नहि खगतउ-
टुनटुन जाइत छथि सपरिवार
मैना पीसी सेहो जैती आ, यारककाक सेहो जेता;
की ग्वार-गोढ़ि की तेलि-सूँड़ि
सब जाय रहल गंगा नहाय।
दसहरा एलइ
गै फेकनी, तहूँ भ आ ग, की करबै तों कैंचा बचाय,
बरु नातिनिएँकें कहि जैहइ-
पीआहीसँ दू फुच्चीकँ ता देल करत बरु दूध बैह,
सिखतउ परोच्छमे तोहर गुन
देतैक मिला छौंड़ी अँटकरसँ पानि नित
टिप्पी देमऽ अबिते हेतैक!
की करबैं तों केंचा बचाए
फेकनी गै, जो कर तीर्थ-बर्त
बुचिया, बचवा, कंचनमा
भ गेलउ नाति तीनू समर्थ
जिनगीक ठेकाना कोन,
आब तो सहजहिँ पाकल आम भेलैं!
दै छही मिला तइओ अँटकर सँ पानि नित
छैं रखने पौआही फुच्ची दैबहिक देल...

माय हमर गंगा!

- लक्ष्मण झा सागर

सिमसल गोरहाक चिनगी पर-
भुस्सा झोंकि-झोंकि.....
धुआँ सँ लाल भेल/ आँखि मे नोर लेने-
खापड़ि मे मड़ुआ उलबैत माय हमर
समाराजी घरक/ बहिकिरनी बनलि रहल
हमरा लेल.......!

बाबूक फेरुआ धोती मे
चेफड़ी साटि-साटि.....
जाड़सँ ठिठुरैत अपन मायकेँ
दियादिनीसभक पटोर खीचैत
हम देखने छी......,
हमरा मोन अछि
अपन मायक पीठ सँ/ क्षर-क्षर बहैत खून
जे हमर गजेरी बाप द्वारा
फेकल थारीक कोन्हु सँ
कटि गेल छलैक.......;
तरकारी चहटगर/ नहि बनल रहै ओहिदिन
'निसांबाज जीहलाहो होइत अछि'
तहिया नहि बुझैत रहियैक।
सिरमा तर सुहारी नुकाय-नुकाय
महिसीक चुहारिवला गूड़क सङ
हमर बेरहटक ब्योंत मे
टाँट भेलि हमर माय
सदिखन हमरा
पढ़बाक लेल चरिअबैत रहलि
ने जानि ककरा लेल......?
आजुक शहरी परिवेश
छोटछीन अपन परिवार
गाड़ी.....सोफा.... टिभी.... फ्रीज
की नहि अछि हमरा
हम बड़का लोक जे छी.....!
माय भने गामे अछि
घरक ओगरवाहि मे.....
आब ओ धौजनियो/ नहि छैक पहिलुका
माय मोनो कहाँ पड़ैत अछि कहियो?
बाल-बच्चाक लटारंभ सँ
हमरा फुर्सतिए कतय?
मुदा...................;
मुदा, मायकेँ हम मोने छियैक
अम्मट, बीड़ीया आ कुम्हरौड़ी
ओकरा बुझल छैक जे/ हमरा पसिन्न अछि
आ' ओ इहो जनैत अछि जे-
ई सभ शहर मे/ नहि भेटैत छैक.....
तेँ पठबैत रहलि अछि सभ साल
माय हमर हमरा लेल!!
सुनबा मे आयल जे-
माय समाङ सँ/ लचरि गेल अछि आब
सरि भ'केँ सुझितो ने छैक कहाँदनि
(मुदा बाबू आब चाह मे/ चीनीक साती
नुनो पड़ला सँ कलबच/ घोंटि जाइत छथि)
माय तइयो अहूबेर
छठि पावनि केँ/ कनकन पोखरिक पानि मे
ठाढ़ि भेल छलि-
हमरा लेल.... हमर बाल-बच्चाक लेल!!
सत्ते, माय हमर गंगा थिकीह.........!

पाठ

- मन्त्रेश्वर झा

बेंग जकाँ कूदैत, बिहाड़ि जकाँ दौड़ैत
स्कूलसँ घुरल छल ओ नेना
टहटह इजोरिया जकाँ खिलखिलाइत
सूर्योदय कालक लालचक्का जकाँ मुसकाइत
स्कूलसँ घुरि आयल छल ओ नेना।



टीचरजीसँ सिखने छल ओहि दिन एक पाठ
रटने छल, उताहुल छल सुनयबा ले ओ पाठ
'जे सत्य जीतैत छै हरदम
होइत छै सत्यक विजय'
स्कूलसँ आबिते सुना देलक
अपने रटल पाठ-मम्मीसँ पापासँ
मम्मी भेलीह प्रसन्न, पापा भेलाह गद्‌गद्

पुछलथिन अपन नेनासँ–
'सत्य माने की होइ छै पिंकू,
की कहलथुन टीचरजी'
नेना रहि गेल अवाक्
जेना हवालाकांड में पकड़ल गेल हो
कोनो स्वच्छ छवि मन्त्री।

डेराइत बाजल नेना–
'अहीं बताउ हमर पापाजी
जे की होइ छै सत्यक माने'
आब अवाक् रहबाक पारी छलनि पापाक
सन्न भऽ गेल रहथि जेना रेप आ हत्या
करवाक आरोपमे पकड़ल गेल हो
कोनो ध्यानमग्न साधु
ओ नेने तोड़लक तखन पापाक मौन
सत्य दिस बढ़ौलक
अपन साधल डेग
बाजल नेना करैत प्रश्न–
'जेना फुचुर पहलवान
कुश्तीमे बजारलक नेंगरा पहलवानकेँ
आ जीति गेल्।
तहिना ने सत्य जीतैत छैक पापा?
आ जहिना चुनावमे
एहि बेर जीतलै फलना डकैत
तहिना ने पापा?'
पापा उठि गेलाह आं गेलाह कात
मम्मी बजलीह चल पिन्टू
लागल हेतौ भूख
लेबें जलखै।

टीचरजी दोसर दिन एहिना
रटौलथिन दोसर पाठ
तखन टीचरजीक मुंह भऽ गेलनि लाल
तड़ाकसँ चलबय लगलथिन
नेनापर थापड़
कहय लगलथिन किदन कहाँदन
ओ नेना एहिना
रटैत रहल, बिसरैत रहल पाठ
होइत रहल शिक्षित।

–मन्त्र भारती अपार्टमेन्ट
सुकनपुरा, पटना–25



बभनगमाबाली भौजीक जीवनक महत्वपूर्ण घटना सभक एकटा संक्षिप्त विवरणिका

– कृष्णमोहन झा

आ से एहेन अहिबाती के हेती
जे बभनगमाबाली भौजीक सोहाग–भाग देखि जरि नइँ जेती

ओना मानलहुँ
जे हुनका पोथी–पतराक दर्शन नइँ भेलनि

मानलहुँ जे पाबनि–तिहारे हुनका तेल–कूड़ भेटलनि

मनलहुँ जे चाभीक गुच्छा
ओ कहियो अपन आँचर में नहि बान्हि सकलीह

ईहो मानलहुँ जे लाख कबुलाक बादो
आजीवन ओ दोसर पुत्र–रत्न प्राप्त नहि क' सकलीह

मुदा निस्सन्देह
एकटा भरल–पूरल जीवन केँ छाँटैत–फटकैत
अपन 37 बरखक बयस में ओ
38289 टा सोही पकेलीह
2173 डेकची भात पसेलीह
13000 बेर बर्त्तन–बासन माँजलीह
307 बेर आँगन निपलीह
47 टा साड़ी आ 92 टा ब्लाउज पहिरलीह
275 राति भूखल सुतलीह
हुनका 3 बेर भेटलनि सम्भोगक सुख आ 949 बेर भेलनि बलात्क
बेटी जनमौलनि 4 टा
आ 5 बेर भेलनि गर्भपात

मुदा ई देखू सबसँ मार्मिक बात
जे ठीक बरसातिक प्रात
जखन हुनक सीथ रहनि सिनूर सँ कहकह करैत
आ भरल रहनि लहठी सँ हाथ
तखन अपन स्वामीक आगू ओ
बिना अन्न-जल ग्रहण कयने भ गेली विदा

सम्पर्क:रीडर,हिन्दी विभाग, असम विश्वविद्यालय,सिलचर, असम
788011 फोन:03842-270964/ 09435073896

एतेक दूर पहुँचि पेबाक
सतुआ नहि एम्हर
हमरा सभकें तें
कनेक हवा चाही आर
कि डोलि सकय ई क्षण
कनेक आर छाह
कि बान्हि सकी अहि क्षण केर डोरि ।

अनुवाद : कुमार सौरभ

अहि कात सं जीवन

- मनोज कुमार झा

एतय तं मात्र
पियास पियास पानि
भूख भूख अन्न
साँस साँस भविष्य
ओहो तं जेना -तेना
माटि पर घसि घसि कें देह

देवता
तरहत्थ पर देय कनय ठाम
कुडिऔनय अछि लालसाक पाँखि
बचा क' राख'
वा टांग तर दाबि
अपन दुर्दिन लेल

घर कें किया धांगि रहल छंय
इच्छाक नंगरा प्रेत
हमरा सबहक संदूक मे
तें मात्र सुइयाक नोक भरि जीवन

सुनबा मे आयल अछि
आकाश खोलि देने अछि
सबटा दरबज्जा
सोंसे ब्रह्माण्ड आब
हमरे सभहक
चाही तें सुनगा सकैत छी
कोनो ता सं अपन बीड़ी





एकटा दिनचर्या

- अरुणाभ सौरभ

भुरुकबा मे
सन्न-सन्न करैत मौसम मे
पोखरिक महाल पर
आकि किनार परका कदबा मे
दल-दल करैत मोन सँ
निकलि
छिट्टा-कचिया
आ माथ पर बिरबा लए कए
साज श्रृंगार विमुख
सूर्य किरण ओकर देहैर पर
भोरका अल्पना बनेलकै
पानिक धार ओकरा
आँखि मे लज्जाक सँवरन केलकै
वनस्पति ओकर
देहक श्रम गंध कैँ
सुंघि उन्मादित हवा फेकलकै
सौदिक ताप
ओकरा आंखि मे
काजर पहिरेलकै
आ जखन घासक छिट्टा
लए कए घर आएल
तखन साँझक
लबालब जुआनी के
ओकरा पर कुदृष्टि पड़तैक
ओ अप्पन वैधव्य कैँ नुका लेलकै
पाटी पिलसिन बच्चा कैँ धरा देलकै
खौलैत अदहन मे
चाउर खसा देलकै।

एकटा प्रेम-पत्रक मादे कविता

हेयौ फुदन के पप्पा
झरना सँ बहैत पानि जकाँ
घरक चार चुबैत अछि
अहाँ कतए छी
अपन देस भासि रहत अछि
पुरखादतिक डीहो कौशिकी हरण
कए लेती
आबि कए देख लिय
अहाँक भाय दिन मे
सहरसा मे रिक्सा चलबैत आए
आ राति मे........हमरा........
ई केहन परदेस मे
बसलहुँ अहाँ
जे नए अहाँ परदेसक रहलहुँ
न हम देसक
अहाँ आबू
इट्टा चिमनीक मजूरी छोड़ि कैँ
बीत्ता भर जमीन बाँचल अछि
सड़क किनार मे
आं से एन.एच. केर लेल देब' पड़तै
तैयो कुनू बात नए
ननकू सेहो इस्कूल जाय लागलै
दुपरहरका सड़ल खाना खा के
राति खुद्दी रोटी पाबि ओ
दिनुभरि चिलका पढ़ैत अछि
सुनिलये जे रमनाक बाप कैँ
मारि देलकै पंजाब मे
आ बुधुआ कैँ काटि देलकै बंबई मे
तैँ बड्ड डर होइयै
अहाँ आबू फुदन के पप्पा
सगरे रोड बनतै
एतैये मजूरी करब
हम एतैये मड़ुआ आ खेसारी
केर खेती करबै
बच्चा सभ माँछ पकड़तै
अहींक याद जकाँ देस देखि कैँ
आँखि सँ कोसीक धार टपकैत अछि
अप्पन सभटा चुंबन, आलिंगन
केर संगे
ई आखिरी प्रेम पत्र लिखैत छी......।

संपर्क : केन्द्रीय विद्यालय ए.एफ.एस. बोरझार
माउन्टेन शैडो, आजरा, गुवाहाटी-17



माँ चालीसा के किछु पद्यांश

- ललित कुमार झा

माँ शब्द स्वत: उच्चरित प्रकृति प्रदत एहसास।
नवजात शिशु सभ जीवक, प्रथम वाक् थिक खास॥

माता थिकिह ईश्वरक वरदान
थिकिह हुनके प्रतिनिधि प्रतिरूप।
ममता केर क्षमता अपरिमित
माता पूज्या ईश्वर स्वरूप॥

मातृभूमि मातृभाषा
पालनहारि आ जन्मदात्री।
माता केर अनन्त रूप
सर्वत्र, सर्वस्व, सर्वोच्च मातृ॥

बच्चा, मायक कोरा पर,
झाँपल मायक आंचरि तर।
सुख इन्द्रासनक परै फिका,
मायक ममताक छाहरि तर॥

जखन सृष्टि रचना के
ब्रह्माजी के भेटलनि भार।
तखने वो भेलाह आश्वस्त
माय गढ़वाक जखन अधिकार॥

ई बसुधा छल जखन निर्जन,
जीव जन्तु सँ छल निर्धन।
प्रभु प्रायोजित सृष्टि में
सृजन मातृ के हेतु सृजन॥

नीरव शांत ब्रह्माण्ड में
अबतरित माँ भूमण्डल में।
डोलि उठल आसन ब्रह्मा के
मातृ आगमनक हलचल में॥

प्रकृति केर कण-कण परखू
विद्यमान सभ कण में हम।
सृजन हार हम स्रष्टा छी,
श्रद्धा में आ मनु में हम॥

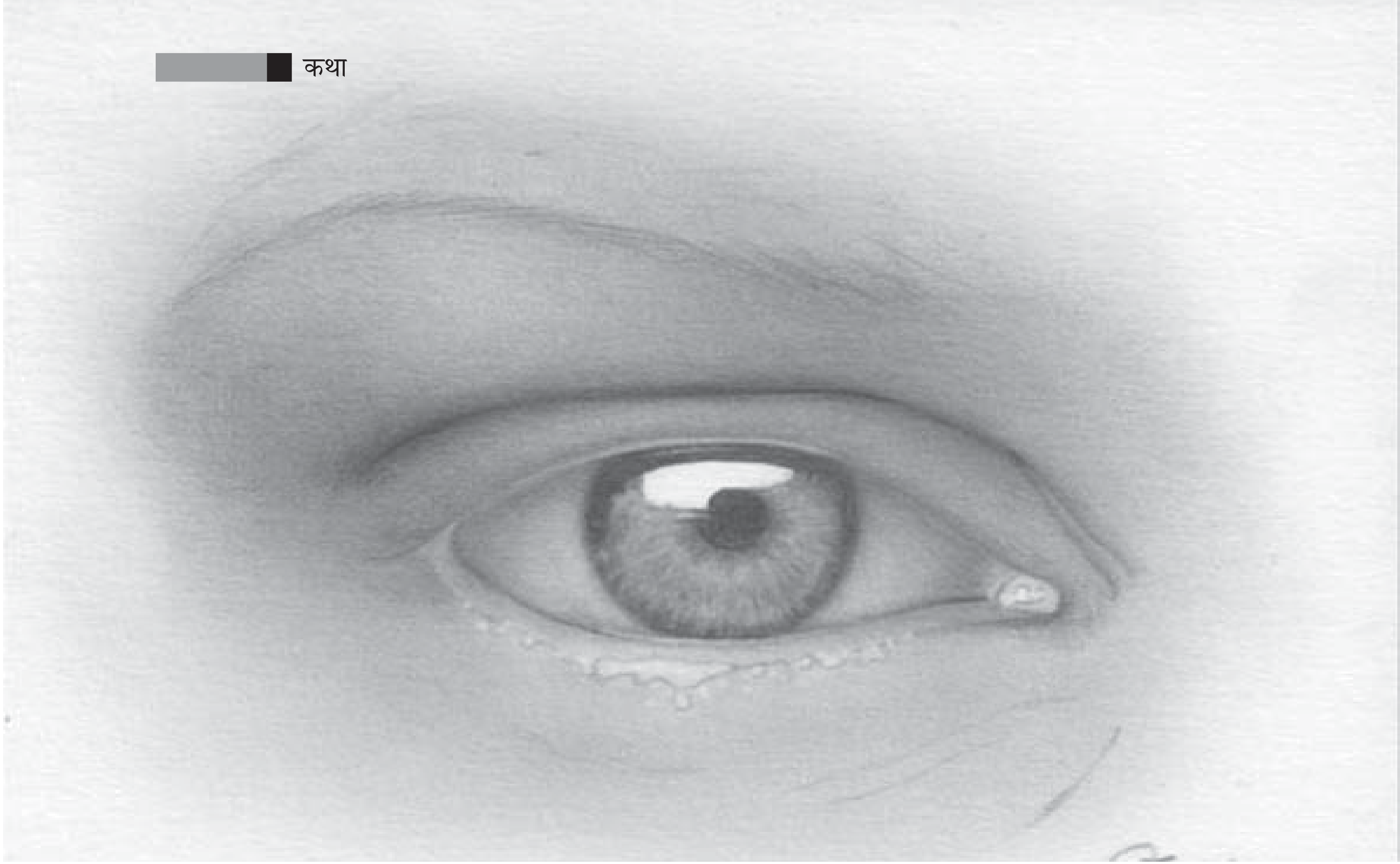
मरणोपरान्त जे अमर रहै
सिरजि सृष्टि में अजर रहै।
जीवन शक्ति हम शक्ति पूज
सर्वव्याप्त जे सगर रहै॥

अनवरत अवलम्ब रचनाके,
हम आदि में हमही अनन्त।
लक्ष चौरासी जीव में हम
चर समेत हम अचर प्रयन्त॥

पुत्र कुपुत्र बहुतो जग में
होइछ कुमाता नहिं कुनू माता।
नारी, मात्र रहैछ नहि नारी
बनैछ जखन वो माता॥

अपन जीवनक परवाह नहिं
संतति कल्याणक उद्देश्यमात्र।
किछु छे नहिं छी, जँ माता छी
मानल जाय सम्मानक पात्र॥

संपर्क : द्वारा -प्रो. ए. पाठक
जीएस कालोनी, फटाशिल, गुवाहाटी
मो. : 98640-65553



प्रतिवादक स्वर

– डॉ. शेफालिका वर्मा

हँ हम खून केने छी, हम सासु बनए नहि चाहैत छी। हम माय बनए नहि चाहैत छी। ..तैं हम ई खून केलों। तीन तीन टा खून। हम नारी छी, नारी ग्लानि भऽ रहल अछि। हम नारी किएक भेलों? नारीकैं किएक महान मानल गेल? नारी प्रकृतिक निकृष्टतम कृति छी तैं हम अपन नारी जीवन जीवा लेल नहि चाहलों। हम माय बनि जीवा लेल चाहैत छलों, सासु बनि जीवा लेल नहि चाहैत छी जज साहेब ––सासु–ससुर ननदी हम तीन तीन टा खून केलों।

जज साहेब हम चाहितों तँ भागि कऽ जान बचा सकैत छलों अपन ..दहेजक कारण हिनकर सबहक बनाओल षडयंत्रक हमरा लग कोनो सबूत नहि अछि ––कोनो पुतोहु लग कोनो सबूत नहि रहैत अछि...... कानून सबूत चाहैत छैक, साँच हो व फूसि हो। हमर सासु ससुर हमरा मारबाक षड्यंत्र केलनि, एकर सबूत मात्र हम छी, अओर हमर भगवान ...सबूतक आधारपर चलएबला आन्हर कानून टकापर सबूत अनैत अछि, आ ओही किनलाहा सबूतपर अहाँ न्याय करैत छी जज साहेब ––हमरा प्रतिकार लेबाक छल, समाजक ठेकेदार सभसँ। हमरा फंसी दिअ जज साहेब फांसी–––––

साँसे कोर्ट स्तब्ध। सभ वकील पाथरक मुरुत। जनताक अपार भीड़कैँ काठ मारि गेल छलैक। जज साहेब जेना हिमशिला सन श्वेत सर्द-लहास ---आँखिमे अपन बेटाक ब्याहक मोल भाव नाचि गेल हो ...मुदिता हफैसि रहल छलीह। समस्त केशराशि कारी राति सन छिरिआएल छल। दुनू आँखिमे घनघोर बरखा। दिनकरक इजोत कृष्ण-पक्षक रंग लऽ लेलक। कारी कारी विषधर सांप साँसे कोर्टमे कतेक काल धरि ससरैत रहल.....

मुदिता जीवनक मात्र बीस बसंत देखने छलीह आ ओ एहेन वीभत्स काज कऽ बैसतीह, ई अकल्पनीय छल। आ मुदिता..? पलक बंद केने..बाबूजी बाबूजी, ...अहाँ कत्तऽ छी, अहाँक बेटी अहाँक नामपर कलंक लगा देलक, हत्यारिन, नहि मुदा अहाँक आदर्शक रक्षा केलक। बाबूजी हम नारी जीवन नहि जीबि सकलहुँ, आ आँखिसँ जेना व्यतीत छलछला गेल.....

बेटा आब अहांक ब्याह भ रहल अछि। आब पतिक घर अहांक मान मर्यादा जीवन मरण सब किछु अछि. हम सब ते अहाँ लेल पाहून रहब पाहून.. ---मुदिताक पिता बेटीक माथ पर हाथ फेरैत बजलाह ----

मुदिताक मोने अपन ब्याहक प्रति विरोध भाव उठहल--जमीन जाल बेचि हमर ब्याह नहि करू बाबूजी / मुदिता बड़ भावुक छलीह सदिखन चिंतन में डूबल खाली अभावे टा ओकर पूंजी छल अभाव क्रांतिक कारण भ सकै त छै मुदा शर्त रही जायत छै विवेकक...पिताक गरीबी समाज में अभिशाप छल आदर्शवादी कीरानिक जीवने की छै --तेज जलधार में कम्पित जलकुम्भी सन। बी ए पास क मुदिता बैसल छलीह जता देखू ओत टका ..एतेक मूल्य वृद्धि वरक भ गेल छल जे वरक बाप के मृत्युक अतरिक्त कोनो बाट नहि देखा परैत छल।

मुदी रातुक भानस में की अछि?

आटा लेल मदना के पठोने छी बाबूजी

ओह कतेक महगी आबी गेल छै ---नमहर साँस लैत शिविर बाबू बजलाह

बाबूजी एकटा बात ते अहाँ छोड़िये देलों ....मुदिता अधर पर मैलछांह हंसी लय बजलीह ---ओही जमाना में बेटीक ब्याह ले लड़का मंगनी में भेटैत छल आब मोलभाव कर पढ़ैत छै--मुदिक गप सुनी शिविर बाबू चौंकी गेल छलाह ---बाबूजी एकटा बात पूछी? लोग अपन बेटा के किएक बेचैत छैक कोना बेचैत छै..-----शिविर बाबूक आंखि में रेतकण झिलमिला गेल..बाबूजी माय कोना अपन बेटा के बेचैत अछि बेटाक दाम लगवैत अछि ..अपन पेट में नाओ मास जीवन दान दैत अछि पालैत पोसैत अछि ओ माय कोना बेटा बेचवा लेल सहमत भऽ जायत अछि, बाबूजी सौरभ ते छोट अछि की ओकरा केओ दस हजार टका देत ते बेचि देवैक अहाँ ?

मुदु---भारि स्वर में बजलाह - बताही भऽ गेल छी अहाँ अंट शंट बजने जा रहल छी की भऽ गेल अहांके ....नहि बाबूजी हम किनल बर से ब्याह नहि करब .....

शिविर बाबू बेटीक पागल प्रलाप सुनी ओहिठाम से उठी गेल छलाह .....ओही राति ओ अपन माँ बाबूजिक गप सुनने छलीह --

----------मुदितक ब्याह ओहे घर में करब जे आदर्श हो ओ बड भावुक अछि विद्रोही प्रकृति के----आ बाप बेटीक गप सुनी माई दांत कासी लेने छलीह..एही बेटीक भविष्य की अछि ईश्वर ! माय आशंकित

सब दिन बेटा जकां पोसने छी आदर्श आ सिधांतक शिक्षा देने छी माथ पर गृहस्थिक भार पड़तैक अपने शान्त भऽ जेतीह..

आतिश बाबूक बेटा सप्तक अहाँ के केहेन लागैत अछि ....बाबूजिक स्वर सुनी मुदी चोंकि गेलीह ------ आतिश बाबू छोट मोट रोजगार करैत छथि। बेटा सेहो ओही रोजगार में लागल अछि...निक खैत पिबैत घर, सिधान्तवादी लोक ....मुदा ओ बड टका माँगता मायक आशंका.......

टका....हँसैत शिविर बजलाह .....'दहेज़ विरोधी संघक' अध्यक्ष छैथ. दहेज़ प्रथा उन्मूलन लेल जी जान से लागल छैथ ..

ओ तखन ते बड निक . अपनो विवाह एकटा गरीब घरक लड़की से केने रहैथ आतिश बाबू के के नहि जनित अछि .....

हँ से ते ठीके हमहूँ जनैतछी. ....मायक स्वर मुदिताक कान में जायत रहल..हुनकर ससुरक घर दुआरी जगह जमीन सब बिका गेल रहनि हँ दहेज़ नहि नेने छलाह एही में कोनो शंका नए हँ सप्तक मायबापक परम आज्ञाकारी आ सुशिल अछि ....

मुदिताक आंखि में सप्तकक रूप नाच लागल आदर्श आ सिधांतक गप सुनी ओकर ह्रदय सप्तके लेल नहि सम्पूर्ण परिवार लेल पूजा पुष्प सन समर्पित होयत रहल ......

आ एक दिन पालकी पर बैसी कनिया बनि मुदिता अपन सासुर आबी गेलीह।

.......खाली कनिए टा ? सर सामान दान दहेज़ ....आही रोऊ बा ....सासुक प्रथम स्वर सुनतही मुदिता घोघ तर से देख चाहली....माँ भौजी के गहनों नैहरक तेहन सन नै अछि ....मुदिताक अंग परिक्षण करैत छोटकी ननदी बाजी उठलीह ......बाबूजी हद्द क देलखिन माँ ....मुदिताक समस्त तन तिक्त गंध से आवेष्टित भऽ गेलैक ..सासुरक प्रथम स्वागत गान ! मोटा जकां कोन में बैसल मुदिता।

माँ फ्रिज नहि टीवी नहि पलंग सोफा किछ ते नहि ..कतेक उछाह छल भैयाक ब्याह में ई सब आओत।

सीपी एखन तोहर बाबूजी के पुछैत छी। दहेज़ विरोधिक सभापति छैथ समाज में की घर में? अपने घर डाहि हम आइग नहि तापब... एकटा बेटा आ .....पुन: मुदिता दिसी तकैत आग्रेय स्वरे बजलीह .....बैसल की टुकुर टुकुर तकैत छी हम भाढ़फोरही ताढ़फोर्ही नै बूझैत छी ..जाऊ भानस भात बनाबू काज धाज करू ..आ की माय एहो सब नै सिखेलक.....

अपरिचित घर अनचिन्ह परिवेश में मुदिता निस्सहाय जकां सप्तक के ताकि रहल छलीह मात्र चारि दिनक जकरा से परिचय छल। ओ ते माय बहिनिक उक्ति सुनी कखन घसकि गेलैक कियो नहि बुझलक। मुदिता चुपचाप भनसा घर दिसि चली गेली ....हे पटोर पहिरी भनसा में नहि जाओ आंखि से देखने छलिये पटोर ....सीपी एकटा नुआ असगनी पर से दय दहीक फेरी लेतैक......एकटा मैलछांह नुआ हाथ में नेने मुदिता कांपी रहल छलीह।

छोलनी करछुलक मध्य ....साँझक कजरायल आंखि नोरा गेल। आकास में तृतियाक चान विधवाक टूटल चुड़ी सन लटकल छल .....मुदिता सोचैत रहलीह ....कतेक सपना लोक देखैत अछि ..सपना कतेक विचित्त शब्द थीक सपना आंखि खुलल आ टूटी गेल..नहि नहि सपना के पढ़वाक चेष्टा नै करवाक चाही ...परछाही कतहु पकरहल जाय ....बाप रे एतेक देर से भंसा घर में की अपन देह डाहि रहल छी -- --सासुक कर्कश स्वर ----माय बाप भिखमंगा जकां बेटी के सांठी देलक आ बेटीक मल कतेक......

एही परिवेश में दिनक पंछी उड़ैत रहल विद्रोही मुदिताक सब स्वर शांत भऽ गेल। सब उत्ताप पर हिमपात भऽ गेल ...सप्तक राति के अवैत छल आ भिनसर होयताही निकलि जायत छल। मुदिताक मोन से ओकर सुखदुख से ओकरा कोनो मतलब नहि छल। ओ सरिपो माता पिता कऽ आज्ञाकी छल।

आतिश बाबू बड पैघ समाज सुधारक छलाह हुनकर नाम प्रतिष्ठा छल दीया तर अन्हार -- -अहाँ शिविर बाबू से की कही विवाह थीक केने छलों? कोनो सर सामान घर में नहि आयल .समाज सुघरवाक चक्कर में अपनाही घर में आगि लगा देलों।

हम कहने छलों सिपिक माय इशारा में कतेक बात कहने रही ....हम टका पैसा नहि लेब एकेटा बेटा अछि ओकर माय के कतेक सुख सेहनता छै ---भाढ़ में जाय अहांक कहब सीपीक माय अगुता गेलीह अहाँ टका नहि लेलों ते अहांके किछ नहि भेटल

अहाँ स्थिर राहु टका ते नाहीये भेल टीवी फ्रिज किछ ते नहि भेल...... आतिश बाबू सोच लगलाह ।

कहू ते एकेटा बेटा आब ते हमरा घर में कहियो ई सब नहि आयत .....मुदिताक सासु दु:ख आ वेदना से कानय लगलीह.......स्थिर रहु हम उपाय सोचैत छी।

घरक एहेन वातावरण में मुदिता देरायल हिरनी जकां राति दिन चौन्कल रहैत छलीह। डेरायल सन जंगली भेढ़िया सबहक मध्य एकटा मृग शावक माय बापक अल्हढ़ चंचल विद्रोहिणी मुदिता घरक कण कण में ओकरा षडयंत्रक आभास होइत छले। ....डेरायल चौन्कल भयभीत.........

ओही राति सप्तकक बाहीं पर सुतल मुदिताक आंखि में नीन नहि छल। राति दिन खुजल आंखि से ओ भयंकर सपना देखैत छलीह..... की भ जायत अछि अहांके नहि ते अपने सुतैत छी नहि ते हमरा सूत दैत छी। मुदिताक चोंकब से अर्धनिद्रा में पड़ल सप्तक खौन्झा उठैत छल। ....नीन नहि अबैत अछि -जेना अपना आप से बजलीह धन्य छी महराज निन्न नहि अबैत अछि ते चुपचाप पडल रहु । चोंकि चोंकि तिरिया चरित्त नहि देखाऊ। मुदी दिसि पीठ कय सप्तक बड़बड़हैत रहल ----मुदिता लहुलाहान भ गेलीह तिरिया चरित्त? भावुक मोन कछोटी उठल। तिरिया चरित्त केकरा कहैत छैक के बनोलक एही शब्द के? पुरुष चरित्त केओ किएक नहि बजैत छैक। सबटा वेद-पुराण रामायण गीता सब टा पुरुखक लिखल अछि तैं ई

Âçì·¤ Âýðç×Ü SßÚô âð ßç¿ì ·¤ôÙô ×æØ ÕæÂ ¥ÂÙ ÕðÅè·¤ §ü çSÍçì·¤ ·¤ËÂÙæ ·¤ â·ñ¤ì ¥çÀU ·¤ìð·¤ ÕðÅè ¥ÂÙ âæâéÚU ×ð´ °çãÙæ ÚUæçì çÕìßñì ãðìèÐ °·¤Åæ ×æØ ¼ôâÚU·¤ ÕðÅè »¢ÁÙ ·¤ÚñU ×é¼æ SßØ¢ ¥æð·¤Ú ÕðÅè·¤ ÖçßcØ? ...Ùè´¼ Ùçã ÀUÜÐ ¥æð·¤Ú ¥æ¡ç¹ ×ð´ ...Úæçì çÌÌÜ çÖÁÜ ÙèÚUßÌæ °ãðÙ Áð ç¹Ç¸U·¤è âð ¥ßñì ãßæ·¤ SßÚUô´ ßæ¿æÜ ÀUÜÐ ×éç¼Ì·¤ NU¼Ø ×ð´ °·¤Åæ ¥æàæ¢·¤æ ..°·¤Åæ â¢àææØ·¤ ×ðƒæ Áðâæ ·¤ôÙô ÂýÜØ¢·¤ÚU ÛæÛææ ¥æÕð ßæÜæ ãô Ð â×SÌ çÿæçÌÁ ¥¢Ï·¤æÚU âð ¥æ‘ÀUæç¼Ì ....¥¿P·ð¤ ç·¤ÀU SßÚU Áðâæ ¥æð·¤Ú ·¤æÙ ×ð´ ¥æÕ ÜæÕ...°·¤Åæ¥ÙÁæÙ ÖØ âð ¥æð·¤Ú ÀUæÌè ·¤æ¢Âð ÜæÕÐ ¥æð·¤Ú â×SÌ §‹¼ýèØ âÁ» â¿ðÌÙ Ö »ðÜ ¥ô ¥æð·¤ãè ¥Ùéà¢æ ·¤ ÁæÙÐ

पक्षपात! कतेक असहाय हम सब छी लंका से सीता के आनि राम अग्निपरीक्षा सीताक लेलानी मुदा एको बेर सीता प्रतिवाद नहि केलीहापत्नी से अलग रामो ते छलाह ओ किएक ने परीक्षा देलनि, रामायण पुरुषक लिखल छल। ----निस्तब्ध राति कतो कोनो मर्मर नै मुदिता चुपचाप पड़ल एही आंखिक नोर बही ओही आंखी में जाय सागर बना रहल छल..सब देशक लोक कहने अछि कियो स्त्री के चीन्ही नै सकल। स्वयं स्त्री माय बनि बेटा बेचैत अछि पुतोह बनि जरैत अछि आ बची जायत अछि ते सासु बनि जरावैत अछि। बेटा क माय बनि की भऽ जायत छै स्त्री के? ई स्त्री स्वातंत्र्य नारी विमर्श ई सब हाथिक दांत छी पहिने स्वयं स्त्री के बदल पडत। अपन अधिकार अपन शक्ति के चिन्ह पड़त.........असहाय मुदिता आक्रोश से भरल छलीह। नाना प्रकारक विचारधारा ओकर मानस मंथन कऽ रहल छल।

पतिक प्रेमिल स्वरो से वंचित कोनो माय बाप अपन बेटीक ई स्थितिक कल्पना क सकैत अछि। कतेक बेटी अपन सासुर में एहिना राति बितवैत हेती। एकटा माय दोसरक बेटी गंजन करैत अछि मुदा स्वयं ओकर बेटीक भविष्य ? ...नींद नहि छल। ओकर आंखि में ...राति तितल भिजल नीरवता एहेन जे खिड़की से अवैत हवाक स्वरों वाचाल छल. मुदितक हृदय में एकटा आशंका ..एकटा संशायक मेघ जेना कोनो प्रलयंकर झंझा आबे वाला हो । समस्त क्षितिज अंधकार से आच्छादित ....अचक्के किछ स्वर जेना ओकर कान में आब लागल...एकटाअनजान भय से ओकर छाती कांपे लागल। ओकर समस्त इन्द्रिय सजग सचेतन भ गेल ओ ओही शब्द सब के आत्मसात करवाक प्रयास कर लागल।

........हमहूँ एयैह सोचैत छी ..सासुक स्वर कान में पड़ल ..ओ आर सजग भ गेलीह ...शिविर बाबू ते सब सुख मनोरथ डाहि देलनि ..विनिश बाबूक बेटी से बात चलाबी...विनिश बाबू नगरपालिकाक चेयरमेन देब लेब ते खूब करताह मुदा हुनका बेटी के आंखि चमकैत रहैत छैक...दुनू टा आंखि झिप झिप करत अछि जेना कनखी मरैत होई... ...सीपीक माय बजली।

निक आंखि वाली आन्लों ते की भेटल ....ई ते सांचे मुदा एही कनियाक की करब ई ते हल्ला गुल्ला मचाय सबटा प्रतिष्ठा माटी में मिला देत ....एकरो उपाय छैक।

मुदिताक सर्वांग कांपी रहल छलैक सांस जोर जोर से चली रहल छल। स्वर अस्पष्ट भेल जा रहल छल। पाम अछि हँ पाम ते दोकाने में अपन पड़ल रहैत अछि।

लोक के की कहवैक..लोक के की..कही देवैक ..आत्महत्या क लेलीह..दोसर गोटे से फंसल छलीह आय पकड़ा गेलीह। .....वाह.. ई ते उत्तम ..हम ततेक जोर से चिकरी बाजब जे सब केओ हमर कथन के साँच बुझी जायत। मुदितक सासुक स्वर में ख़ुशी छल।

दोसर गोटे से फंसल ...पारामार .. मरणोपरांत चरित्र पर दोषोपण .... आवेश आ उत्तेजना से कांपी रहल छल मुदिता। आतिश बाबूक ऑफिस घर में तेबुलक दराज में रखल लोडेड रेवाल्वरक ध्यान आबी गेलैक ----मायबापक आज्ञाकी पुत्र एही सब से अनभिज्ञ निश्चिंत सुतल छल ---- एकटा आवेश एकटा उत्तेजना एकटा मूर्च्छना में मुदिता ऑफिस घर से रिवाल्वर निकलि यंत्रचलित जकां सासु ससुरक समक्ष ठाढ़ह भ गेलीह ....बहुत भेल बाबूजी अहाँ एहेन समाज सुधारक के प्रतिष्ठाक संग ज्जेनाई एही दुनिया से जेने निक छै आ एक गोली ससुरक छाती पर माय अहाँ माँ शब्द पर कलंक छी नारी रूप पर कलंक छी नारी भऽ नारी के प्रतिष्ठा नहि द सकैत छी.......दोसर गोली माय के छाती पर सीपी! ..पैघ भ अंहु माय बनब सासु बनि पुतोहके पाम खुआयब तैं ई अहांक लेल...

तिनु लहाश ताढ़फर्हा रहल छल सप्तक केराक भालेरी जकां कंपित कखन दरवज्जा पर आबी ठाढ़ह भ गेल छल.....नहि अहांके किछ नहि कहब अहाँ माता पिताक आज्ञाकारी छी अवश्य मुदा हमर सोहाग छी एही सोहागक कारण सीता अपन सासु ससुर महल दोमहला सब के त्यागी के रामक संग वन चली गेल छलीह .....बस अहाँ अपन कलंकक संग जीवु......



अप्पन राज्य

– कामिनी कामायनी

खल्वाट माथ व्यथित चित्त राज सिंहासन सं उठि बेचैन भाव सं इम्हर ओम्हर बूलैत। दूनू हाथ पांछा बन्हने ककाजी के पिरीशानी सं ओत्तय उपस्थित सब कियो फिरीशान सब हक आंखि हुनके मुंह पऽ गड़ल। कएक घंटा सं चलि रहल छल इ घमरथन मगजमारी। कोनो प्रस्ताव प कखनो कियो बिदकि जाए त कखनो किनको आंखि भौं चमकए लागै। किछु लोक त विशेष गरमागरमी देखाक तमैक क पड़ाइयो गेल छलाह। कि छु के हकार प हकार पठाओल जा रहल छलैन्ह तैयो नै टघरलाह ।

प्रजातंत्रक जादुई शक्ति सं लैस ओही प्रकांड विद्वान लोकनिक मध्य पैसिक अपन ग्रामीण के ननिहरक प्रेफेसर साहिब उर्फ ककाजी के समस्या किछु सरल करबाक कोसीस करै लेल नहुं नहुं बजलहुं शिक्षा लेल फुद्दी बाबू सवोर्त्तम बड़का कओलेजक माननीय प्रोफेसर कत्तेक रास पोथी सेहो लिख चुकल छथि आ जनता जनार्दन सं स्वस्ति सेहो लै आयल छथि। तखन। ओ बूलैत रहला एकदम गुम्म। हम हुनक पांछा पांछा। किछु काल में कनि झटकि क ओ बाम कात क रेशमी परदा बला द्वार खोलि कोठरी में पैसि दरवज्जा बन्न करि लेला इ त तौं उचित कहि रहल छ मुदा अहि चुनाव में त सात सात टा परफेसर जीत क एलाहैं सबहक अपन अपन डोली खोबी सब क़त्तेको पोथी छपौने छथि आ सबके इयह विभाग चाही। तखन।

तखन की ।

राम खेलौनक नाम प ककरो आपत्ति नहिं बूझि पड़ि रहल छै ।

·¤·¤æÁè ÅõÕéÜ ÂÚU Úæ¹Ü âôÙ·¤ ÂÙÕ^æ ©Ææ ¥æðçã âð »»ãè ÂæÙ ·¤ ÇÕÜ ç¹„è
çÙ·¤æçÜ ·¤„æ ÌÚU Úæ¹ñÌ ·¤çÙ ÜÅÂÅÂæ§Ì SßÚU ×ð´ ÕÁÜæ ¥æÁé·¤ â×Ø ÀUôÅ Úæ.Ø·¤ çÇ×æ´Ç ·¤Úñ ÀñU·¤Ð S߉¢˜æÌæ âð Âêß ÌÚU ÖæÚUÌ ×ð´ ÀUôÅð Úæ.Ø·¤ ¿ÜÙ ÀUÜñÐ Âæ¢¿ âõ Âñ´âÆ Úæ.Ø¸ Ì¹Ùç·¤° ·¤ âÚUÎæÚU ÂÅðÜ ·ð¤ âéÎëɸ ·ð¤‹¼ý ÕÙÕ ÜðÜ °·¤è·¤ÚUâ·¤ ×æ»ü ¥çÌÚUæÁØ ·¤ÚU° ÂÇ¸Üñ ãU×ÚU ¥çã ÂýàÙ ÂÚU ·é¤ÚUâè ·ð¤ ·¤æÌ ×ð´ Úæ¹Ü çÂ·¤ÎæÙè ×ð´ Âè·¤ ÈÔ¤·ñ¤Ì ÕÁÜæ âð Ì ¥æð·¤ÚUæ Âæÿææ´ ÎôâÚU ·¤°·¤ ÌÚUã·¤ ÌÚU·¤ ÀUÜñÐ ¥æ ¥ôãè â×Ø ß°ã ÂÚU× ¥æßàØ·¤Ìæ ÚUãÜ ãðÌñ·¤Ð

रमखेलौन हम अकचकैलियै ओ कत्त के प्रोफेसर हमरा जनितब त बी ए कहुना चीट पुरजा सं पास केने ओहो थर्ड डिविजन स्त्री पत्रिका सरिता गृहशोभा आदि पैढ पैढक राजनीति के ककहरा जानबाक कोसिस कएल। हं हौ से सब त शत प्रतिशत सत्या छैक मुदा आयकाल्हि ओकरे सबहक राज्य छै देखहक केहेन पैघ बहुमत सं जीत क आयल अछि। दोसर बड़का जाति जकां घमंड सेहो नहिं सबहक मुंह ठोर पकड़ने रहैत अछि।

फरिछा क कहु नै जे दशद्वारी छै बरो के माए कनियो के माए जत्तए कोउ नृप होहूं हमें का हानी बला खिस्सा छै। ओहिठाम ओ घरे घर जा क सबहक मोन जीत चुकल अछि। ओना इहो सूचना अछि जे चोरी चपाटी में सेहो ओ विशेष पारंगत कओलेज में पढनाय सं बेसी ओकर धियान कांमन रूमक सामान चोरेनाय में छल। ओ हो टेनिसक टेबुल एत्ते पैघ समान से धरि गायब करि देने छल ।

इ सब गप बाजय बला नहि छै। तौं बेवकूफी नै करहक ओ अहि प्टी के एकटा मजगूत हाथ छै कोनो दलके पूर्ण बहुमत त छै नै तखन सबके मिला क गाड़ी हांकबा के छै। आ ओ जे सभा मध्य में रूपकुमरि आसन ग्रहण केने बैसल छथि   हुनका कोन इन्द्रासन प बैसेबा के मोन बनौने छियै। हमर इसा बूझि ककाजी कनी बिहुंसला। हुनक थाकल झमल मुख मंडल प प्रथम बेर सलज्ज भाव सं ऊर्जा के प्रवेश भेल छल आ ओ कनी तोतराति कनी हकलाति बजला ओत ओ त स्त्री कल्याण विभाग। जखन सब किछु निर्णय लइये चुकल छी त घोषणा करय में विलंब कियेक्र ।शीघ्र एकटा समस्या त घटत।

हे ! एना उधियेला सं बौआ काज नै चलै छै। कनि थमि जा। देखहक राजनीति के शतरंजी चालि। हुनक मुंहक कोमल भाव द्रुत गति सं बदलि गेल रहैन्ह आ कोच सं उठि पुठि क कोठरी सं बहराइत फेर सं अपन सिंहासैन प आबि बैसला। अपने सब की अथ उथ में पड़ल छी बजियौ किछु आखिर नब राज्यक गठन भ रहल छै।

ककाजीक कठोर अध्यादेश सुनि कंटीर बाबू सोझां टेबुल प राखल बड़का टाके कटोरा सं रसगुल्ला निकालि चम्मसे सं मुंह में रखला आ मिचड़ा मिचड़ा क लगला बाजै एतेक शीघ्र कोना भ जेतै इ समाधान् कत्तेक सूझबूझ देखबए पड़तै जाहि सं जन प्रतिनिधि असंतुष्ट सेहो नहिं होबैथ आ एकटा सबल मंत्रि परिषदक गठन सेहो भऽ जाए । उपस्थित जन अहि प्रस्ताव के बड़ प्रशंसा करैत एगारहम बेर रसगुल्ला पर झपटल रहैथ ।

विवादित शिक्षा के एक दिस टरका क दोसर विषय प विचार विमर्श प्रारंभ भेल। दोसर सबसं जटिल प्रश्न छल स्वास्थ। इहो शिक्षे जकां विवादक शिकार होमए लगलै करीब करीब आठ टा डाक्टर एक टा नैचरोपैथ चुनि क आयल छलाह आ सब के सब स्वास्थ विभागक लेल कच्छा पहिर मल्ल युद्ध में भिरल ।

आ राति भरियाति देखि सभा दोसर दिनक बैसारी के आसरा में अनिर्णित समाप्त करि देल गेल छल ।

सब गोटे के स्वस्थान प्रस्थानक पश्चात हम ककाजी सं निवेदन करैत कहलयिन्ह इ छोट राज्य बना कऽ भारत सरकार अपन परीशानी सुरसा के मुंह जकां बढा रहल अछि। कि अहि सं राज्यक विकास संभव छैक। आ भ्रष्टाचार जड़ समूल नष्ट भऽ जेतैक ।

ककाजी टेबुल पर राखल सोनक पनबट्टा उठा ओहि सं मगही पान क डबल खिल्ली निकालि कल्ला तर राखैत कनि लटपटाइत स्वर में बजला आजुक समय छोट राज्यक डिमांड करै छैक। स्वतंत्रता सं पूर्व तऽ भारत में छोटे राज्यक चलन छलै। पांच सौ पैंसठ राज्य् तखन किएक सरदार पटेल के सुदृढ़ केन्द्र बनब लेल एकीकरणक मार्ग अख्तिलयार करए पड़लै। हमर अहि प्रश्न पर कुरसी के कात में राखल पिकदानी में पीक फेकैत बजला से त ओकरा पाछां दोसर कएक तरहक तर्क छलै। आ ओही समय वएह परम आवश्यकता रहल हेतैक ।

ककाजी के राजनीति के बड़ गहीड़ अनुभव सत्त कही त ओ चाणक्य छथि। मुदा समयक निर्दय हाथे थकुचायल कहियौ समय आ परिस्थिति कहियो संग नहिं देलकैन्ह त अपन प्रकांड विद्वता आ सर्जनात्म क क्षमता समाजक समक्ष रखबा में बड़ देर लागि गेलैन्ह मुदा प्रजातंत्र में देर अबेर त होइते रहै छै। कत्तेको चुनाव निर्दलिए भ लड़ल । पार्टी में आबि इ पहिल विजय छलैन्ह ।

तखन शनै: शनै: उमिर सेहो बढैत रहलैन्ह आ अजोध नेता सबहक पांति में ओ अग्रगण्य ग्रह नक्षत्र सबटा अनुकूल। अहि चुनावक जीत हुनके नेतृत्वक नाम पर भेल छलैन्ह। आने की पहिने सं मुख्यमंत्री के कुरसी रिजर्व।

गप्पेप गप में राज्यक राजधानी के विषय में चर्च भेलै त कहलैन्ह जे दड़िभंगा के छोड़ि आर कोन शहरि के डाढ़ मे एतेक दम छै जे राजधानी कहाति । मुदा शहर त बड़ गंदा छै। चारुकात उभचुभ करैत नाला के गंधाति पानि पर जखन सूरूजक कीरन पड़ै छै त लगै छै फराक सं जेना ग्रेनाइट वा मार्बल्सक टाइल्स लागल होए टावरक चारुकात गंदगी। अनकंट्रोल्ड ट्रैफिक जतए ततए थूकैत नरगैाना पैलेस के देवार धरि नहि छोड़ने पानक प्रेमीसबआ टीसन देखलियै दरिभंगा के रतुका गाड़ी सं जखन आबै छी पटोपट नीचा सं ऊपर बेंच धरि गुदड़ी चेथरी चिक्किट ओढने पड़ल मनुक्खख।इ सूतनिहार सब के। जेकरा गाड़ी पकड़बा के रहतै से एना निफिकिर भऽ क सूततै एकर समाधान त हेबाक चाही नै किछु। ककाजी अकाश में चमकैत पूर्ण चान दिस तकैत कनि चिंतित स्वर में बजला हौ। सबटा समस्या के समाधान हेतैक्र। शहरक सबटा राह बाटक सौंदर्यीकरण कएल जेतै। नाला नाली झांपि झूपि कओकर काते कात फूल पौध लगाएल जेतै। महाजक सबटा महल के सेहो काया कल्प कएल जेतै। टीसन के कात में गरीब नमाज सबके लेल फराक सं मोसाफिर खाना बनाओल जेतै अनाथालय वृद्धाश्रम सबटा बनतै ।



हं ककाजी अहि संग ओहिठाम लंगरक सेहो व्यवस्था करबा देबै। मुदा नियम बना देबै चारि दिन लगात खेनिहार के जौं ओ अत्यंत वृद्ध बीमार वा एकदम अपंग नहिं छथि त प्रतिदिन दू घंटा श्रमदान अवस्स करए पड़तैन्ह। आ अहि श्रमदानक तहत स्टेशनक आगू पाछू दूर दूर धरि सफाइर् कराओल जेतै। ओहिना अस्पताल सब में भोजनक व्यवस्था करि चू कात सफाई राखल जा सकैत अछि। इ खेनाय के योजना एकटा सक्षम आ ठोस कदम हेतै जे कोनो राज्य अपन गरीब जनता लेल प्रारंभ कएने होयत।

ककाजी कनि मुंह टेढ़ करि क हमर मूर्खता पर मुस्कैत बजला हौ तोहर इ यूटोपियन स्कीम लागू करबा में बड़ दीक्कहत हेतै। दरिद्र राज्य छै। जहां सुनतै लोक कि फोकट में खेनाए भेटैत छै। हजारक स्थान पर पांच हजार पहुंच जेतै मुदा काज करबा काल त एको सौ भेट जाए त बड़का भाग्य कहबाक चाही। पाछा सं विरोधी पार्टी टीक पकड़ने वेलफेयर गवर्नमेंट के मतलब की फंड अहां जन लुभावन काज में खरीच देबै। उपर सं बेगार खटनाए के विरोध करबा लेल हजार टा नेता पेट भरिते मातर जनमए लगतै।

मुदा अहि दिशा में प्रयास त कएले जा सकैत अछि ।

आब देखहक पहिने मंत्रि परिषदक गठन त मां जगदंबा के कृपा सं शुभ शुभ संपन्न भऽ जाए ।

ÉðÙÚ Úæâ ŒÜæÙ ¥çÀU ŒÜæÙ·¤ ·¤ôÙ ·¤•è Âçãÿ Ì Úæ…ÏæçÙ° ·ð¤ çß³ß SÌÚ·¤
ãðçÚÅðÁ çâÅè Á·¤æ¢ ÕÙõÜ Áð•æðÐ â×SÌ »æ×·¤ Âô¹çÚ·¤ ©^ÍæÅÙ ·ð¤ â¢» Öçâ²æÜ
Âô¹çÚ·¤ çÙ×æü‡æ ×ãæÇ¸ U âÕ ÂP·¤æÐ ·ñ¤Ü Áð•æð Ü» Âæâ×ð §S·êÜ Á•æâ¢ Üô·¤ ßð¼ Âô¹çÚ
ÂÚU ÙÁçÚ Ú¹Ìæ ¥¢^ØôÎØ ·¤æØü·ý¤×·¤ ÌãÌ Õè Âè °Ü ÕÜæ âÕ·ð¤ ƒæÚð ƒæÚ àææñ¿æÜØ
ÕÙõÜ ÁæØÌ ÁæçãU â¢ ¥æð âÕ ¿æL¤·¤æÌ »¢Îæ Ùñ ·¤ÚñU âSÌè ÚôÅè ·ð¤ÎôU·¤æÙ ÈðUÚ â¢
¹ôÜÜ ÁðÌñÐ çÏØæ Âé•ææ ·ð¤ ¥çÙßæØü çàæÿææ ¥çÙ·ý¤Øæ ãðÌñ ÖôÅ ÎðÙæØ â¢ÌçÌ ©^ÂôÎÙ ÂÚU
·¢¤ÅþôÜ ¹ðÜ ·ê¤Î âðãô ¥çÙßæØü ×ôÕæ§Ü ·¤ôÅü ÎÚßÁ•ææ Â ¥ÎæÜÌÐ

से त भइये जेतै मुदा चोर बनोर के मंत्री नै बनेबै चाहे जे किछु भ जाए। अपन राज्य बनि रहल छै राजा विदेहक किछु आदर्श त अवस्से स्थापित करबा के हेतै।

मर्रऽऽऽ जीत क एलै हैं चोर बनोर आ मंत्री लेल घरे घरे जाकए ताकू ईमानदार सत्यवादी राजा हरिश्चन्द। जखन लोक पंच बनै छै। परमेश्वरक गुण आपरूपी आबि जाए छै।

बेस तखन पडोसिया कोडा में किएक नहिं परमेश्वरत्व एलै मुंह में बकार नै लोक त कहै छै एत्तेक शुद्ध जेना गाय। दिमाग मे सेहो टनक टन भूस्से भरल। मुदा चारि हजार करोड़क गबन करि केहेन ध्वजा फहरा देलकै।

ओ अविकसित अशिक्षित पिछड़ल राज्य छै। मुदा एत्तय लोक बड़ शातिर छोटका मोटका गबन भले क लौथ बड़का डकारब बड़ मोसकिल ।

मोसकील कोना। बिनु राज्य बनने स्था नीय स्वशासनक नामपर जेकरा जे फुरेलै कइये रहल अछि। केन्द्र सरकारक योजना सब देख लियौ हम ओहि गाम सबहक नाम नहिं लेब मुदा आंगनबाड़ी कार्यक्रमक कत्तेक मखौल उड़ैल जा रहल अछि सएह हाल नरेगा के छै।

शहरि सिखाबे कोतवाली। हौ जखन अंगरेज भारत सं विदा होमय लगलै तखन ओकरो एहनेसन अंदेशा होइत छलै गमार हिन्दुस्तानी बत्तै कत्तो राजकाज होय। मुदा भेलै की नहिं आब इहो देखिह जे मिथिला के लोक कत्तेक नीक सं विदेह राज्यक स्थापना करैत अछि ।

अहि बेर गहींड़ सांस लेबाके बारी हमर छल एक टा आदर्श राज्य बनेबा लेल अहांके समक्ष की ठोसगर प्लान अछि ।

ढेर रास प्लान अछि प्लानक कोन कम्मी पहिल त राजधानिए के विश्व स्तरक हेरिटेज सिटी जकां बनौल जेत्ते। समस्त गामक पोखरिक उत्थाटन के संग भसियायल पोखरिक निर्माण महाड़ सब पक्का। कैल जेत्ते लग पासमे इस्कूल जत्तसं लोक वेद पोखरि पर नजरि रखता अंत्योदय कार्यक्रमक तहत बी पी एल बला सबके घरे घर शौचालय बनौल जायत जाहि सं ओ सब चारुकात गंदा नै करै सस्ती रोटी के दोकान फेर सं खोलल जेतै। धिया पुत्ता के अनिवार्य शिक्षा अनिक्य हेतै भोट देनाय संतति उत्पोदन पर कंट्रोल खेल कूद सेहो अनिवार्य मोबाइल कोर्ट दरवज्जा प अदालत।

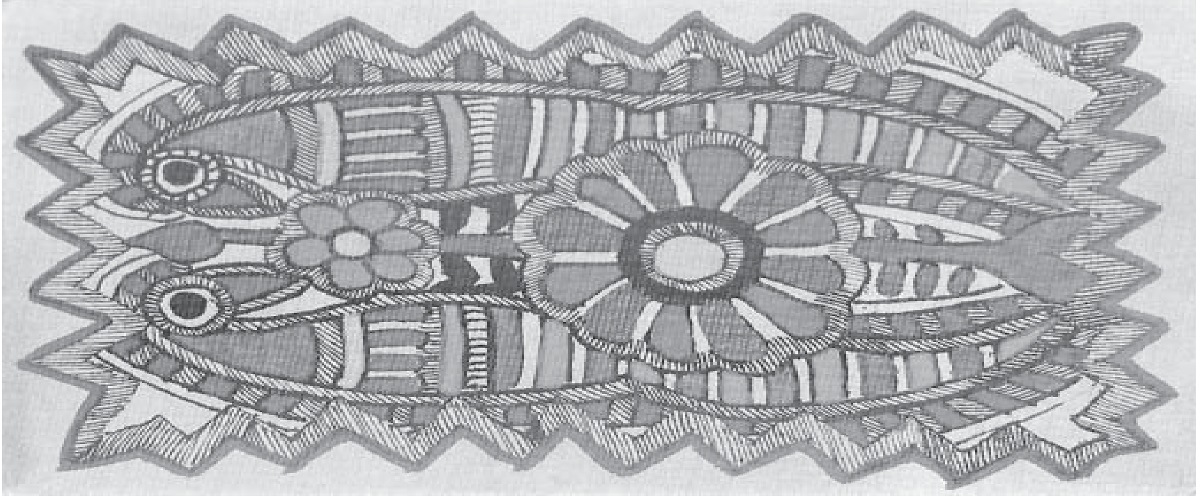
माछ के राजकीय चेन्ह त नहिं बना सकैत छी मुदा माछ आ मखान के उत्पादन मे त पुरकस जोर लगैल जा सकैत अछि। पहिने पुरूखक उत्था न ओ आलस तजि कर्मठ बनौथ संगही संग स्त्री शिक्षा के कगार बनैाल जेतै बेरोजगारी हटेबा लेल उद्योग धंधा के बढैल जेतै।

ककाजी अहांक प्लान त सर्वथा सार्थक वाह मन गदगदि करि देलहूं आन्हर की चाही बस दू टा आंखि। हमरा त ई बूझना पड़ि रहल अछि। सरिपहुं राजा जनकक राज्य कायम होमए जा रहल अछि। फिलोसोफर किंग के चर्चा सेहो विश्व इतिहास में भेल अछि। अहां के ई पाकल उमीर पोपल मुंह आ जर्जर शरीर त अवस्से सदाचरणक पाठ पढबैत। सत्यपम वद धर्मम चर वा तेन त्यक्ते न भून्जीथा के शिक्षा दैत परमात्मौ आ परोपकार मे मन वचन सं लागल रहए बला साबित हेतै।

अहि पर नै जानि की सोचि क कनि रसिक भाव सं मुस्कैत बजला से नै कह आब जौबन के लोक ययाति जकां येन केन प्रकेण जीत क ऋण पैंच लक जीवनक आनंद अंतिम क्षण धरि भोगय लेल बेकल रहैत छै। जुग वैराग्य शतक के नहिं श्रृंगार शतकक आबि गेल छै। अखन ओहि स्वनाम धन्य राज्यपाल महोदयक नाम की लेल जाए जे गुलगुल सड़ल पिचकल आम बनल छियासी बरीखक उमीर में राजभवन में मेनका रंभा ऊर्वशी सब संगे परम आध्यात्मिक सुख भोगैत रंगल हाथे पकड़ल गेल। ताहि सं उमीर पर नहिं जा कदाचरणक कोनो बयस नहिं होय छै ।

हम चुप्पक हाथ सं जेना तोता उड़ी गेल। कका अपन श्रीमुख सं जखन अहि संभावित पक्ष के उघारि क हमरा सोझा-राखि देला तखन फेर बांचल की आब।

ओना एखन हुनक उमीर त सत्तरिए बरख छेन्ह। हम अपन गप के एना बीच्चे में बजारिक पराजय स्वीकार करि ली से त सुभाव आ संभव नहिं । अपन दिश सं मक्खन लगबैत हुनक चारित्रिक गौरवक गुणगान करैत आगां बढलहु। जे नन्हू से गर्भहिं नन्हूं अंगरेजो सब कहै छै मानिंर्ग शोज द डे अपनेक त चरित्रके इर्मानदी के ध्वज एखन धरि फहरा रहल अछि पाइर् पाइर् के लेल तरसैत गिरहस्थी सं आखीर तंग आबि मटिया तेल सं अपन शरीर सिक्तई



करैत एक टा लुत्तीथ के बल पर काकी अहाक संग की दुनिए सं विदा भ गेलथि त आब अहां की पथ भ्रष्ट होयब।

पहिने ई बताब जे तौं हमर प्रशंसा करैत छ वा हीनताय ।

केहेन गप करैत छी ई त अहांक चारित्रिक बलक प्रशंसा अछि। संसार मे लोक जतेक प्रकारक पाप छल प्रपंच दुष्कर्म करैत अछि ओ सब गिरहस्थिए के आड़ में। आ ताहू काल अहां नै डिगलियै भीष्म पितामह जकां अडिग रहलियै। एकरे कहल जाए छै न चारित्रिक बल।

ताहि समय हम छलियै की। भाखा के एक टा प्रोफेसर। ओहो एफिलिएट कांलेज में दरमाहा छौ छौ मास धरि बन्न डिगतियै त आखिर कथि पर कि कओलेजक संस्थापकक घेंट काटि लेतियैक कि विद्यार्थी सबहक घर में डाका पाड़ितियैक लिखेत रहलहूं किस्सा पिहानी जीबनक तपैत रौद में बसि क मधुर रसक। मुदा तकरो पाय घरे सं लागै। क्षेत्रिय भाखा के लेखक के वाहवाही आ लोकक करतल ध्वनि त भेट जायछै मुदा द्रव्यक प्रश्न पर सब कियो ठगि लैत छै। केकर केकर नाम गिनबिय ओहि दारुण दुखक वर्णन करैत। आब भगवति के कीरपा सं पावर एलै है त देखहक कहबी छै जे पांवर कर एवरी बड़ी। आ बड़का टा के रहस्यमय चुप्पी।

हमरा आब अपना आप प बड़ानि होमय लागल छल। राजनीति में आबि बुढ़ापे मे इहो अपन मटकूड़ी आगि प सोनहा क रखने छथि। आने आय धरि जे लोक हिनका ईमानदार बूझल सब परम भ्रम में जीबि रहल छल।

रहल नै गेल आगा बढि क अपन चुप्पी तोड़ै त बजलहूं सत्तरि बरखक अवस्था में सुकरात अपन सिद्वांत लेल सत्ता सं भीड़ गेलै विषपान करि लेलक मुदा अपन संगी हित चिंतक सभक देश छोड़बा के जेहल सं पड़ेबा के आग्रह हार्दिक अनुनय विनय के ठोकर मारि देलकै। ओहो त एकटा एहेन उदाहरण प्रस्तुत क देलक जे आए धरि लोकक ह्दकय प्रदेश में बसि क असीम श्रद्वा स ओकरा अमर रखने छै।

हे सुनि लिए कान खोलिक हम नै सुकरात छी आ नै बनब चाहै छी तौं बनिह। ओ पीत्ते आन्हर होमए लगला।

गप के आन दिस जाइत देखि हम अविलंब चारु कात सं घेर घारि क लक्ष्य दिस बढेलहुं खैर ओ सब त बादक गप छै मुदा अपन राज्यक रूपरेखा लेल अहांक आलेख त बड़ दमदार बड़ तथ्य पूर्ण छल। आ सुनबा में आयल जे प्रधान मंत्री सेहो अहि सकारात्मक प्रस्ताव के बड़ सराहलन्हि।

आब ओ कनि तनाव रहित नजरि औलाह् हौ जखन राम राज्यक परिकल्पने करबा के छै। त कवि आ लेखक सं बेसी कल्पना शील प्राणी आर के होइत अछि।

* * * *

श्रीमान भेका एकबार हाथ में नेने भभा क हंसि उठला । हुनका हंसैत देखि हमरो हंसि निकलि गेल छल। कनी चौंकैत। एकबार सं मुंह निकालिक प्रश्नवाचक दृष्टि सं हमरा हेैरैत बजला तौं किएक हंसल। हम बड़ विनम्र भ कहलियैन्ह अपने के हंसैत देखि हमरो हंसी बहरा गेल ।

मुदा हम त अपन रतुका स्वप्न। पर हंसी रहल छी । हुनक आंखिक प्रश्न आब शंका में बदैल गेल छल ।

हमहूं वएह सोचि क हंसि रहल छी हमत अपने मगर मच्छी खाल के ।

हं तहुं ओहि स्वप्नक में उपस्थित छल। मुदा तोरो कोना ओ सपना अयलह ।

नहिं नहिं हमरा त अहांक संग चलल विस्तारपूर्ण रतुका वार्तालाप मोन पड़ि गेल अपन राज्यक गठन करबा के त भेल जे ओहने सोहनगर स्वप्न देखने हैब ।

अहि पर ओ खूब जोर सं ठहाक्क लगौलथि आ हमहूं संग दैत सोझा टेबुल पर राखल भफैत चाह पीबऽ लगलहुं ।

जौं आबए बला चुनाव में हम जीत गेलहूं त तोरा अवस्स अपन सेक्रेटरी बनैब। ओ विनोदक मूड में आबि गेल छलाह। एहेन काज जूनि करब। विगत में एकटा चचा अपन सेक्रेटरी बनल भातीजके। लंका में विभिषन कहि पद प्रहार करैत अपन घर सं निष्कासित क चुकल अछि ।

आ अहि हंसी ठठा में अपन राज्यक गप बुढ़िया के फुइस जकां हवा बसात में उड़ि विलुप्ति भऽ गेल छल।

कल्याणी

जगदीश प्रसाद मंडल



पहिल दृश्य

(जहलक दृश्य। जेलक भीतरसँ जेलर, कल्याणी, प्रतिज्ञा आ दूटा सिपाही निकलैत। फाटकक बाहर आबि कल्याणीयो आ प्रतिज्ञो पाछु घुरि जहलकेँ निग्हारि-निग्हौरि देखैत अछि।)

जेलर- अखन धरि हम जेलर आ अहाँ दुनू गोटे कैदी छलौं। मुदा आब जहिना अहाँ दुनू गोटे छी तहिना हमहूँ एकटा अदना मनुक्खत्र छी। जेलक जिम्मेदार होइक नाते कहै छी जे जँ किछु अभाव भेलि हुअए ओ बिसरि जाएब। संगे इहो कहै छी जे पुन: कैदी बनि जहल नहि देखी।

कल्याणी- (मुस्कुॅराइत) कहलौं तँ बड़ सुन्नर बात, मुदा जहिठाम एक्को इंच जमीन नारीक लेल सुरक्षित नहि अछि तहिठाम......?

जेलर- कि सुरक्षित?

कल्याणी- सुरक्षित यएह जे नारीक लेल स्वतंत्र जिनगी कल्पनाक सिवा आरो कि अछि। जाधरि नारी अपन शक्तिकेँ जगा संघर्ष नहि करत ताधरि मनुष्यक जिनगीसँ उतड़ि पशुक जिनगी जीबैक लेल बाध्य रहबे करत। तँ जरूरत अछि अपन शक्तिह नारी जगतक लेल उपयोग करए। जखने आजादीक लेल डेग उठौत तखने अहाँक जेल आगू ऐबे करत।

प्रतिज्ञा- कते दिन जहलक डरे नारी अपन स्वतंत्र जिनगीकेँ बान्हि कऽराखि सकैए। जेम्हर देखू तेम्हेर नारी पर अत्याचारे-अत्याचारे जहिना घरक भीतर तहिना घरक बाहर। सगतरि एक्के रामा-कठोला भऽ रहल छै। घरसँ निकलितहि कतौ अपहरण तँ कतौ छेड़खानी सदतिकाल होइते रहैत अछि। एहेन स्थिततिमे इज्जत-आबरूक संग जीविका कहाँ धरि संभव अछि।

जेलर- (मूड़ी डोलबैत) किछु अंशमे अहाँ कहब मानल जा सकैत अछि।

कल्याणी- (झपटि कऽ) किछु अंशमे किअए कहै छिऐ हँ, ई बात जरूर जे जहिना सभ मनुष्यक जिनगी समान नहि अछि तहिना अत्यातचारोक अछि। मुदा जेहन माहौल बनल अछि ओहिसँ कि आभास भेटि रहल अछि।

जेलर- (नम्हर साँस छोड़ैत) खैर, हमर ओकातिये कते अछि जे अहाँक सब प्रश्नक उत्तर दऽसकै छी। मुदा एते जरूर आग्रह करब जे पुन: जहलक आँखि नहि देखी।

कल्याणी- जँ जहलक डर करब तँ जिनगी कोना भेटत। हँ, ई बात जरूर जे छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ सैकड़ो घेराक बीच जहलो एकटा घेरा छी। मुदा ओकरा टपैक तँ दुइये टा उपाए अछि। या तँ कूदि कऽ टपि जाय वा तोड़ि दिअए।

जेलर-(मूड़ी डोलबैत) धिया-पूताक खेल नहि छी।

कल्याणी- मानै छी जे धिया-पूताक खेल नहि छी, मुदा अहूँ सुनि लिअ जे जाहि पौरूष पाबि नर पुरूष कहबैक अधिकारी बनल अछि ओ सिर्फ पुरूषेक नहि नारियोक धरोहर सम्पदा छी। अखन धरि नारी जगतक नजरि ओहि दिशा दिशि नहि बढ़ल अछि त आँखि मूनि सभ अत्यागच झेलि रहल अछि। जखने ओहि दिशा दिशि देखि आगू डेग उठौत तखने......।

जेलर- (मुस्कुाइत) हमर शुभकामना अहाँ सभक संग अछि।

(कल्याणी आ प्रतिज्ञा आगू बढ़ैत। दुनू सिपाही फाटकक भीतर प्रवेश करैत। बीचमे जेलर ठाढ़ भऽ कल्योणी दिस देखैत। दू डेग आगू बढ़ि कल्याणी पाछु घुरि कऽ तकैत। दुनूक-जेलर आ कल्याणी- आँखिपर पर आँखि पड़ितहि कल्याणी मुस्कैरा दैत। जेलर आँखि निच्चाँ कऽ लैत। पुन: कल्यणी आगू डेग उठबैत। जेलरो भीतर दिस प्रवेश करैत। एकटा पएर भीतर आ एकटा पएर बाहर रहिते पुन: कल्याणी दिस देखैत। तहि काल कल्याशणियो दुनू गोटे पाछु घुरि तकैत तँ जेलरपर नजरि पड़ैत।)

जेलर- (दुनू हाथ जोड़ि) अंतिम विदाइ।

कल्याणी- (मुस्की दैत) अंतिम विदाइ नहि पहिल विदाइ। जाधरि अहाँक जहल रहत ताधरि एक नहि हजारो बेरि आएब।

(फाटक बन्न कऽ जेलर भीतर जाइत अछि। कल्याणी आ प्रतिज्ञा दू डेग आगू बढ़ि)

कल्याणी- अखन धरि जहिना अहाँ कओलेजक एकटा छात्रा छी तहिना हमहूँ छी। मुदा आब तँ पढ़ाइक अंतिमे समए छी। परीक्षो भइये गेल। रिजल्ट निकलत जिनगीक लीला शुरू हएत।

प्रतिज्ञा- जिनगिऐक लीला किअए कहै छी नावालिकक सीमा सेहो टपि गेलहुँ। जहिया जेल एलौं तहिया ने नावालिक छलौं। जहिसँ देश आ समाजक प्रति ने कोनो अधिकार छलए आ ने कोनो कर्तव्ये। मुदा से तँ आब नहि रहल। ओना बालबोधे जे किछु केलहुँ ओहो कोनो अधला थोड़े केलहुँ।

कल्याणी-अखन धरि जे किछु भेल ओ बाल-

बोधक खेल भेल। मुदा जहलक भीतर नावालिकक सीमा टपि वालिग भेलहुँ। वर्ष पूरा भेल। जिनगीक लेल आइ संकल्पे ली जे जाधरि नारीक अन्याय होइत रहत ताधरि चैनक साँस नहि लेब।

प्रतिज्ञा- अखन धरि ने अहाँकेँ एहि रूपे हम चिन्हैत छलौं आ ने अहाँ हमरा चिन्हैत छलौं। तैं दुनू गोटे संकल्पलक संग शपथ ली जे जाधरि साँस रहत ताधरि संग-संग रहब।

कल्याणी- निश्चित। जे कियो एहि धरतीपर जन्म नेने अछि सभकेँ स्वतंत्र रूपे जीवैक अधिकार छे (किछु काल चुप भऽ) सृष्टिक शुरूहेसँ देखैत छी जे जहिना ऋृषि भेलाह तहिना ऋृषिका सेहो भेलीह। (पुन: रूकि) संग-संग जिनगी बितबितहुँ पुरूष नीक संग भीतरघात करैत-करैत सकपंज कऽ देलनि। जेकर परिणाम भेल जे ओकर पहाड़ सदृश्यै रूप बनि गेल अछि।

प्रतिज्ञा-(मूड़ी डोलबैत) हँ, से तँ बनि गेल अछि। मुदा जहिना रसे-रसे बंधन सक्कत होइत गेल तहिना रसे-रसे तोड़हुँ पड़त। एक्के बेरि जँ सब बंधनकेँ तोड़ए चाहब से संभव नहि अछि।

कल्याणी- (मूड़ी डोलबैत) ई तँ अछि। मुदा दुनियाँमे एहेन कोनो काज नहि अछि जेकरा मनुष्ये नहि कऽ सकैत अछि। तहन ई बात जरूर अछि जे जे जेहन काज रहत ओहिक लेल ओहि तरहक शक्तिक जरूरत पड़ैत। तैं जरूरी अछि पैत जाएब तेना-तेना शक्तियो बढ़ैत जाएत। जहिना बुन-बुन पानि मिलि धरतीपर ससरि धारा बनि धक आक बना समुद्रक रूप ग्रहन करैत तहिना ने मनुष्योकि होएत।

प्रस्थान

दोसर दृश्य-

(जहलक बाहरी छहरदेवाली टपि कल्याणी आ प्रतिज्ञा। दोसर दिससँ कल्याणीक भाए चन्द्रनाथ आ माए शान्तीकेँ देखैत तँ दोसर दिससँ शान्ती कल्याणीपर नजरि अटकौने। जना शान्तीकेँ बघजर लगि गेल दुनू आँखिसँ नोट टघरैत। मुदा कल्याणी आ प्रतिज्ञाक मुँहसँ खिलैत माने फुलाइत फूल जकाँ हँसी निकलैत।)

कल्याणी- (आगू बढ़ि) माए, अहाँ कनै किअए छी? बेटी कोनो अधला काज कऽ जहल नहि आइलि छलि। (कहैत दुनू हाथे दुनू पाएर पकड़ि) अहाँ असिरवाद दिअ। जहिना समाजक आन माएसँ हटि अहाँ पढ़ैक छूट देलहुँ तहिना हमरो दायित्व होइत अछि जे समाजक कल्याणक दिशामे आगू बढ़ी। जाधरि परिवारक डेग आगू दिशि नहि बढ़त ताधरि समाज कोनो बनत?

(दुनू बाँहि पकड़ि शान्ती कल्याणीकेँ उठबैत। कल्याणी उठि कऽ माइक दुनू आँखिक नोर दुनू हाथसँ पोछि आँखिपर आँखि गरा आगूमे ठाढ़ि। शान्तीक आँखिसँ धरती, पहाड़, समुद्रक रूप छिटकैत तँ कल्याणीक आँखिसँ सिंहक रूप छिटकैत)

चन्द्रनाथ- अहाँ सभ ताबे एतै अँटकू। एकटा सवारी नेने अबै छी। (कहि भीतर जाइत)

प्रतिज्ञा-चाची, आइ धरि नारी जगत, कमला-कोसीक धाराक संग की मेघक बरखा सदृश्यं अदौसँ नोर बहबैत आइल अछि मुदा जाधरि ओहि नोरकेँ बहैक कणकेँ नहि रोकल जाएत ताधरि बहब कोना बन्न हएत? जहिना बेटी कल्याणी छी तहिना प्रतिज्ञो छी। असिरवाद दिअ।

शान्ती- (माइक नजरिसँ नजरि मिला) तू सभ जहल किअए ऐहल?

कल्याीणी- परीक्षाक आखिरी दिन एक्केटा विषएक परीक्षा रहै। जे दोसर खेपमे माने दोसर सत्रमे रहै। चारि बजे समाप्त भेल। ओना प्रश्नि हल्लुके बुझि पड़ल। जहाँ सवाल पढ़लौं कि मन हल्लुजॉक भऽ गेल। नीक जकाँ लिखलौं। डेरा अबैत रही कि रस्तामे देखलियै.....।

शान्ती- की देखहलक?

कल्याणी- आगू-पाछू विद्यार्थी (संगी) सभ डेरा अबैत रहै। हम दुनू गोटे (कल्याणी आ प्रतिज्ञा) पाछु रही। हमरासँ करीब चारि लग्गीभ आगू रूपा असकरे अबैत रहै। मोटर साइकिलपर एकटा युवक पाछूसँ जाइत रहै। रूपा लग आबि पहुँचते साइकिलेपर सँ देह परक ओढ़नी खींचि लेलक।

(ओढ़नी खिंचैक सुनि शान्ती चौंकि गेलि। जना बाँसक दू टुकड़ी रगड़सँ आगिक लुत्ती छिटकैत तहिना शान्तीक आँखिसँ लुत्ती छिटकल)

शान्ती- ऍं, एते अन्याीय?

प्रतिज्ञा-चाची, अहाँ गाम-घरमे रहै छी तैं नइ देखै छिऐ। एहेन-एहेन अन्याीए हजार-हजार रोज होइए।

शान्ती- राही-बटोही किछु ने कहै छै?

प्रतिज्ञा-की कहतै। निर्लज पुरूख नीक लाज (इज्जत) थोड़े बुझैए। उ सभ तँ नारीकेँ खेलौना बनौने अछि। एक्के पुरूख अपन बहू-बेटीकेँ इज्जतक नजरिऐ देखैत अछि मुदा दोसराकेँ रण्डी-बेश्या बुझैत अछि। (क्रोधसँ शान्ती थर-थर कँपए लागल। दुनू आँखि लाल भऽ गेलै)

शान्ती- तब की भेलै?

प्रतिज्ञा-बेचारी रूपा, आगू-पाछू ताकि, मूड़ी गोति आगू बढ़ैत गेल। मुदा हमरा दुनू गोरेकेँ नै देखल गेल। सड़कक कातेमे पीचक पजेबा उखड़ल रहै। दुनू गोटे पजेवा हाथमे लऽ दौड़ि कऽ ओकरापर फेकलौं। एकटा तँ हूसि गेलै। मुदा दोसरक कपारमे लगलै।

शान्ती- वाह-वाह, भगवान हमरो औरूदा तोरे सभकेँ देथुन। भाँइमे कियो दादा हुअए। नारी-जातिक सान बचेलहुँ। तेकर उत्तर की भेल?

प्रतिज्ञा- ओ साइकिलपर सँ खसि पड़ल। कपारसँ खून गड़-गड़ चुबए लगलै। हल्ला भेलै। तखने ट्रैफिक पुलिस आबि कऽ दुनू गोटेकेँ पकड़ि पहिने थाना लऽ गेल। थानासँ जहल पठा देलक।

शान्ती- मुदा हम तँ दोसरे-तेसरे बात सुनलौं।

प्रतिज्ञा- की?

शान्ती- कते बाजब कोइ किछो तँ कोइ किछो बाजैए। एक गोरे कहलक जे दुनू गोटे परीक्षामे चोइर करैत पकड़ल गेल।

प्रतिज्ञा-चाची, झूठकेँ सत्य बनाएब आ सत्यकेँ झूठ बनाएब छुद्दर पुरूख सभक गुण छी। जहिना बहीनि कल्याणीक माए छियै तहिना हमरो छी अहाँ लग झूठ बाजब।

शान्ती- (किछु मन पाड़ैत) बेटी प्रतिज्ञा, तू जे कहलह ओ अपनो मनमे अबैए। मुदा बिना पुरूखक मदतिऐ नारी जीवि कोना सकैए?

कल्याणी- (उत्साहित भऽ) माए बिना पुरूखक नी जनकपुरमे। अखन धरि नीकेँ पुरूख अनहीरमे रखलक। जइसँ ओकरा अपन सभ गुन हरा गेलइ। घरक भीतर राखि ओकरा दुनियाँक बात बुझै नहि देलक। जइसँ ओ परती खेत नहाति सब किछु रहितो पानि-बिहाड़ि,जाड़, रौद, भुमकमक चोटसँ निष्क्रि भऽ गेल।

शान्ती- अइ बातकेँ नारी किअए ने अखैन धरि बुझि रहल अछि?

कल्याणी- एकरो कारण छै। सृष्टिक निर्माण पुरूष नारीक संयोगसँ होइत अछि। जहिना गाड़ी,दू पहियासँ चलैत अछि, तहिना। मुदा नारीक पेटमे नअ मास रहि बच्चाक जन्म होइत अछि। एहि दौरमे नारीकेँ कठिन कष्ट क सामना करए पड़ैत अछि। जेकर लाभ पुरूख उठौलक।

शान्ती- (मूड़ी डोलबैत) हूँ...।

कल्याणी- बच्चाक पालन खाली पेटे धरि नहि जन्मा लेलाक पछातियो होइत अछि। जइमे घेरा जाइत अछि। घेराइत-घेराइत एते घेरा जाइत जे जिनगी बदलि गुलाम बनि जाइत अछि।

शान्ती- (मूड़ी डोलबैत) एहेन स्थितिमे नारी पुरूखक बराबरी कोना कऽ सकैत अछि?

प्रतिज्ञा- (उत्तेजित भऽ) कए सकैए, चाची। (सवारी लऽ कऽ चन्द्रलनाथक प्रवेश)

चन्द्रनाथ- चलै चलू। सवारी आबि गेल।

प्रस्थान

तेसर दृश्य

(अनन्त कुमारक घर। दरबज्जा पर एकटा चौकी राखल आ बगलमे कुरसीपर अनन्तो कुमार बैसल, आँखि बन्न केने)

अनन्तनकुमार-(स्वयं) दिनो-दिन जिनगी जपाल भेल जा रहल अछि। जे दिन जे क्षण बीति रहल अछि ओ नरकक वास भऽ रहल अछि। मुदा मऽ रबो तँ हाथमे नहिऐ अछि अपने हाथे आत्म हत्यो कोना कए लेब?

(चाह नेने शान्तीक प्रवेश। पतिक हाथमे कप पकड़बैत शान्ती चौकी बगलमे ठाढ़। एक घोट चाह पीबि अनन्त कुमार शान्ती दिस देखि।)

अनन्तकुमार- जिनगी जपाल भऽ गेल। अकाजक अन्न सनर। नीरस बिना रसक जिनगी कोकनल गाछ सदृश्य होइत अछि। जे पिछ्लू , गराड़क घर बनि जाइत अछि तहिना जिनगी बुझि पड़ैए।

शान्ती- सोग केलासँ सोग थोड़े मेटाएत। सोग तँ समस्याकेँ जनम दैए। जे बिना केने थोड़े मेटाएत?

अनन्तकुमार- जखने घरसँ निकलै छी तखने रंग-विरंगक अड़कच-बथुआ काचर-कुचर सुनए लगै छी।

केकरा कि कहिऔ। कते लोकसँ माथ चटाउ। ककरो मुँहमे जाबी लगौनाइ असान छी।

शान्ती- कते दिन मूड़ी गोति समाजमे जीवि?

अनन्तकुमार- नीक हएत जे झब दए कल्योणीक विआह करा दियै। आन गाम गेलापर तँ लोकक बात नै सुनब। जहिना पोखरिक पानिक हिलकोर जे दू-चारि दिनमे शान्त भऽ जाइत छै तहिना असथिर भऽ जाएत।

(चन्द्रनाथक प्रवेश)

शान्ती- भने बउऔ आबिऐ गेल। दुनू बापूत छीहे विचारि कऽ रास्ता निकालि लिअ।

चन्द्रनाथ- (अकचकाइत) कथीक रास्ताल माए? कोन एहेन दुर्ग टूटि कऽ खसि पड़ल जे बाबूकेँ हम विचार देवनि।

अनन्तकुमार- बौआ, नीक की बेजाए, अपना परिवारमे नै बाजव तँ कतए बाजब। जखने गाम दिशि टहलै छी, सोझा-सोझी तँ नहि मुदा, अढ़ दाबि-दाबि मौगियो आ मरदो की बजैए तेकर कोनो ठेकान नहि।

चन्द्रनाथ- की बजैए?

अनन्तकुमार- कियो बजैए जे कल्याणी जहल जा कुल-खनदानक नाक-कान कटौलक। तँ कियो बजैए जे केहन माए-बाप छै जे बेटीक वएस बीतल जाइ छै मुदा विआह करैले नीने ने टुटै छै।

चन्द्रनाथ- बाबू, जहिना दिनक उनटा राति होइ-छै तहिना नीक अधलाक बीच सेहो होइ-छै ज्ञान-अज्ञानक बीच सेहो होइ छै। धरतीपर ओतै अधलो अछि। हमरा बुझने तँ अधले बेसी अछि। किऐक तँ नीक एक्के तरहक होइ छै जहन कि अधला अनेको रंगक- रावण, कौरबक सखा जकाँ।

अनन्तकुमार- ततबे नै ने इहो बजैए जे पढ़ा-लिखा कऽ बेटी तेहन बना लेलक जे चौक-चौराहापर पुरूखे जकाँ मुँह-कान उघारि निधोख भाषणो करैए।

चन्द्रनाथ- बाबूजी, हमर बहीन कुम्हरक बतिया नै ने छी जे ओंगरी बतौने सड़ि जाएत। जँ कियो आँखि उठाओत वा ओंगरी बतौत तँ ओकर आँखियो फोड़ि देबै आ ओंगरियो काटि लेबइ। अपन माए-बहीनि दिस देखह जे माटिक मुरूत बनौने अछि।

शान्ती- बौआ, हम दुनू परानी तँ पाकल आम भेलौं जाबे जीबै छी, ताबे जीबै छी। कखनी खसि पड़ब तेकर कोन ठीक। मुदा तू दुनू भाए-बहीनि तँ से नइ छह। भगवान करथुन जे हँसैत-खेलैत शतायु हुअअ।

(कल्याणीक प्रवेश)

अनन्तकुमार- बेटी कल्याणी, तोरा सभले ओइ गीरहकेँ तोड़ि देलौं जइ बंधनक बीच कन्या अज्ञानक काल-कोठरीमे जीवैत अछि।

कल्याणी- बाबूजी, जहिना अहाँ समाजमे पहिल डेग उठा नव फुलक गाछ रोपलौं तहिना अहाँक आत्मा एक नहि अनेक फुलक फुलवाड़ी लगौत।

शान्ती- बेटी, भगवान हमरो दुनू बेकतीक औरूदा तोरे दुनू भाए-बहीनिकेँ देथुन। जाबे बच्चा छेलह ताबे जतए धरि भऽ सकल सेवा केलियह। आब तँ तोरे सबहक दिन-दुनियाँ भेलह, हम सभ तँ अस्तोबल भेलौं।

कल्याणी- माए, नारीक संग अत्याचार करैत-करैत पुरूख एहेन अभियस्त भए गेल अछि जे उचित-अनुचितक सीमे समाप्तए भऽ गेल छै। जहिसँ नी खसैत-खसैत एते निच्चाँ खसि पड़ल अछि जे स्वरूपे समाप्त भऽ गेल अछि।

अनन्तकुमार- (मूड़ी डोलबैत) हँ, से तँ भऽ गेल अछि।

कल्याणी- बावू, ई दुनियाँ कर्मभूमि छी वीर भोग्या बसुंधरा जे जेहन कर्म करत ओ ओहन ल पाओत। जहिना डोरीक एक भत्ता अहाँ तोड़ि हमरा अन्हारसँ इजोतक रस्ता खोललौं। तहिना एक-एक भत्ता तोड़ि नारी जगतक बन्धन तोड़ि देवइ।

अनन्तकुमार- बंधन तँ सक्कत अछि, मुदा ओकरा तोड़नहुँ बिना तँ कल्योण नहिऐ अछि। मुदा एहि लेल ज्ञान, साहस आ धैर्यक जरूरत अछि।

कल्याणी- (मुस्की दैत) पौरूष सिर्फ पुरूखे लेल नहि नारियोक लेल विधाता देने छथिन। जरूरत अछि ओकरा पकड़ेक। हमहूँ आब नावालिक नहि बालिक भेलहुँ ततबे नहि किरिणक डोरसँ सुनि सेहो देखि लेलहुँ। जहिना सृष्टिक विकासमे पुरूष-नारी समान अछि तहिना जाधरि दुनूक बीच समानता नहि आाऐत ताधरि चैनक साँस नहि लेब।

अनन्तकुमार- बहुत कष्ट हएत?

कल्याणी- (हँसैत) जीबन नया मिलेगा, अंतिम चिता मे जलके। जहिना भिनसुरका सूर्ज देखने दिनक अनुमान होइत अछि तहिना तँ नवालिकक आड़ि हमहूँ जहलेमे टपलौं कि ने।

प्रस्थान

चारिम दृश्य

(दरबज्जा क चौकीपर चद्दरि ओढ़ि, मुँह उधने अनन्त कुमार पड़ल। पँजरामे शान्ती बैसल)

शान्ती- (देह छुवि) बोखारसँ देह जरैए आ अहाँ जिद्द बन्ह ने छी जे दरबज्जापर सँ अंगना नइ जाएब।

अनन्तकुमार- आइ धरि परिव अंगने भरि रहल मुदा कल्याणी सन बेटी कुलमे जन्म लेलक। जे आंगनसँ निकलि समाज रूपी परिवारमे रहए चाहैए, बाप होइक नाते हम दरबज्जो धरि नइ अरिआति देवइ।

शान्ती- कहलौं तँ ठीके मुदा माए-बाप, बेटा-बेटीकेँ जनमे ने दइ छे करम तँ अपने काज करै छै।

अनन्तकुमार- हमरा अइ परिवारक कोनो भार नै अछि जहिना बाबू दरबज्जा बना कए गेला तहिना अंतिम साँस धरि दरबज्जाक रक्षा माने मान-सम्मान करैत रहब।

(चन्द्रनाथक प्रवेश)

चन्द्रनाथ- (अवितहि) बाबू किअए चद्दरि ओढ़ने छिऐ?

शान्ती- बोखारसँ आगि फेकै छनि। कतबो कहै छिअनि जे पुरबा लहकै छै, चलू आंगन, से कहै छथि जे अंतिम समएमे दरवज्जापर प्राण छोड़ब। पुरबा-पछबाक काज छिऐ बहनाइ, बह-अ।

चन्द्रनाथ- बाबू, जे बात अहाँ आइ बजलौं से पहिने कहाँ कहियो बाजल छलौं।

अनन्तकुमार- तोहर प्रश्निसँ हृदय जुरा गेल बौआ। माए छथुन तँ फुटल ढोल। भरि दिन पनचैती केने घुरतीह जे सभ शान्तीसँ मिलि-जुलि कऽ रहू। मूदा जहिना शक्ती बढ़ल जाइत अछि तहिना हिनकर पनचैतियो बढ़ल जाइ छनि।

चन्द्रनाथ- (ठहाका मारि) हूँ-हूँ.....।

शान्ती- बुरहा तँ नीक-अधला सभ दिन कहलनि। जखन-जुआन रही तखन बरदास भेल आ आब तामस उठत। दुनियाँमे जँ कियो संग पुरलनि तँ सभसँ बेसी यएह ने पुरलनि। मुदा आब भगवान अन्याए केलनि जे पहिने हमरा नइ ओछाइन छड़ौलनि।

अनन्तकुमार- नीक हेतह जे कल्याणियो कँे सोर पाड़ि लहक।

(चन्द्रनाथ भीतर प्रवेश। कल्याणीक संग मंचपर प्रवेश।)

कल्याणी-बाबू, किछु होइए?

अनन्तकुमार-नहि।

शान्ती- कि कहथुन। बोखारसँ देह जड़कै छनि।

कल्याणी- कोनो दवाइ नहि देलहुनहेँ?

अनन्तकुमार-दवाइ खाइबला रोग नहि छी बेटी। मनमे एते खुसी आबि गेल अछि जे सौंसे देह हँसैए।

कल्याणी- (मने-मन सोचैत। मुँहक पोज सुख-दुखक यएह अवस्था छी) माए किछु कहै छथि अहाँ किछु कहै छी? (आवेशमे अबैत) किअए बजेलौं?

अनन्तकुमार- कतए गेल छेलह?

कल्याणी- महिलाक एकटा बैसारक आयोजन करए चाहै छी जहिमे विधवा समस्याक संबंधमे विचार करब।

अनन्तकुमार- ई तँ छोट समस्या छह। अखन नव उत्साह छह पैघ समस्यासकेँ नजरिमे राखि डेग उठाबह।

कल्याणी- (विस्मित होइत) कोना एहि समस्योकेँ छोट समस्याल कहै छियै।

अनन्तकुमार- भने तँ समाज दिस डेग उठेबे केलह, बुझवे करबहक। मुदा पहिने समाजकेँ पढ़ए पड़तह। (उठि कऽ बैसैत) चद्दरि उताड़ि सिरमापर रखि दुनू पाएर मोड़ि कए बैसैत सभ कियो एकठाम बैसह।

(चारू गोटे चौकीपर बैस जाइत अछि।)

अनन्तकुमार- सभकेँ अपन परिवारमे, एक सीमा धरि लाज-विच करक चाही माइये छथुन पहिने हिनका विषएमे सुनि लाए।

(पतिक बात सुनि शान्ती देह-हाथ समेटि सांकांक्ष होइत बैइसैत। चन्द्रनाथ मूड़ी गोति लेलक। कल्याणी पिताक आँखिपर आँखि गड़ा लेलक।)

अनन्तकुमार- जहियासँ माए एलखुन तहियासँ जिनगीक अंतिम पड़ाव धरि संगे छी। गुण-अवगुण मनुष्यमे होइते अछि। मुदा सदतिकाल दुनूपर नजरि (चन्द्रनाथकेँ देखि अनन्त कुमार)

अनन्तकुमार-हँ, कहै छेलियह। जहिना कम्पोजिट (शंकर) बीज उन्नतिशील होइत तहिना मनुष्योक प्रक्रिया अछि। (बात बदलैत) सदतिकाल माए माथ खोड़ैत रहै छथुन जे किअए बेटीक विआह अनठौने छी। मुदा हम अनठौने कहाँ छी।

कल्याणी- (आँखि लाल केने) बाबू......।

अनन्तकुमार- (मुस्कुराइत) बेटी हुनको विच अधला नहिये छन्हिल। बेटीक प्रति माएक ममता वेसी होइ छै। मुदा परिवारमे विवाह साधारण काज नहि छी। तहूमे अखन, सभ तरहक संक्रमणक प्रक्रिया चलि रहल अछि।

चन्द्रनाथ- की संक्रमण?

अनन्तकुमार- पहिने अपन इतिहास बुझि लाए। पहिले स्वयंवर प्रथा चलति छल। जहिक माध्यमसँ माए-बाप बेटा-बेटीकेँ विवाह करैत छलैय। मुदा आइ की देखैत छहक जे तते ओझरी लगि गेल जे जते सोझरबैक रस्तो अपनौल जाइत अछि ओते ओझरी बेसिआइये जाइ छै।

कल्याणी- बाबू, हमहूँ अबोध बच्चा नहि छी बालिग भेलहुँ। तँ......।

अनन्तकुमार- बिल्कुँल ठीक सोचै छह। जखन महिलामे पेंइतालीस-पचास बर्ख धरि सन्तान उत्प न्न करैक शक्ति रहैत अछि तखन कम उम्रमे विवाह तँ बड़ जरूरी नहिये भेल?

कल्याणी- असिरवाद दिअ। समाजक बीच किछु करैक जिज्ञासा भऽ गेल अछि।

अनन्तकुमार- बेटी, हृदएसँ असिरवाद दइ छिअह। जहिना कोनो अछुत जाति जखन कोनो गाममे प्रवेश करैत छल तखैन कोनो ऐहन बाजा बजबैत छल जे लोक बुझि जाइत छलै।

कल्याणी- (चकित होइत) कि कहि देलियै?

अनन्तकुमार- पुरना गप कहलियह। आब तँ गीताक युग एलै। तँ जहिना कृष्ण कुरूक्षेत्रमे शंखक अवाजसँ अपन जानकारी दैत छलथिन। तहिना......।

कल्याणी- (आँखि-कान चकोना करैत चारू भाग देखि) कने बुझा कऽ कहियौ?

अनन्तकुमार- समाजमे किछु करए चाहै छह तँ काल्हिये बेरू पहर दुर्गास्थानमे बैसार करह।

कल्याणी- काल्हिसँ नीक जे रवि दिन बैसार करब नीक रहत। ओहिमे नोकरियो चाकरियो सभ रहताह।

अनन्तकुमार- नोकरी-चाकरी कए कऽ जे गामक नास केलक ओकरा बुते गाम बनौल हएत।

जहिना भिनसुरके सूर्य देखलासँ दिन भरिक अनुमान लोक कऽ लैत अछि तहिना मनुक्खकक किरदानिये देखि कऽ मनुक्खुकेँ चिन्हए पड़तह।

कल्याणी- हुनका बुते कोना गामक विचार कएल हेतनि।

अनन्तकुमार- (खिसिया कऽ) दिल्ली सरकारमे सभसँ बेसी बिहारक रेलमंत्री भेलाह। मुदा कि देखै छहक? जकरा तू अबोध कहै छहक ओकर जिनगियो छोट छै। जिनगीक समस्यो कम होइत अछि।

कल्याणी- अखने जा कऽ ढोलियाकेँ ढोलहो दइले कहि अबैत छिअनि। साँझू पहर ढोलहो दऽदेब।

प्रस्थान

पाँचम दृश्य

(दुर्गास्थानक आगूमे एक भाग पुरूष एक भाग महिला दिससँ आगूमे कल्याणी-प्रतिज्ञा। पुरूष दिससँ सूर्यदेव, क्षितिजदेव, निसकान्त बैसल।)

सूर्यदेव- आजुक बैसारक लेल कल्याणी आ प्रतिज्ञाकेँ हृदएसँ शुभकामना दैत छिअनि जे एकटा नव परम्पराक शुभांरंभ केलनि। आशा संग आगू बढ़ति सएह शुभकामना।

कल्याणी- भाय सहाव, अहाँ सभ तरहेँ अगुआइल छी तँ आगूक बाटक जते ज्ञान अहाँकेँ अछि ओते हम थोड़े बुझै छी।

(बिचहिमे निसकान्त)

निसकान्त- सुरजू भाय, हमरो बात सुनि लिअ। काल्हिये दुनू परानीक झगड़ाक पनिचैतीमे गेल छलौं। बेचारा विसनाथकेँ देखते छियै जे डेढ़ सौ रूपैयाक कमाइ घर जोड़ैयामे करैए। सभ दिन कमा कऽ अबैए आ घरवालीक हाथमे दऽ दैत छै। घरवाली केहेन जे टी.भी. कीनैले पाइ जमा करैत जाइए। रौद-बसातमे काज करैबलाकेँ एकटा गंजीसँ थोड़े पाड़ लगतै। तइले घरवाली पाइये ने दैत अछि।

कल्याणी- (मूड़ी डोलबैत) की पनचैती केलियै?

निसकान्त- सैंए-बहूक झगड़ा पंच लबरा। हम नै बुझै छिऐ जे पावरक लड़ाइ छी। दुनू गोटेकेँ थोड़-थाम लगा देलियै। दू विचक लड़ाइ हमरे बाप बुते फड़िआएल हएत।

सूर्यदेव- अच्छा एकटा बात कह! जे दुनू गोटेमे घरक गार्जन के छी?

निसकान्त- उँ-हूँ सौंसे गाममे सबहक घरमे मौगिऐक जुति अछि। ऐहन जे लोकक दशा भेलि छै से किअए? कमाइ छै कोइ, हुकुम ककरो। कोनो घर कि कोनो गाम, जाबे मरदक जुतिमे नइ चलत ताबे ओहिना गाम आगू मुँहे ससरि जाएत।

कल्याणी- कविलाहाक खेल देखबै। दिन पनरहम गुरूकाका कानि कानि कहैत रहथि जे सभ दिन परदा-पौसकेँ माननलौं। पुतोहू जनीकेँ बेटा नोकरी लगा देलकनि। दस कोसपर स्कूल छनि। दुनू परानी भिनससँ खाइ-पीबै राति धरि घुमि कऽ अबै छथि। बेटा तँ बेटा भेल मुदा पुतोहूक सेवा सासु करनि, ई हमरा पसन्द नहि अछि?

सूर्यदेव- ई नइ पुछलहुन जे समए ऐना किअए भेल?

निसकान्त- आठ घंटा खटनीक बाद जे समए बचैए- ततबे ने समाजमे समए लगाएव ओते जे पुच्छो-पुच्छी करैए लगब, से ओते निचेन रहै छी।

कल्याणी- भैया, नारीकेँ बराबर अधिकार हवा चलि रहल अछि से की?

सूर्यदेव- मदी सबहक खेल छी। नारी, पुरूषसँ हीन कोना बनैत गेल? जाधरि एहि इतिहासकेँ नहि देखब ताधरि कारण कोना पएव। ककरोसँ अधिकार मंगबै? एहि लेल विकासक प्रक्रियाकेँ नीक जकाँ बुझए पड़त।

कल्याणी- काज कोना शुरू कएल जाए, भाय।

सूर्यदेव- बहुत बातक जरूरत अखन नहि अछि। मुदा किछु बात कहि दैत छी। पहिल- नारीकेँ चिन्हाए लेल नजरि ओतऽ दिअए पड़त जहिठाम हवाइ जहाजमे उड़ैत, इलाइची फोड़ि-फोड़ि मुँहमे दैत जिनगी अछि तँ दोसर दिशि भरि-भरि छाती पानि टपि, भीजल कपड़ा पहीरि गोबर बिछैक जिनगी अछि।

कल्याणी- (नम्हिर साँस छोड़ैत) अद्भुत बात भाय अहाँ कहलौं।

सूर्यदेव- कल्याणी, अहाँ अखन फुलाइत फुलक कली छी। तैं जरूरत अछि शुद्ध माटि-पानिक। प्रत्येक साल समाजमे माने गाममे साएसँ उपर आन गामक बेटी अबैत छथि। गामक बेटी जेबो करैत छथि। प्रश्न उठैत सिर्फ देहेटा अबैत-जाइत आकि लूरि-बुद्धि सेहो अबैत जाइत अछि।

कल्याणी- अखन तँ आरो विकट भऽ गेल अछि जे देशक एक कोनसँ दोसर कोनमे रहनिहक (पालल-पोसल) बीच संबंध स्था पित रहल। जहिसँ खान-पान, बात-विचार लूरि-ढंग सभ टकरा रहल अछि।

सूर्यदेव- एहिना खाइ-पीवैमे देखियौ। एक आदमीक (परिवारक) एक दिनक खर्च जते होइत अछि दोसर दिस ओहन परिवक भरम अछि जहि परिवारमे दसो-बर्खक आमदनी ओते नइ छै। ककरो असली नोर चुबै तब ने से तँ पिऔजक झाँसक नोर चुबबैए।

कल्याणी- खेती-बाड़ीक की स्थिति अछि?

सूर्यदेव- सरकारी मेला लागल। गाममे चारिटा ट्रेक्टैर चलि आएल। एक तँ बाढ़िमे बहल बड़द गाममे मरि गेल, दोसर जे चारि आना बचल ओहो सभ गोवर उठबै दुआरे बेचि लेलनि। अखन गाममे एकोटा बड़द नै अछि। ले बलैया ट्रेक्टर कदबामे सकबे ने करै छै। खेती कोना हएत?

कल्यणी- अजीव-अजीव बात सभ कहै छी, भैया?

सूर्यदेव- कते कहब बहीनि। जते खर्चमे पहिने लोक प्रोफेसर बनै छलाह तते अखन बच्चाक स्कूलमे खर्च हुअए लागल अछि। ककर बेटा पढ़त। शिक्षा केहन भऽ गेल अछि धोती-कुरताबला आ पेन्ट-कोटबला अपनामे रगड़ केने छथि जे हम नीक तँ हम नीक। के फड़िऔत? जहन कि प्रश्न नान्हिटा अछि जे जहिसँ जिनगी नीक-नहाँति आगू मुँहे समएक संग ससरै।

प्रस्थान

पटाक्षेप।

बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल

● प्रीति ठाकुर

बहुरा गोढ़िन बंगुलाय लग बाझरीक रहैवाली आ तुलरा दयाल भरौड़क राजकुमार। दुनू गोटे तंत्रक साधक आ नृत्यमे पटु। चतिक बलि दऽ कऽ तंत्र सिखने छलि बहुरा। से लोक तुलरा दयालकेँ नटुआ दयाल कहए लगलाह।



नटुआ दयाल एहि क्रममे बहुरा गोढ़िन लग जाए लागल आ ओकर पुत्री फूलमतीसँ प्रेम करए लागल। विवाहक प्रस्ताव राखलक नटुआ दयाल आ से मानए पड़लै बहुराकेँ।



नटुआ दयालक गुरु मंगल कमला कातमे रहैत छलाह। हुनकासँ आशीर्वाद लेलक नटुआ दयाल।



आ बिदा भेल बियाह करबाक लेल।



पाछाँसँ जे बरियाती सभ अएलैक तकरा झगड़ा फरबारीसँ कऽ गेलै। आब लिअ। नटुआ दयालक मंत्री मल्लक एक आँखिक रोशनी निकालि लेलक बहुरा। बाकी सभकेँ बकड़ी बना कऽ बन्ने कोंचि देलक बहुरा।



घुरि कऽ गुरु मंगल लग गेलाह नटुआ दयाल। सभ गप सुनेलन्हि।



कामाख्याक चंडिका मन्दिरक नर्तकी योगिनीसँ सिखलक तंत्र।



सौंथा नामक सिद्धदेवी वागेश्वरीकेँ पराजित देल जाइ छली आ ओतए नाचै छली भुवनमोहिनी। अनहद आ आज्ञाचक्र नृत्य तँ सिखबे केलक नटुआ दयाल, कारी जानू कार्तिक मंत्र सेहो सीखि लेलक।



कमला-बलानक धारमे उतरि गेल नटुआ दयाल। मुदा बहुरा सेहो नहिटा, अपन चट्चकर्मे सुखा देलक धारक पानिकेँ।



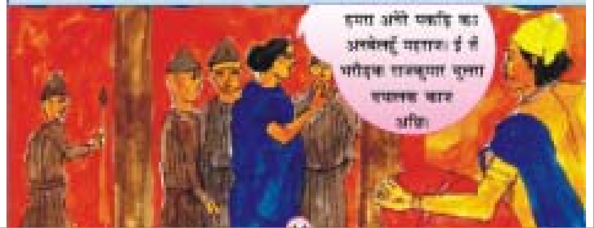
लोक सभ राजा लग गेलाह। सभटा गप सुनेलन्हि।



यज्ञ शुरू भेल।



आ ओम्हर सिपाही सभ बहुरा लग पहुँचल आ ओकरा पकड़ि कऽ राजा लग आनलक।



संघ लोकसेवा आयोगक मैथिलीक पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र - 1
मैथिली भाषा और साहित्यक इतिहास
(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)
खंड-क

मैथिली भाषा का इतिहास

1. भारोपीय भाषा-परिवार मे मैथिली का स्थान
2. मैथिली भाषा का उद्भव और विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)
3. मैथिली भाषा का कालिक विभाजन (आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल)
4. मैथिली एवं इसकी विभिन्न उपभाषाएं
5. मैथिली एवं अन्य पूर्वांचलीय भाषाओं में सम्बन्ध (बंगला, असमिया, उड़िया)
6. तिरहुता लिपि का उद्भव और विकास
7. मैथिली में सर्वनाम और क्रियापद

खंड-ख
मैथिली साहित्य का इतिहास

1. मैथिली साहित्य की पृष्ठभूमि (धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक)
2. मैथिली साहित्य का काल-विभाजन
3. प्राक् विद्यापति साहित्य
4. विद्यापति और उनकी परम्परा
5. मध्यकालीन मैथिली नाटक (कीर्तनिया नाटक, अंकीया नाट, नेपाल में रचित मैथिली नाटक)
6. मैथिली लोकसाहित्य (लोकगाथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा)
7. आधुनिक युग में विभिन्न साहित्यिक विधाओं का विकास
   (क) प्रबंधकाव्य (ख) मुक्तककाव्य
   (ग) उपन्यास (घ) कथा
   (ङ) नाटक (च) निबंध
   (छ) समीक्षा (ज) संस्मरण
   (झ) अनुवाद
8. मैथिली पत्र-पत्रिकाओं का विकास

प्रश्न पत्र - 2
(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)

इस प्रश्नपत्र में निर्धारित मूल पाठ्यपुस्तकों का पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनसे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक क्षमता की परीक्षा हो सके।

खंड-क

1. विद्यापति गीतशती-प्रकाशक-साहित्य अकादमी, नई दिल्ली (गीतसंख्या 1 से 50 तक)
2. गोविन्ददास भजनावली-प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना (गीतसंख्या 1 से 25 तक)
3. कृष्णजन्म-मनबोध
4. मिथिलाभाषा रामायण-चन्दा झा (सुन्दरकाण्ड मात्र)
5. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण-लालदास (बालकाण्ड मात्र)
6. कीचकवध-तन्त्रनाथ झा
7. दत्तवती-सुरेन्द्र झा 'सुमन' (प्रथम और द्वितीय सर्ग मात्र)
8. चित्रा-यात्री
9. समकालीन मैथिली कविता प्रकाशक साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

खंड-ख

10. वर्णरत्नाकर - ज्योतिरीश्वर (द्वितीय कल्लोल मात्र)
11. खट्टर ककाक तरंग - हरिमोहन झा
12. लोरिक-विजय-मणिपद्म
13. पृथ्वीपुत्र - ललित
14. भफाइत चाहक जिनगी - सुधांशु 'शेखर' चौधरी
15. कृति राजकमल- प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना (आरम्भ में दस कथा तक)
16. कथा-संग्रह-प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना

सहायक ग्रन्थ

- मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि-डा० अमरनाथ झा
- मैथिली साहित्यक इतिहास - डा० जयकान्त मिश्र
- मैथिली साहित्यक इतिहास- डा० दुर्गानाथ झा श्रीश
- मैथिली साहित्यक रूपरेखा - डा० बासुकीनाथ झा
- मैथिली गद्यक विकास- मोहन भारद्वाज
- मैथिली कथाक विकास - डा० वासुकीनाथ झा
- मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास- दिनेश कुमार झा
- मैथिली परिचायिका - पं० गोविन्द झा
- मैथिली काव्यक विकास- सुरेश्वर झा
- संदर्भ : सुधांशु शेखर चौधरी
- मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौंदर्य- डा० रामदेव झा
- मैथिली पत्रकारिताक इतिहास : पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
- मैथिली पत्रकारिता : दशा ओ दिशा : सं०- शरदिन्दु चौधरी
- विद्यापति - रमानाथ झा
- विद्यापति - डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा
- चन्दा झा - प्रो० जयदेव मिश्र
- लाल दास- डा० देवेन्द्र झा
- मणिपद्म- हंसराज
- ललित- डा० विभूति आनन्द
- स्मारिका-2006-सं० शरदिन्दु चौधरी, (चेतना समिति, पटना) डा० सत्यनारायण मेहता
- आधुनिक मैथिली नाटक-सं०-मधुकान्त झा,(चेतना समिति, पटना)
- प्रयोजन : डॉ. इन्दिरा झा

गाइड- मैथिली गद्य गौरव, सम्पादक- शरदिन्दु चौधरी
पुस्तक प्राप्ति स्थान - शेखर प्रकाशन
पोपुलर फर्मा के पीछे, निदान ज्योतिष केन्द्र, न्यू मार्केट, पटना — 1, फोन : 9334102105

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ऋ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ

ड ढ ड़ ढ़ ण त थ द ध न प फ ब

भ म य र ल व श ष स ह

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः

क्र ख्र ग्र घ्र च्र छ्र ज्र झ्र ट्र ठ्र ड्र ढ्र ण्र

त्र थ्र द्र ध्र न्र प्र फ्र ब्र

भ्र म्र य्र र्र ल्र व्र श्र ष्र स्र ह्र क्ष्र ज्ञ्र

कृ चृ टृ तृ धृ पृ मृ यृ रृ हृ क्ष्रृ

कॄ चॄ टॄ तॄ पॄ भॄ हॄ

तृ क्ष त्र ज्ञ

भनसारक सौन्दर्यक टिप्स

मीरा झा

(1) त्वचाकेँ चमकदार व लावण्यमयी बनयबाक लेल मिरचाइ, मसाला, खट्टा आदिक सेवन कम-सँ-कम करु तथा सभ दिन 8 सँ 10 गिलास पानि अवश्य पीबू। त्वचाके चमकेबाक लेल पानिक मात्रा अति आवश्यक अछि।

(2) टमाटर तथा मूरकेर बराबर-बराबर रस मिला कऽ चेहरा पर 20-25 मिनट राखि पानिसँ साफ कऽ लियअ। एकर नियमित प्रयोगसँ दाग-धब्बा बिल्कुल दूर भऽ जायत।।

(3) टमाटर, चुकन्दर, खीराक बराबर मात्रा रस लऽ ओहिमे किछु बुंद नेबोक रस मिला कऽ चेहरा पर रोज लगाऊ 15-20 मिनट बाद पानिसँ धो लियअ। एकर प्रयोगसँ चेहरा चिक्कन आ स्निग्ध भऽ जाइत अछि।

(4) काँच दूधमे जौ केर आटा मिला कऽ उबटनबनाउ। एहि उबटन नियमित प्रयोगसँ चेहराक छाँही खतम भऽ जाइत अछि आ चेहरा खिल-खिला जाइछ।

(5) गाय वा बकरीक दूधमे नेबोक किछु बुंद रस मिलाकऽ राति कऽ सुतबासँ पहिने चेहरा पर मलू आ बिना मुँह धोने रहू। भोरे उठि कऽ चेहराकेँ मैल कऽ धो लियअ। एना कयलासँ किछु दिनक बाद चेहरा कांतिमय भऽ शीशा जकाँ चमकि उठत।

(6) नीमक पात पीसि कऽ एहि लेपकेँ चेहरा पर लगाउ। एहिसँ रौदक कारणेँ झुलसल त्वचामे आराम भेटत। कम-सँ-कम 4-5 दिन तक लगेबाक चाही।

(7) मूरक रस एक चम्मच लऽकेँ ओहिमे एक चम्मच मक्खन बढ़ियासँ मिलाउ। एहि लेपकेँ सप्ताहमे दू दिन लगेबाक चाही। लगौलाक एक घंटा बाद चेहराकेँ सुसुम पानिसँ धो लियअ। एहिसँ चेहराक झुर्री यानी त्वचाक लटकनाय ठीक भऽ जाइत अछि।

(8) दही आ बेसन मिलाकऽ लेप बना लियअ। एहि लेपकेँ नहाइसँ पहिने उबटन जकाँ शरीर पर लगाऊ। किछु कालक बाद ओकरा छोड़ा कऽ नहा लियअ। एहिसँ त्वचा स्वस्थ आ चेहरामे निखार आबि जाइछ।



(9) थोड़ेक मलाईमे नेबोक रसक किछु बुंद मिला कऽ ठोर पर लगौलासँ ठोर चमकदार आ मुलायम भऽ जाएत।

(10) जिनका शरीर पर बड़ तिलबा छनि आ ओ हटेबाक प्रयास करै छथि से निम्न विधि द्वारा तिलबा केँ हटा सकैत छथि-हरियर धनी मेंहीकऽ पीसि जतय तिलबा अछि ओतय लगाउ। किछु दिन ई विधि कयलासँ तिलबा धीरे-धीरे मेटा जायत।



पावनि - तिहार

तारीख	दिन	तिथि/पावनि
1-9-2010	बुधवार	जन्माष्टमी कृष्णस्मी व्रत
4-9-2010	शनिवार	एकादशी-जया एकादशी व्रत
6-9-2010	सोमवार	त्रयोदशी-सोम प्रदोष व्रत
8-9-2010	बुधवार	अमावास्या-कुशोत्पाटनी (कुश उखारे के दिन)
11-9-2010	शनिवार	तृतीया-हरि ताल्लिका व्रत-चौरचण चौढी चान्द
17-9-2010	शुक्रवार	कन्या सक्रांती विश्वकर्मा पूजा
19-9-2010	रविवार	पद्धमा एकादशी व्रत भदवारम्भ
20-9-2010	सोमवार	प्रदोष व्रत
22-9-2010	बुधवार	अनन्त चतुर्दशी व्रत
23-9-2010	वृहस्पतिवार	भादो पूर्णिमा अगस्त तर्पण
24-9-2010	शुक्रवार	आश्विन कृष्ण पक्ष-पितृ पक्ष आरंभ
25-9-2010	शनिवार	आश्विन कृष्ण पक्ष-परिवा के पार्वण
29-9-2010	बुधवार	आश्विन कृष्ण पक्ष-भदवा समाप्ती
30-9-2010	वृहस्पतिवार	आश्विन कृष्ण पक्ष-रात्रि शेष में ओठगल श्री जीमूतवाहन व्रत (जीतिया)

प्रस्तुति : पं. देवनारायण झा

हनुमान मंदिर, भजनका भवन, दिसपुर, गुवाहाटी, (मो.) 9864444251

हार्दिक शुभकामनाक संग -

ज्योति कुरियर सर्विस

Âê ßÔü¹æÜ·¤ UÂâ¢»-âæ¢»

ÙæÜæÌ ßæü×ð

çßàæSÜèØ âðßæ·¤ ÜðÅÜü

सम्पर्क -

रामलाल झा

ज्योति कुरियर सर्विस

66 मीर मार्केट, कमारपट्टी

फैंसीबाजार, गुवाहाटी –781001

फोन : 9864026156 (M)



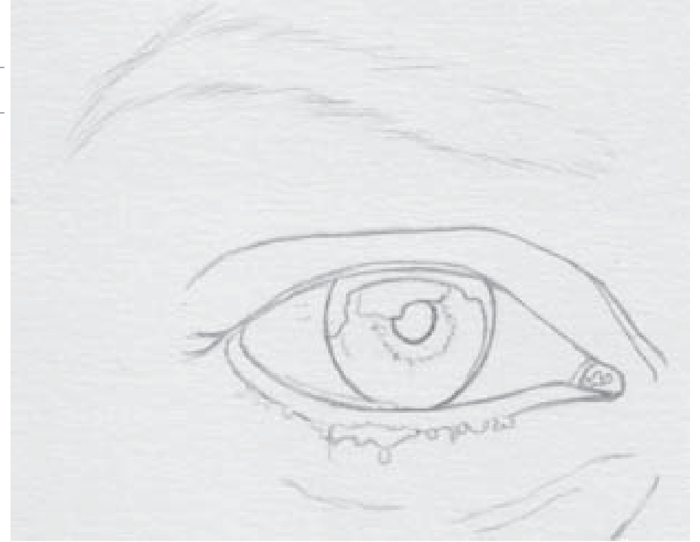
उपलब्धि

कथा

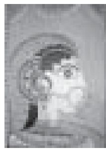
अनसोहांत

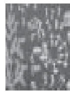
नेना भुटका

गजेन्द्र ठाकुर



परिक्रमा






सौन्दर्य-विन्यास

With Best Compliments from

Bishnu infotech

70-A, MIRMARKET, KAMARPATTY

0361-2608838, 98640 74193 (M)

Deals in

All types Computer / Laptop Lazer printer,
Photo Copier, Fax, UPS and Computer accessaries
Specialised is all types of Lazer Printer toner
[redacted]teidge refill also done here.

हार्दिक शुभकामनाक संग -

ज्योति कुरियर सार्विस

ÂèSÕü•æÚU ·ð×âÂ¤›âÂ¤›

â•ÂèÌæüÕæÚUÌßÜü×ð´

ç»ÎßÌèØ âðßæ·¤ ßæSÌð

सम्पर्क -

रामलाल झा

ज्योति कुरियर सर्विस

66 मीर मार्केट, कमारपट्टी

फैंसीबाजार, गुवाहाटी –781001

फोन : 9864026156 (M)

छलाह।
असमिया
चुनल
जीवनक
स्वतंत्रता
चर्चित
अछि– ‘

डा. कमलकांत झा

जन्म	:	29 मार्च 1943 ई. ।
योग्यता	:	एम.ए., पी. एच.डी., साहित्य रत्न
आजीविका	:	डी. बी. कॉलेज,

नाम : **अनमोल झा**
अन्य नाम: **दिलीप कुमार झा**
जन्म भूमिः **नरुआर**
पताः **ग्राम पोस्ट-नरुआर, भाया- लोहना रोड, जिला- मधुबनी, पिन-847407 (मिथिला)**
पिताः **श्री शिवकान्त झा**
माताः **श्रीमती प्रमीला देवी**
जन्मतिथिः **10 जनवरी, 1970 ई.**
अकादमिक शिक्षाः बी. कम. (ऑनर्स) - 1992 ई. (सी.एम. कॉलेज, दरभंगा)
अन्य शिक्षाः **1. कहानी कला - 1992 ई.**

ीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य
न्म : 1924

हु आयामी प्रतिभाक धनी वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य- उपन्यासकार, कहानीकार, कवि, निबंध लेखक एवं पत्रकार समाजवादी आदर्श सऽ प्रेरित प्रबुद्ध एवं समाजक प्रति प्रतिबद्ध साहित्यकार छलाह। पचासक दशक मे ओ साहित्यिक पत्रिका 'रामधेनु' संपादन कऽ असमिया साहित्य जगत मे नव मोड़ देलन्हि। ओ गुवाहाटी ालयक पत्रकारिता विभाग में अध्यापन सेहो कयने छलाह। स्व. भट्टाचार्य साहित्य अकादमीक अध्यक्ष सेहो ल छलाह। असम साहित्य सभाक सेहो ओ अध्यक्ष छलाह।
नेको कथा-कहानीक संग-संग ओ कईएक महत्वपूर्ण उपन्यासक सेहो रचना कैलन्हि। अहि मे टाकुल नगा आधार पर रचित ' इया रूंगम' नामक उपन्यास के लेल हुनका साहित्य अकादमी पुरस्कार सेहो प्राप्त भेलन्हि। आंदोलन पर आधारित उपन्यास 'मृत्युंजय' के लेल हुनका भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार सेहो भेटलन्हि। हुनका न्यास आदि- 'राजपथे रिंगिआई' 'आई', 'प्रतिपद', 'शतघ्नी', 'कालर हुमुनियाह'। हुनक कहानी दू टा संकलन कलंग आजियो बय' आर 'सप्रदी' ।
हिनक देहांत 6 अगस्त 1997 ई कऽ भेलन्हि।

जन्म:1968,सहरसा(आब मधेपुरा)जिलाक जीतपुर गाम मे। आरंभिक शिक्षा अपन गाम,पटना आ सिक्किम मे। बाद मे दिल्ली विश्वविद्यालय सं बी.ए.आ हिन्दी साहित्य मे एम.ए. ।' विजयदेव नायण साही की काव्यानुभूति की बनावट' विषय पर जे.एन.यू.सं एम.फिल.आ ओतहि सं' निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में प्रेम की परिकल्पना' विषय पर पीएच.डीक उपाधि प्राप्त। समकालीन हिन्दी आ मैथिली कविताक परिदृश्य मे कम लिखलाक बादो स्वीकृत। कविताक दू टा पोथी- समय को चीरकर(1998)आ एक अनाहत दुनिया(2008)प्रकाशित। हिन्दीक महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिका सभ मे बहुतरास समीक्षा आ आलोचनात्मक निबंध प्रकाशित। किछु हिन्दी कविताक अनुवाद मराठी,बांग्ला आ अंग्रेज़ी मे प्रकाशित। हिन्दी कविता लेल 'कन्हैया स्मृति सम्मान'(1998)आ 'हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार'(2003) प्राप्त। विगत दस वर्ष सं असम विश्वविद्यालय, सिलचर मे अध्यापन।

असम : ● **गुवाहाटी :** अरुण कुमार झा, बामुनीमैदान, गुवाहाटी, मो. : 94351-01766, कमलकांत झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 9864176437, दिलीप कुमार झा, बेलतला, फोन : 94350-13450, श्री तिलकेश्वर झा तरूण नगर, संतोष कुमार झा फेन्सी बाजार, फो. : 98641-26176, विंदेश्वर मिश्र मालिगाँव पांडू फो. : 98542-87692 ● **जोरहाट :** स्कंद कुमार मिश्र, राजमैदान रोड, न्यू कॉलोनि, जोरहाट, असम फोन : 94357-023453, खरुपेटिया : पवन कुमार झा : 9435088346

बिहार : ● **पटना**-श्री शरदेन्दू चौधरी, संपादक, समय साल, 2ए-39 इन्दपुरी, पटना -24, फो. : 09334102305, **राजेश कुमार झा,** मिथिला कालोनी, नशरीगंज, पो. बाटागंज, पटना-18, **मुजफ्फरपुर**- श्री विष्णुकान्त झा, 9470834202, श्री अजीत कुमार झा, फो.: 09472834926, भोगेन्द्र मिश्र, चित्रगुप्त नगर समिप नीलम सीनेमा, मधुबनी फो. : 09431654303
● **दरभंगा**-अग्रवाल न्यूज एजेंसी, स्टेशन रोड, श्री मणीकांत झा : 9431451489 ● **जयनगर**-डॉ. कमलाकान्त झा, शहीद चौक, मो. 09934914944 ● **सहरसा** - विनय कुमार चौधरी, कृष्ण कुटिर, पंचमढ़ी, फो. : 228190, ● **कटिहार**-ललन झा, रीडर्स कार्नर, होटल राजस्थान, फो. : 09437206661, बेगूसराय : प्रदीप बिहारी 'मैथिल पुत्र' 09431211543,
● **भागलपुर**- डॉ. प्रेमशंकर सिंह, ऋचायन, राधारानी सिन्हा रोड, फो. : 2422666, ● **समस्तीपुर :** डा. नरेश कुमार विकल, फो.: 094302-44114, ● **मोतीहारी :** सुशील कुमार सुमन, मो.-09431022737, ● **मधुबनी :** श्री गया प्रसाद सिंह, फोन : 9431287158, ● **सुपौल :** उमेश मंडल, तुलसी भवन, निर्मली, सुपौल फो. : 9931654742



झारखंड :
● **रांची :** डॉ. धनाकर ठाकुर, राँची- 9470193694, **बोकारो :** श्री अमीरी नाथ झा अमर, फो. : 249994, ● **जमशेदपुर** -डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी, फो. : 09334066298,



● **छत्तीसगढ़ : रायपुर,** श्री सुरेन्द्रनाथ पाठक, मनीश कुमार झा 0771-4050907

● **मध्य प्रदेश**

● **उत्तर प्रदेश**

● **दिल्ली :** श्री गजेन्द्र ठाकुर पौकेट-सी सेक्टर-ए, ब दिल्ली-70, सुबोध कुमार झा, अखील भारतीय परिवार क डी-2 हुकुम चंद मार्केट महावीर इंक्लेभ पालम न्यू दि 09941-1382078, श्री रंजीत कुमार झा, फो.: 09871-

● **हरियाणा :** गुड़गाँव श्री जे.एन. मंडल, फो.: 093

● **राजस्थान**

● **गुजरात**

● **महाराष्ट्र**

● **गोवा**

प. बंगाल **: राजकुमार गिरी**-रतनदीप अपार्टमेंट, ए-5, 17, बीटी रोड, कोलकाता-56, 9432303617
अशोक झा, 243, रविन्द्र शरणी, कोलकता-75
लक्ष्मण झा सागर, 3बी, तिस्ता अपार्टमेंट 94 एवेन्यु साउ कोलकता-7, 3334909576,

● **कोलकाता :** अशोक कुमार झा, श्री लक्ष्मण झा स तिस्ताआपार्टमेंट 94 एवन्यू साउथ संतोषपुर, कोलकाता- 033-24166418

अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषदक भारतक पदाधिकारी

अध्यक्ष, भारत -

महासचिव, भारत - श्री कृपानन्द झा, दिल्ली - 9868551104

डा.एल.एन. झा, सहरसा - 9431440145
श्री अशोक ठाकुर, जयपुर 9414076234
श्री नन्दन मोहन, जयपुर - 9660013301
श्री वैकुंठ झा, विशाखापत्तनम - 9949472777
श्री अर्जुन मंडल, पुणे - 9423527219




गुवाहाटी, असम
दिनांक 22-08-2010






मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति
गुवाहाटी, असम
“यात्री जन्मसदी पर्व समारोह”
दिनांक: 22-08-2010


मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति
गुवाहाटी, असम
आम बैसार”
दिनांक 22-08-2010


1


2


3


4


5


6


7


8